सत्यम्   शिवम्   सुन्दरम्

भृगु अर्चना दर्पण

लेखक एव प्रकाशक
गौरी शंकर भार्गव
वरिष्ठ काष्ठ कला शिल्पकार

परामर्श सम्पादक
श्री मांगीलाल जी भार्गव
आयुर्वेघ रत्न (आ)

प्राक्कथन

श्री गौरीशंकर भार्गव द्वारा सम्पादित पुस्तक भृगु अर्चनादर्पण एक प्रामाणिक कृति है। कोई भी जाति अपनेअतीत गौरव से विमुख नहीं हो सकती ।यह अतीत अपने आप मे एक संजीवनी है, एक प्राण वायु है, यह एक ऐसी शक्ति है जो वर्तमान की हीन स्थितियो से उबार कर भविष्य की स्वर्णिम छवियों को रच सकती है। जातियों के अपने अतीत के गौरव पर अभिमान है, वह गिर–गिर कर भी सीधे मार्ग पर आ सकता है। श्री भार्गव ने अनेक दृष्टांतो, आख्यानो, सूत्र–कथाओ और श्लोको का सहारा लेकर बताने का प्रयास किया है कि भार्गव समाज एक उच्च्य कोटि का ब्राहम्ण समाज है तथा भृगुवंशियों की एकता आज के युग की महती आवश्यकता है।

इतिहास लेखन की अपनी समस्याऐ होती है। इसके लिए एक पारदर्शी, स्फटिक और पूर्वाग्रह रहित दृष्टि की आवश्यकता होती है। पचूर्वाग्रह होगे तो दृष्टि बाधित होती रहेगी और बाधित दृष्टि सत्य का साक्षात्कार नही करवा सकती । इतिहास का प्रयोजन चारों तरफ छाये हुए धुंधले को हटाना होता है। मिथकों के नाम पर जो कथाऐ प्रचलित है।, उनके सही स्वरूप को सामने लाना इतिहास के लिये एक चुनौती का काम है। फिर चाहे वह इतिहास किसी देश का हो या फिर किसी जाति, वर्ग अथवा वश परम्परा का। इतिहास वास्तविकता से मुठभेड करता है, केवल आदर्श में नही विचरता। वह अनावश्यक प्रभामण्डल भी नहीं रचा करता। इस दृष्टि से देखे तो श्री गौरीशकर भार्गव ने भृगुवंश के इतिहास के साथ न्याय किया है। उन्होने तथ्यों को प्रामाणिक बनाने के लिए वेदों, पुराणों, स्मृतिओ, महाकाव्यों तथा विभिन्न धर्म् ग्रन्थो के उदाहरण दियें है। ताकि किसी भी प्रकार की भ्राति नही रह सके। पुस्तक के सम्पादन मे उनकी दृष्टि एकांगी न हो कर सर्वांगी है अत. यह पुस्तक एक प्रामाणिक संदर्भ ग्रर्थ बन पाई है।

श्री भार्गव स्वंय मानते है। कि चारो तरफ मिथके का एक महाजाल फैला है। सारे मिथक तिथ्या ही हो, यह जरुरी नही पर मिथकों की सरचना मे लोकभाव, लोकरूचि और प्रचलित मान्यताओ के आजाने से वे कई बार अतिशयोकि की सीमा तक पहुँच जातें है। भृगु अर्चना दर्पण मे मिथको को खारिज तो नहीं किया गया है पर मिथको से ज्यादा प्रमाणों पर बल दिया गया है। अत यह पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टि से एक उत्तम कृति मानी जा सकती है पुस्तक मे इतिहास बोध तो है पर वह न तो खण्डित है। न सीमित है और नही स्वल्प–स्वीकृत है। इसे यों भी कह सकते है। कि पुस्तक मे दिये गये ऐतिहासिक पौराणिक तथ्य वस्तुपरक है जो यह दर्शाते है कि भार्गव वंश का उद्भव दिव्यता के आलोक मे हुआ था और इसलिए इसके वशजों को अपने जाति–गौरव पर अभिमान करने का पूरा अधिकार है।

प्रस्तुत पुस्तक मे सृष्टि के आरम्भि से लकर आगे की ऋषि–परम्पराओ का वृतान्त है। ज्योतिष शास्त्र के महान प्रणेता, मंदृष्टा व धनुर्विद्या के प्रवर्तक महान ऋष्टि भृगुजी की वश परम्परा का एक सटीक चित्रण दिया गया है। इस वश परम्परा में नक्षत्रो के रूप मे दीप्त होने वाले शुक्राचार्य, षडार्चाय, शकराचार्य शडिल्य तथा डक्क ऋषि (डामराचार्य) जैसी विभूतियो के गुणों का तो आख्यान है ही, भृगुजी की तीनों पत्नियो ख्याति, पुलोमा व दिव्या से उत्पन्न होने वाली सन्तानो का भी गुणानवाद किया गया है पुस्तक मे ऋषियो द्वारा प्रर्णात ग्रंथो, सहिताओ और स्मृतियो (जैसे भृगु सहिता, शांडिल्य स्मृति, डामर सहिता आदि) का विवेचन है। साथ ही महर्षि शुक्र के वंश के सम्बन्धित ऋषियो के 36 गोत्र की सूची भी दी गई है। इस सूची को गोत्रावलियो के कवन्तिो से सम्पुष्ट किया गया है तथा प्रचलित गोत्र के शुद्ध व अशुद्ध (अपभ्रश) रूपो को भी रेखाकित किया गया है। इस तरह यह पुस्तक भार्गव परम्परा के एक सटीक, पुष्ट एव प्रामाणिक ग्रथ का रूप ले पाई है।

अतीत से रोमाचित होते रहना एक अच्छी बात हो सकती है पर इसका अर्थ यह कदापि नही हो सकता कि वर्तमान की

दुर्दशा से आंखें मूदली जाए। श्री गौरीशंकर भार्गव, जगदीश प्रसाद शर्मा जिज्ञासु, डॉ. आनन्द रावल, किशनलाल भार्गव, रंग पाण्डेय भृगुवंशी, कमल किशोर रावल, ओम प्रकाश–द्वारकादास परिहाल रामशरण जोशी एवं अन्य विद्वानों ने वर्तमान को सामने रख कर भविष्य को उज्जवल बनाने का आहवान किया है। उनके अनुसार नाम विशेष से सम्बोधित और यदा–कदा तिरष्कृत किया जाने वाला समाज जब तक अपनी शक्ति को नही पहचानेगा, तब तक उसका उदार नही हो सकता। आवश्यकता कर्तव्य बोध के साथ स्वय को सही पहचान करने की है, सकल्प सिद्धि की है, निराशा के घटाटोप को छिन्न–भिन्न करने की है, शिक्षा के क्षेत्र मे उपलब्धियां अर्जित करने की है तथा पारस्परिक भाईचारे के विकास करने की है। पुस्तक में ऐसे अनेक कुसंस्कारों का वर्णन किया गया है। जो जाति की जडो मे शीशा उडेलने का काम करते है। सबसे ऊपर इस बात पर जोर दिया गया है कि भृगुवंशियो को हीनग्रंथि से उबरना ही होगा ताकि वे अपनी श्रेष्ठता के इतिहास को भविष्य में भी इसी गरिमा के साथ बनाये रख सके जिसके साथ धुर अतीत मे उसका अविर्भाव हुआ था।

कोई भी जाति अपने प्रेरणा पुरूषो पर गर्व करे, यह एक अच्छी बात है। पुस्तक में ऐसे अनेक दिवंगत एवम् वर्तमान पुरूषो एव महिलाओ का संक्षिप्त जीवनक्रम दिया गया है जिन्होंने जीवन के विविध आयामो जैसे ज्योतिष, धर्म, अनुष्ठान, शिक्षा, शोध, सम्पादन, साहित्य–सृजन, दानशीलता, समाजसेवा, निर्माण, विकास एवम राजनीति के क्षेत्रों मे कीर्तिमान स्थापित किये। ऐसे व्यक्तियों का प्रभा मण्डल या सिद्ध करता है कि भार्गव समाज एक जीवन्त, चेतना सम्पन्न और उज्जवल सम्भावनाओ का समाज है।

युवा पीढी इन दृष्टान्तों से सम्प्रेरित होकर जीवन की सही राह तलाश सकती है। जिस समाज मे बच्चे संस्कारित हों, युवा कर्मठ और गतिशील हो तथा वयोवृद लोग अनुभवसिद्ध एवम मार्गदृष्टा हों, वह समाज कभी पिछड नही सकता । हमने तो अनेक सचमुच

पिछडे समाजों को आगे बढते और उन्नति के शिखरो को चूमते हुए देखाा है फिर भार्गव समाज तो ऋषिकुल का समाज है वह उन्नति क्यों नहीं कर सकता । आवश्यकता दृढ विश्वास, इच्छा शक्ति और दूरदृष्टि की है, फिर मंजिल कभी भी दूर नही रह सकती।

यो तो इस पुस्तक की रचना में अनेक लोगो का मूल्यवान सहयोग रहा है पर धूरी पुरूष तो एक ही है आ र वह है श्री गौरीशंकर भार्गवं श्री भार्गव की जातिनिष्ठा बेमिसाल है उन्होने एक मशाल जलाने का प्रयास किया है जिसे थाम कर आगे बढना समाज का काम है।

पुस्तक के कुछ लेखक जहा चिन्तन, अनुशासन, संस्कार और शिक्षा की सीख देते है वहा कुछ अन्य लेखक ऊँच-नीच का भेद मिटाने, भिक्षावृतिको रोकने, मृत्युभोज बंद करने वे सामूहिक विवाहो को शुरू करने का आहवान करते है। इनके अतिरि क्त यज्ञ व अनुष्ठानो की प्रविधयो बताने ववाले लेख--गायत्री मंत्र की व्याख्या करने वाले लेख, जागरण संदेश देने वाल लेख व महिलाओ के उत्थान सम्बन्धी आलेख भी उपयोगी है।

कुल मिलाकर यह पुस्तक अन्यन्त उपयोगी दस्तावेज के समान है। यह भार्गव वंशियों के लिए तो उपयोगी है ही, धर्मग्रंथो, यज्ञो,
गायत्री मत्रो, ऋषिकुलो तथा गोत्रवलियो के सदर्भो के कारण अन्य वर्गो व समाजो के लिए भी पठनीय है।
प्रथम पाठक होने के नाते मैं इस कृति की सफलता की कामना करता हूँ।

भवानी शंकर व्यास विनोद
पूर्व सम्पादक शिविरा
साहित्य का एवं कवि,
भवानीशंकर व्यास विनोद
1--स--9, पवनपुरी
बीकानेर

सम्पादकीय

प्रिय पाठक बन्धुओ मै कोई साहित्यकार व कहानी का रचनाकार नही हूँ। आप ही मे से एक हूँ। काफी समय से मेरा मन आकाक्षाओ की भीड मे खोया–खोया हुआ–सा रहता था। मेरे मन मे यह उत्सुकता रहती थी कि मैं भी समाज के, वश क कुछ काम आ सकू।

अपने मन मे उठे विचारो को आप तक पहुचा कर, अपने मन में उठी एक हूक से आपको कैसे अवगत कराऊँ। बैठे–बैठे सोच कर यह विचार आया कि कुछ लिखा जाए इसी आशा के साथ माँ गायत्री को नमन कर, माँ सरस्वती के आशीर्वाद के साथ अपनी टूटी–फूटी भाषा मे कुछ लिखने का प्रयास किया है। अगर इसमे कोई त्रुटि या गलती हो तो क्षमा–याचना।

सामाजिक विषयो पर आधारित सरल, सुगम, प्रत्येक व्यक्ति के मन को लुभाने वाली सुन्दर पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' आप को समर्पित है। मै भार्गव समाज के समस्त भारतवासियो की सम्पन्नता की शुभकामना के साथ स्वय को समाज व देश को समर्पित करता हूँ। भार्गव समाज के गौरव की व सम्मान की रक्षा करना मे मैं अपना परम उद्देश्य समझता हूँ। मैं अपनी मातृभूमि बीकाणा को कोटि–कोटि प्रणाम अर्पित करता हू।

गौरीशंकर भार्गव

प्रस्तावित दो शब्द

कुछ अन्तराल के बाद बदलते युग की चेतना, गलत के प्रति आक्रोश, नवीनता और समभाव का स्वर लिये क्षितिज आप के सम्मुख प्रस्तुत है। साहित्य फलक पर कुछ नये चित्र उभारने वाले कल के भावी रचनाकार अपनी इन रचनाओं के माध्यम से आपसे जुड़ना चाहते हैं।

आशा है, इन का स्वर आने वाले कल के नव परिवर्तन का उद्घोष साबित होगा। हम आभारी हैं, उन समत रचनाकारों के जिनकी प्रतिनिधि रचनाए जगह–जगह इस पुस्तक की शोभा बनी हैं और नये क्षितिजो को प्रोत्साहन व दिशा–ज्ञान मिला है। शिक्षा और समाज मे घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज की आवश्यकताओ और परिस्थितियो मे निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। समाज का यह परिवर्तन प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप मे शिक्षा-को प्रभावित करता है।

ससद सदस्य (लोक सभा)
6 अशोक रोड नई दिल्ली
दूरभाष 3782820ए 3070404

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि आपने सामाजिक स्तर पर भार्गव समाज की 'भृगु अर्चना दर्पण' नामक पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक अपने भार्गव समाज को नई दिशा प्रदान करने मे महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दिन–प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रेसित होते रहे।

आपका
गिरधारीलाल भार्गव

शुभ संदेश

मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि बीकानेर से भार्गव समाज के सामाजिक स्तर का ज्ञान कराने के लिए 'भृगु अर्चना दर्पण' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

सामाजिक विकास को प्रकाशमान करने के लिए ऐसे प्रकाशन उपयोगी हैं। इसमे नौजवान पीढी को समाज के अतीत के अनुभवो के आधार पर सुनहरे भविष्य की ओर बढने की प्रेरणा मिलती है।

मुझे विश्वास है कि प्रकाशन की सामग्री समाज मे प्रेम, शान्ति एव सद्भाव बढाने मे सहायक होगी। प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाए।

अशोक गहलोत

कार्मिक एव नहर मत्री
राजस्थान सरकार, जयपुर

शुभ संदेश

निरन्तर प्रगति के इस युग मे कोई भी समुदाय प्रगति के मानदण्डो व उपलब्धियो से पृथक् नही रह सकता हमारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रयास हुआ करता है। इसी प्रकार अपनी कमजोरियो व निरर्थक रूढीवादी प्रवृत्तियो का परित्याग कर स्वस्थ परम्पराओ को बढावा देना तथा प्रगति के नित नवीन आयामो को परखते हुए उन्हे अपनाना स्पदनशील समाज की प्रमुख पहचान है।

'भृगु अर्चना दर्पण' नाम से जिस पुस्तक प्रकाशन की आपने सकल्पना की है वह नि सदेह रूप से स्वागतयोग्य है। मुझे विश्वास है भार्गव समाज मे जो अच्छाइया व जिस प्रकार का सकारात्मक सोच व कर्मदता विद्यमान है, उससे अन्य समुदाय के लोग भी प्रेरणा लेगे।

पुस्तक मे जिन प्रगतिशील विश्वासो व परम्पराओ को सशक्त बनाने की सकल्पना की गयी है, वह निसंदेह सभी वर्ग के पाठको के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सधन्यवाद !

भवनिष्ठ
बी. डी. कल्ला

श्री लालेश्वर महादेव मंदिर
महन्त स्वामी श्रीसवित सोमगिरि
दूरभाष–230982

शुभ संदेश

शिवस्मरण

हर्ष का विषय है कि आप अपनी पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' का प्रकाशन करने जा रहे हैं। आपके इस पावन कृत्य द्वारा एक साथ देवकुल, ऋषिकुल, पितृकुल की अर्चना सम्पन्न होगी। भार्गव समाज को भी इस पुस्तक द्वारा ऋषि प्रज्ञा का प्रकाश प्राप्त होगा। अपने उज्ज्वल अतीत को लेकर ही समाज अपने वर्तमान को तजस्वी बनाता हुआ दिव्य भविष्य की ओर प्रयाण कर पाता है। एक स्वस्थ समाज अपनी अंगभूत प्रत्येक इकाई को आगे बढाता हुआ स्वयं भी अन्य समाजो के साथ एक मधुर रिश्ते को लेकर संस्कृति के साथ लयबद्धता को बनाये रखता है।

भृगु अर्चना दर्पण मे अवलोकन करता हुआ भार्गव समाज सचरता, निखरता रहे यही प्रभु से हार्दिक प्रार्थना है।

शिवाकांक्षी
संवित् सोमगिरि

अध्यक्ष
खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड
राजस्थान सरकार

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भार्गव समाज की ओर से समाज से सबधित जानकारी व उपयोगी लेख व अन्य सामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से भृगु अर्चना दर्पण नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

अत आशा करता हूं कि पुस्तक भार्गव समाज के साथ–साथ जन साधारण के लिए भी उपयोगी एवं सग्रहणीय रहेगी । पुस्तक की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं ।

शुभ कामनाओं सहित

भवानीशंकर शर्मा

अध्यक्ष
शहर जिला कांग्रेस
बीकानेर

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि आप के द्वारा रचनात्मक अभियान को अग्रसर करते हुए। 'भृगु अर्चना दर्पण' नामक पुस्तक का लेखन व प्रकाशन किया जा रहा है। आपका प्रयास समाज के लिए उपयोगी साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मेरी आत्मीय शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

आपका शुभेच्छु
जनार्दन कल्ला

रिटायर्ड जिला शिक्षा
अधिकारी राजस्थान सरकार

शुभ संदेश

शुभाशीष। बड़ी खुशी हुई कि आप भार्गव जाति के इतिहास के सम्बन्ध मे अपनी रचना 'भृगु अर्चना दर्पण' का प्रकाशन शीघ्र करने जा रहे हैं। बधाई है। आप द्वारा प्रेषित पाण्डुलिपि को सरसरी तौर पर पढा। प्रयास अति उत्तम व श्लाघनीय है। अभी विभिन्न लेखो मे संयोजन की आवश्यकता है। भाषा की अशुद्धियो को भी ठीक करना होगा।

किसी जाति का इतिहास–लेखन कितना खोजपरक तथ्य–धारित, पूर्वाग्रह, दुराग्रहरहित व श्रम, सयम, कष्ट, व्ययसाध्य होता है, यह सभी जानते हैं फिर भी आपने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार कर साहसिक कार्य किया है, आप साधुवाद के पात्र हैं।

आपने रचना मे भार्गव जाति की उत्पत्ति के विषय मे वशावली, गोत्र, प्राचीन का सहारा लेकर इतिहास का विशद एवं सांगोपाग विवरण दिया है, यह काम आसान नही है। इसके साथ–साथ आपने अपने सामाजिक विषयो पर जैसे संस्कार निर्माण, मानस मथन यज्ञ से लाभ, नारी शिक्षा, युवा ? भार्गव समाज के बल्कि अन्य समाजो के लिए भी लाभकारी एवं पूर्व प्राचार्य श्री डूगर महाविद्यालय पुस्तक की सफलता तथा आपके समुन्नता भविष्य के लिए हार्दिक मंगल कामनाए ।

आपका शुभेच्छु
जेठमल सोनी
एम.ए.एम.एड

पूर्व प्रचार्य
श्री डूगर महाविद्यालय,
बीकानेर

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आप द्वारा रचित 'भृगु अर्चना दर्पण' नामक पुस्तक का प्रकाशन होने जा रहा है। प्रकाशन करने से पूर्व आपने इस पुस्तक के विषय के बावत मेरे विचार आमत्रित किये थे। उस समय मैंने इस पुस्तक को गभीरता से पढ कर अपने सुझाव आपको प्रस्तुत किये थे।

किसी देश, धर्म, समाज, जाति, भाषा का इतिहास लेखन करना आसान काम नही है। आपने इस की रचना करने हेतु जो प्रयास किया हैं वह वास्तव मे सराहनीय है। इस पुस्तक मे आपने अपनी जाति के इतिहास व गौत्र के अलावा अन्य रचनाए जैसे वश परम्परा, सस्कार, यज्ञ के लाभ, गायत्री मत्रा के महत्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला है, वह मानव जाति के लिए प्रेरणा दायक सिद्ध होगा।

मैं इस पुस्तक की सफलता की शुभकामना करते हुए आपके सुखी एवं दीर्घ जीवन की भी कामना करता हूँ।

एस. एन. स्वामी

पूर्व विधायक
राजस्थान सरकार, बीकानेर

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा एक पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' के नाम से प्रकाशित की जा रही है जो कि सारी जातियो, खास कर भार्गव समाज के लिए सच्चाई पर चलना, असहाय व्यक्तियों की सेवा करना तथा समाज मे अशिक्षित बच्चो व बच्चियों को शिक्षा ग्रहण कर समाज व देश की सच्चे भाव से सेवा करना मनुष्य का धर्म है। मैं आशा करता हूँ कि आप भविष्य में भी इससे भी अधिक ज्ञानवर्धक पुस्तिक को प्रकाशित करेगे ताकि हर समाज मे चेतना जाग्रत होती रहे।

भवदीय

नन्दलाल व्यास

प्रचार्य
महारानी सुदर्शन महाविद्यालय

शुभ संदेश

श्रीमान् गौरीशकर भार्गव साहब द्वारा प्रतिपादित पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' मे सामाजिक चेतना और भृगु समाज के मूल्य प्रतिपादन की चर्चा की गई है जो अपने–आप मे सराहनीय है। धर्म और समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य मे मूल्यो की सही पहचान कराने का प्रयास इस पुस्तक की अपनी विशेषता है जो नया दृष्टिकोण देकर चिन्तन की ओर प्रेरित करती है। समाज की अस्मिता को पहचान, उस पहचान को आत्मसात कर निरन्तर कुछ सकल्प करना आदि अनेक धारणाए इस पुस्तक को पढकर दृढ होती हैं। लेखन की दृष्टि से भाव और विचार जितने सशक्त हैं, अभिव्यक्ति उतनी ही सहज और स्वाभाविक। सरल अभिव्यक्ति द्वारा मतो के दृष्टिकोणो को एक साथ रेखाकित या चित्रित कर लेखक ने नई दृष्टि प्रदान की है। इस नई दृष्टि से पाठक वर्ग निश्चित रूप से लाभान्वित होगे। प्रगति और उन्नति की शुभकामाओ सहित।

भवदीय
संतोष भार्गव

प्रचार्य
दयानन्द पब्लिक स्कूल,
बीकानेर

शुभ संदेश

आपके पत्र से 'भृगु अर्चना दर्पण' पुस्तक के प्रकाशन की जानकारी प्राप्त हुई। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप भार्गव समाज के साथ–साथ अन्य समाज वालो को भी प्रमाणित मुद्दो के अन्तर्गत सच्चाई से अवगत कराने का प्रयास कर रहे है। यह प्रयास नि.सन्देह सफल होगा। इसी आशा के साथ मे 'भृगु अर्चना दर्पण' के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं।

कांटे आते हैं आने दो, तुम तो एक फूल खिलाओ
अंधकार को कोसो मत, दीपक एक जलाओ
एक–एक यदि खिला दो फूल तो चिर बसंत लहराये
एक–एक यदि जलादो दीपक तो अंधकार मिट जाये

अलका डॉली पाठक

व्यवस्था सचिव
बीकानेर प्रौढ शिक्षण समिति
बीकानेर

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप के द्वारा रचित 'भृगु अर्चना दर्पण' पुस्तक का प्रकाशन अतिशीघ्र किया जा रहा है, बधाई हो ।

आप की रचना सामाजिक स्तर पर भार्गव समाज को एक नई दिशा और ज्ञान का बोध कराने मे महत्त्वपूर्ण, प्रगति की ओर अग्रसर होने मे सार्थक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है एव भार्गव समाज के गौरव की गरिमा को कीर्तिमान बनाये रखने मे सदैव अग्रणीय रहेगी, यही मेरी शुभकामना है। मै पुस्तक के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाए सप्रेषित करते हुए कामना करता हूँ कि आगे भी आप पुस्तक का प्रकाशन करते रहेगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दिन–प्रतिदिन इसी प्रकार प्रगति–पथ पर चलते रहे।

स्नेह और शुभकामनाओ सहित

अविनाश भार्गव

वृत्ताधिकारी, वृत्त सदर
थाना सदर, बीकानेर

शुभ संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'भृगु अर्चना दर्पण' की रचना ना सिर्फ भार्गव समाज अपितु अन्य सभी समाजो के समक्ष सच्चाई रखने व उत्थान करने के लिये की जा रही है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे यह समय की आवश्यकता भी है कि आदमी जात–पात के बन्धनो से ऊपर उठ कर समस्त मानव समाज व मनुष्य के उत्थान के लिये कार्य करे । मेरी हार्दिक शुभ कामनाए व सभी पाठको के उज्ज्वल भविष्य के लिए सादर समर्पित हैं ।

दीपक भार्गव

पूर्व प्रधानाध्यापक
निवासी (सार्दूलपुर)
जिला चूरू (राज.)

लेखक के प्रति भावना

गौरव भृगु वंश के, वाणी के अवतार
रीति निभाई कुल की, की कृति साकार
शंका न रखी श्रम की, लिया समाज सुधार
कठिन कर्म की कामना, सही रखा आधार
रविसम प्रकाश दे, किया ज्ञान प्रचार
राष्ट्र भक्त है आप तो, हैं जाति की शान
वतन प्रेम का दीप ले, ज्योति जाति समाज
लगन आपकी हो सफल, यही कामना आज
कोटि–कोटि शुभ कामना, मेरी बारम्बार
मनसा वाचा कर्मणा, श्रेष्ठता के आधार
दया करे प्रभु आप पर, दे आयू दीर्घाकार
नभ मंडल में गूंजे सदा, तेरी जय–जयकार
कीमत तेरे काम की, आंकी न हमसे जाय
बधाई स्वीकार हो, रहे प्रभु सदा सहाय

मदनचन्द भार्गव

पूर्व अध्यापक ए–9 ऋषि कर्दम
मार्ग बैस्ट ज्योति नगर
लोदी रोड शाहदरा
दिल्ली–110094

शुभ संदेश

परम आदरणीय भाई गौरीशकर भार्गव, आपके द्वारा रचना 'भृगु अर्चना दर्पण' के प्रकाशन हेतु जो विचार समाज को नूतन दिशा एव नवीन चेतना के पूर्व जो के गौरवपूर्ण इतिहास पर दृष्टि गोचर होते प्रतीत हुये है उसके लिये आप को कोटि–कोटि धन्यवाद। अत्यन्त प्रसन्नता हुई है आपके इस प्रकाशन पर। जो आपके कुल को कीर्तिमान, यशस्वी करे। आपने जो प्रयास किया है वह समाज के.अनुसार एक सटीक कदम है' और प्रेरणादायक भी। समाज कल्याण, उत्थान, प्रगति का सच्चा मार्गदर्शक है। ईश्वर आप को सक्षम करे कि वास्तव मे जाति गौरव को ऊँचा करने मे उपलब्धिया प्राप्त करे नव–वर्ष की शताब्दी पर हम सब की ओर से शुभ मगल कामनाए देने मे गर्व–सा अनुभव हो रहा है। आप की रचना के महत्त्वपूर्ण योगदान मे जाति की मूल सस्याओ का समाधान कराये। धन्यवाद।

जगदीश प्रसाद शर्मा

95 आनन्द डेन्टल क्लिनिक
बगरू वालों का रास्ता,
चादपोल बाजार, जयपुर
फोन–399649

शुभ संदेश

आपको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ डा आनन्द रवाल का सादर अभिवादन ।

आशा है आप सपरिवार कुशलपूर्वक होगे। यहा सब प्रसन्नता से है। महोदय आपने भृगु समाज के लिए एक पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' की रचना की है, जो कि समाज को नई दिशा, ज्ञान का बोध कराने वाली, सामाजिक जानकारी एव अन्य लेखों द्वारा सामाजिक एकता एवं समाज मे उन्नति का सदेश देने वाली है। आपका प्रयास स्वागतयोग्य है। इस प्रयास के लिए मै आपको हार्दिक धन्यवाद व साधुवाद देता हूँ।

डॉ. आनन्द रावल

W/o श्री सजीव कुमार शर्मा
म का 150 गली न. 3
न्यू आर्य नगर
हापुड (गाजियाबाद) (उप्र)

शुभ संदेश

मै आपको आशीर्वाद देने की क्षमता नही रखती क्योकि आप मेरे आदर के पात्र है। लेकिन आप के आग्रह पर ईश्वर से आपके द्वारा रचित 'भृगु अर्चना दर्पण' पर प्रार्थना करती हूँ कि आप का उद्देश्य समाज को नई दिशा एव पूर्वजो का ज्ञान कराने मे अपूर्व सफलता की उपलब्धियो से अलंकृत होगा। यही मेरे द्वारा आप के प्रति उद्‌गार की सच्ची भक्ति होगी। मुझे व मेरे पिताजी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप जैसे सत्पुरुषो का स्नेह प्राप्त हुआ। ईश्वर आपकी मनोकामनाए पूर्ण करे। आप कि रचनाए प्रभावी, रोचक, प्रेरणादायक एव जाति कल्याणकारी हो।

भवदीय
वन्दना शर्मा
B.A.III yr.

मेरी नजर में प्रस्तुति

आपके जीवनकाल के महत्त्वपूर्ण क्षण मेरी नजर मे। बचपन से आप के साथ रहा हूँ। आप मौहल्लेवासियो के एव बीकानेर के जनप्रिय काकाजी हैं। हमारे काकाजी से बीकानेर के लगभग सभी जन परिचित है आपकी पहचान अत्यन्त व्यापक है। आप हर क्षेत्र मे चाहे वह सामाजिक हो, राजनीतिक हो, सास्कृतिक हो एवं भक्ति, शिक्षा अथवा खेलकूद का क्षेत्र हो, आपकी उपस्थिति हर स्थान पर रहती है। सेवाभावी, मधुर वाणी के कारण ही आप से लोग जुडे रहते हैं। आपका अपने मित्रो व सज्जनों के साथ अच्छा–खासा सम्बन्ध है जिससे एक बार मिल लेते है वो आपको भूलता नही, ऐसा आपका व्यक्तित्व है।

आप उपलब्धियो के भी धनी हैं जिस मे एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि आप शस्त्र विद्या के कुशल खिलाडी है। आप लाठी, तलवारबाजी मे माहिर है और बालक को जमीन पर लेटा कर उसकी गर्दन पर आलू रख कर तलवार चलाते हुए आलू काटने का जब प्रदर्शन करते हैं तो वह बहुत ही मनमोहक और दिल दहलाने वाला दृश्य होता है और देखनेवाले दर्शको की धडकने तेज हो जाती है। इसके साथ–साथ आप अपने जमाने के फुटबॉल के अच्छे खिलाडी और स्कूल जगत मे आपने अपना कीर्तिमान स्थान बनाये रखा था।

आपका जीवन सघर्षमय रहा है। आपने कभी हार नही

मानी। हर मुसीबत का डटकर मुकाबला किया और हमेशा प्रसन्नचित्त रहे। निराशा आप के पास नही आती। इन बातो का अनुभव मैने आपके साथ रह कर किया है। आपने हमें हमेशा सत्यता की लडाई लडना सिखाया है और आगे बढने का मार्गदर्शन देते रहे है।

आप कारपेन्टर के कार्य के अच्छे शिल्पकार हैं। इस व्यवसाय मे आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आज 64 साल की आयु मे भी आपका स्वास्थ्य ठीक है। जीवन की इस दौड मे आज भी सफलता-पूर्वक आगे हैं।

अत: मुझे खुशी इस बात की है कि मेरे सदाबहार काकाजी ने लेखन के क्षेत्र मे भी अपना कदम आगे बढाया है। आप अपने समाज को एव अन्य समाज को सच्चाई से अवगत कराने जा रहे है और भार्गव समाज के लिए एक गौरव की बात है। आपने अपनी पुस्तक का नाम 'भृगु अर्चना दर्पण' इस लिए रखा है क्योकि यह एक कटु सत्य है कि दर्पण झूठ नही बोलाता।

प्रस्तुति

ओमप्रकाश पुरोहित

लेब टेक्नीशियन, हृदय रोग
विभाग सरदार पटेल
मेडिकल कॉलेज बीकानेर
(राज)

पूर्व रेल ड्राईवर
राजलदेसर (जि.चूरू)
राजस्थान

शुभ संदेश

आप समाज के उन्नति के रास्ते पर लाने का प्रयास करने वाले एकमात्र व्यक्ति है जिन्होने समाज को प्रगति पर अग्रसर होने के लिये प्रोत्साहित किया व समाज के बारे मे, समाज की उत्पत्ति की जानकारी हेतु 'भृगु अर्चना दर्पण' पुस्तक लिखने का प्रयास किया है और लिखी भी। मै इनकी लेखनी को व साहस को धन्यवाद देता हूँ । समाज आपका आभारी रहेगा । इस आधुनिक समय मे अमूल्य समय निकाल कर इन्होने समाज की सेवा की है। सफलता उनके कदम चूमती है जो सघर्ष करते है। मै इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। ईश्वर सफलता प्रदान करे।

धन्यवाद ।

भवदीय
सांवरमल भार्गव

सरस्वती वंदना

हे शारदे मॉ, हे शारदे मॉ, अज्ञानता से हमे तारदे मॉ।
तू वर की देवी, सगीत तुझसे।
हर सास तेरा, हर गीत तुझसे।।
हम हैं अकेले, हम है अधूरे।।
हे शारदे मॉ, हे शारदे मॉ, अज्ञानता से हमे तारदे मॉ।
मुनियो ने समझी, मुनियो ने जानी।
वेदो की भाषा, पुराणो की वाणी।।
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने।
शिक्षा का हमको, ससार दे मॉ।।
हे शारदे मॉ, हे शारदे ,मॉ, अज्ञानता से हमे तारदे मॉ।
तू श्वेतवर्णी, कमल पे विराजे।
हाथो मे वीणा, मुकुट सिर पे साजे।।
मन से हमारे, मिटा दे अधेरा।
हम को उजाले का, वरदान दे मॉ।
हे शारदे मॉ, हे शारदे मॉ, अज्ञानता से हमे तारदे मॉ।

❖❖

सूर्य भगवान की प्रार्थना

प्रत्येक प्राणी मात्र को श्री सूर्य भगवान की पूजा-आराधना करनी चाहिए। हे जगत के पालनहार सूर्य देव नमो

(प्रार्थना)

आप हैं तो उजाला-उजाला।
आप न हो तो अंधेरा-अंधेरा।।
आप आते हैं तो दिन उगता है।
आप जाते है तो दिन छिपता है।।
आप के प्रकाश बिना तो सारा जग सूना है।
आप के प्रकाश मे तो सबका जीना है।।
आप न होते तो कुछ न होता।
न धरती होती न आकाश होता।।
न सृष्टि होती न प्रकाश होता।
आप के पथ पर चलना है हमको।।
सारे जग को समझाना है हमको।।

❖❖

बीकाणा भूमि का गौरव

मेरी मातृभूमि यह मरुधर बीकाणा है। बीकाणा भूमि के इतिहास की पृष्ठभूमि का प्रथम पृष्ठ। जोधपुर से चलकर राव बीकाजी इस मरुधर भूमि पर पधारे। विक्रम सवत् 1545 वैसाख मास की शुक्ल पक्ष की आखा बीज, वार शनिवार को हमारी गौरवमयी मातृभूमि बीकाणा की नींव रखी गई थी।

पनरैसै पैतांलने, सुद बैसाख सुमेर
थावर बीज थरपियो बीकै बीकानेर

जिसे आज 514 वर्ष हो चुके हैं। हम आज भी उत्साहपूर्वक अपनी मातृभूमि बीकाणा का स्थापना दिवस बडे ही हर्षोल्लास के साथ, वडी धूमधाम के साथ मनाते हैं और हमारी मातृभूमि शूरवीरो की जननी है। हमारे बीकानेर राज्य के समकालीन पूर्व 23 राजा राज्य कर चुके है। इनमे से कई राजाओ ने अपनी वीरता, कौशल और वहादुरी से अपना इतिहास अलग ही रचा एव अपनी वीरता का जौहर दिखाया। जैसे राजा रायसिहजी वहादुर, राजा अनूपसिहजी वहादुर, राजा करणसिहजी वहादुर आदि-आदि।

कई योद्धा राजाओ ने तो अपनी शूरवीरता का एक अनोखा ही परिचय दिया, जैसे कि मुगल राज्यकालीन राजाओं को नाव मे चढा कर सतलज नदी के उस पार ले जाकर मुस्लिम सम्प्रदाय मे शामिल किया जा रहा था तो बीकाणा भूमि के वीर सपूत योद्धा राजा श्री करणसिहजी वहादुर ने अपनी कुल्हाडी से वार कर नावो को तोडा था और जय जगलधर बादशाह की उपाधि प्राप्त की थी और राजाओ को मुस्लिम होने से बचाया था।

अत राजस्थान ही नही, अपितु सारे भारत एव सम्पूर्ण विश्व मे भी ये अपना गौरवमय स्थान बनाये हुये हैं। आज तक बीकाणा भूमि को पराजय का सामना नही करना पडा, इसने सदैव विजयश्री प्राप्त की है। राजस्थान का इतिहास इसका साक्षी है।

विश्व स्तर पर महाराजा हिज हाईनेस महाराजा श्री गगासिहजी बहादुर ने प्रथम एव द्वितीय विश्वयुद्ध मे बीकानेर की सेना गगारिसाले का

सेना नायक बन कर विजयश्री प्राप्त की थी और अपनी वीरता के झण्डे गाडे थे। 1900 मे चीन युद्ध, ऑपीयर वार, 1902 मे सोमालीलेन्ड (अफ्रीका), 1918 मे टर्की युद्ध मे महाराजा श्री गगासिंहजी बहादुर ने अपनी वीरता की कुशलता दिखाई।

वर्तमान मे बीकानेर की फौज गगारिसाले ने पकिस्तान से 1947, 1965, 1971 के युद्धो मे भी भारतीय सेना का जबरदस्त नेतृत्व निभाया था और विजयश्री प्राप्त की थी। आज भी भारतीय सेना मे बीकानेर की बटालियन गगारिसाला अपनी गौरवमयी सेवाएं देता आ रहा है जो कि बीकानेर को गौरवमय स्थान दिलाता है।

जब राजस्थान का एकीकरण हुआ था तो हमारे महाराजा श्री सादूलसिहजी बहादुर भी पीछे नही रहे। उन्होने भी अपना सम्पूर्ण योगदान देकर बीकाणा भूमि का नाम इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखवाया था। इसीलिये यह हमारी मातृभूमि शूरवीर, दानवीर और धर्म–कर्म मे आस्था रखने वाली यह धरती हमे प्राणो से प्यारी है। हमे अपने–आप पर गर्व है कि हमने इस पवित्र मातृभूमि पर जन्म लिया।

– गौरीशकर भार्गव

श्री गायत्री माँ

मैं अपनी पुस्तक लिखने से पहले माँ गायत्री को श्रद्धासहित शत–शत नमन् करता हूँ, प्रणाम करता हूँ।

"श्री"

ह्रीं श्रीं काली मेधा प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड।
शान्ति, क्रान्ति, जाग्रति, प्रगति रचना शक्ति अखण्ड।।

हे महासरस्वतीजी, महालक्ष्मी तथा महाकाली रूपो में स्थिर श्री गायत्री माँ! आप हमारे जीवन मे ज्ञानज्योति प्रकाशित करने वाली हो तथा हमें मेधा, प्रभा, प्रतिभा, शक्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति व अखण्ड शक्ति प्रदान करने वाली हो।

जगत जननी मंगल करनी गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम।।

आप विश्वमाता के रूप मे जगत का कल्याण करती हो। आप में समस्त सुख निवास करते हैं। हे सावित्री स्वाहा–स्वधा स्वरूपा पूर्णकाम माँ गायत्री हम आपको कोटि–कोटि प्रणाम करते हैं, हृदय से नमन करते हैं।

सृष्टि की रचना श्री ब्रह्माजी ने की थी

सृष्टि के प्रारम्भ मे सबसे पहले ब्रह्माजी ने मन से चार मुनियों को, जो ब्रह्म तेज से प्रज्वलित थे, उत्पन्न किया। उनमे प्रथम सनक, दूसरे सनन्दन, तीसरे स्नातक और चौथे ज्ञानियो में श्रेष्ठ सनत्कुमार थे, जिन की अवस्था पाच वर्ष की–सी जान पडती थी। ये सदा बालरूप में रहते हैं। ब्रह्माजी ने इन्हे मानसिक शक्ति से सृष्टि उत्पन्न करने को कहा किन्तु ये ब्रह्मज्ञानी होकर वन की ओर चले गये।

अतः ब्रह्माजी ने पुन. सृष्टि रचना के लिये संकल्प किया। उनके स्कन्ध भाग से महर्षि मरीचि, दाहिने नेत्र से महर्षि अत्रि, मुख से महर्षि अगिरा एव रुचि, बाये कान से महर्षि पुलस्त्य, वाम नेत्र से क्रतु (ऋतु), रसना से महर्षि वसिष्ठ, दक्षिण पार्श्व से दक्ष, कण्ठ से नारद और वाम पार्श्व से महर्षि भृगु, नासिका छिद्र से हस और दक्षिण कुक्षि से यति प्रकट हुये।

इस प्रकार सृष्टि के प्रथम मे ब्रह्माजी ने महर्षियो को उत्पन्न किया। महर्षि उन्हे कहते है जो सत्य और तप से पूर्ण हो एवं श्रुति व मत्रद्रष्टा हो। जो अपना जीवन विरक्त सन्यासी के समान यापन करते हो। ये मोक्षमार्ग के प्रवर्तक और भक्तिमार्ग के ज्ञाता थे। ये ऋषि कई तरह के होते थे। प्रजापति, सप्तऋषि, सिद्ध, मुनिनाथ आदि।

ब्राह्मणो, महाकाव्यो और पुराणो में इनके बारे मे विसगतियां मिलती हैं। लेकिन परम्परा में दस ब्रह्मर्षियो का ब्रह्मा से प्रादुर्भाव माना जाता है। इनके नाम मरीचि, अत्रि, अगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, भृगु, वसिष्ठ, दक्ष एवं नारद हैं।

इनमे अधिकांश के नाम सप्तऋषि और ब्रह्मर्षियो मे सम्मिलित हैं। ब्रह्मर्षि को द्विज ऋषि भी कहते हैं। द्विज अर्थात् दो बार पैदा हुए। ये ब्राह्मण गोत्रो के सस्थापक थे। इन्ही के द्वारा ब्राह्मण वश का विस्तार हुआ। इस

प्रकार प्रथम सृष्टि के आरंभ में ब्राह्मण भेद एक था। जिसका प्रादुर्भाव सृष्टिकर्ता के मुख से हुआ था। यथा मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, दक्ष, नारद, भृगु। मूल मे केवल दस ही ब्राह्मण के वंश प्रमुख थे जो कालान्तर मे जाकर इन्हीं वशो के अन्य ब्राह्मणो द्वारा गोत्रों आदि के प्रवर्तक व स्थान विशेष के रूप मे भारत में भिन्न–भिन्न स्थानो पर बस जाने व अन्य कारणो से या अन्य उपजातियों में विभाजित होकर स्थान विशेष आदि मे जानी जाने लगी।

सप्तऋषि के अन्तर्गत कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भारद्वाज आते हैं। आकाश मे सप्तऋषि नाम का एक तारामंडल भी है। जो ऋषि दैवी दर्जा प्राप्त कर लेते थे उन्हें देवर्षि कहा जाता था। जैसे नारद, मार्कण्डेय आदि। जो क्षत्रिय राजा ऋषि हो जाते थे उन्हे राजर्षि कहा जाता था जैसे जनक, ध्रुव आदि।

इन महर्षियो ने वेदो का अध्ययन कर लोक कल्याणार्थ उपनिषद, पुराण, महाभारत की रचना की। वेद चार हैं– (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद।

अंग 6 हैं– शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष। विषय की दृष्टि से वेदो के तीन भाग हैं (1) कर्म काण्ड (2) उपासना काण्ड और (3) ज्ञान काण्ड। इनमे लाखो श्रुतिया हैं परन्तु मुख्य महावाक्य चार हैं (1) प्रज्ञान ब्रह्म (ऋग्वेद) (2) अहं ब्रह्मास्मि (यजुर्वेद) (3) तत्त्वमसि (सामवेद) (4) अयमात्मा ब्रह्म (अथर्ववेद)।

पुराण अठारह हैं– (1) ब्रह्मपुराण (2) पद्मपुराण (3) विष्णुपुराण (4) शिवपुराण (5) श्रीभागवतपुराण (6) भविष्यपुराण (7) मार्कण्डेयपुराण (8) अग्निपुराण (9) नारदपुराण (10) ब्रह्मवैवर्तपुराण (11) लिंग पुराण (12) वाराहपुराण (13) वामनपुराण (14) कुंभपुराण (15) मत्स्यपुराण (16) गरुडपुराण (17) ब्रह्माण्डपुराण (18) स्कन्दपुराण।

छह शास्त्रो मे– (1) पूर्व मीमांसा (2) उत्तर मीमांसा (3) न्यायशास्त्र (4) वैशेषिक (5) सांख्य (6) योगशास्त्र प्रमुख है। पूर्व मीमांसा के कर्ता जैमिनि ऋषि, उत्तर मीमासा के कर्ता महर्षि वेदव्यास, न्यायशास्त्र के महर्षि गौतम, वैशेषिक के महर्षि कणाद, सांख्यशास्त्र के कपिल और योगशास्त्र के पतजलि हैं।

इस प्रकार छह दाग, चार वेद, मीमासा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र ये ही चौदह विद्याए है। इन्हीं मे आयुर्वेद, धनुर्वेद और गान्धर्व इन तीनों को

तथा चौथे अर्थशास्त्र को मिला लेने से कुल अट्ठारह विद्याएं होती हैं।

इस प्रकार उन आदिकर्ता प्रजापति भगवान ब्रह्माजी ने मनोमयी सृष्टि द्वारा आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, पर्वत, पितृगण, यक्ष, पिशाच, गन्धर्व अप्सरा, गण, किन्नर, ऋषि, मनुष्य, पशु, पक्षी, मृग, सर्प, वृक्षादि प्राकृत और वैकृत नामक जगत के मूलभूत नौ सर्ग द्वारा सृष्टि की रचना की और काल मृत्यु आदि समस्त व्याधियां उनके शरीर व मन से उत्पन्न हुईं।

तत्पश्चात् ब्रह्माजी ने अपने शरीर के दो भाग किये। दाहिने आधे भाग से पुरुष और बाये आधे भाग से वे स्त्री बन गये। फिर उस नारी के गर्भ से उन्होने प्रजाओ की सृष्टि व वृद्धि की। ये दो स्वायम्भुवमनु तथा शतरूपा के नाम से प्रसिद्ध हुये। इनसे ही मानवीय सृष्टि हुई। इनके दो पुत्र (1) प्रियव्रत (2) उत्तानपाद और तीन पुत्रिया (1) आकुती (2) देवहुति (3) प्रसूति हुईं।

प्रियव्रतोतान पादोविस्राः कन्याश्च भारत।
आकुतिदेवहुतिश्च प्रसूतिरिति सत्तम।।

श्रीमद्भागवते अ. 12

श्रीमद्भागवत स्कन्ध पांच, श्लोक चौबीस व पच्चीस में वर्णन आता है।

इस प्रकार ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना की। संक्षेप में ही आपको जानकारी देने का प्रयास किया है।

— गौरीशंकर भार्गव

भृगुवंशोत्पत्ति

ऋग्वेद से लेकर पुराणो तक भृगुवंश की कथा का विस्तार है। भृगु
त्रद्रष्टा ऋषि थे और धनुर्वेद विद्या के प्रवर्तक थे। अथर्ववेद उनके आत्मजो
ी सृष्टि है। अग्नि की उपासना का प्रचलन एवं अग्नि सूक्तों का निर्माण
नकी प्रेरणा का फल है। उन्हें मृत संजीवनी विद्या सिद्ध थी। इनकी
नर्भीकता और पराक्रम प्रसिद्ध हैं। शिव के द्वारा दक्ष यज्ञ भंग हुआ तो केवल
ृगु ही शिव का सामना कर पाये थे। महाभारत के अनुसार इन्द्र पद पर
दासीन नहुष के अहंकार का दमन करने वाले जननायक भी यही थे।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता मे ऋषियों मे भृगरह कहकर
नकी भूरि–भूरि प्रशसा की है। यथा–

> महर्षीणां भृगुरहं, गिरामस्म्येकमक्षरम।
> यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः।।

गीता अ. 10 श्लोक 25

हे अर्जुन! मैं महर्षियों मे भृगु और वचनो में एक अक्षर अर्थात् ओकार
हूं तथा सब प्रकार के यज्ञों मे जप यज्ञ और स्थिर रहने वालो मे हिमालय
पहाड़ हूं।

महर्षि भृगु अपनी ब्रह्मविद्या, तेजस्विता और तपस्या के लिये प्रसिद्ध हैं।
महान तपस्वी होने के कारण उन्हें तपस्या निधि कहा गया है। महर्षि भृगु
ज्योतिष और तन्त्र विद्या के प्रवर्तक कहे जाते है। ज्योतिष का महान ग्रंथ
भृगुसहिता इन्हीं की देन है।

महर्षि भृगु के तप, तेज, प्रतिभा, कार्यकुशलता और महत्त्व का यह एक
प्रबल प्रमाण है कि त्रिदेवो मे कौन श्रेष्ठ है, इस प्रश्न का हल प्राप्त करने के
लिए भृगु से याचना की गई और देवताओं ने त्रिदेवो की परीक्षा लेने के लिये
उन्हें मनोनीत किया।

इस मे उन्होने जगत के विधाता ब्रह्मा, शक्ति मूर्ति शंकर और विश्व के
पालनकर्ता विष्णु को कसौटी पर कसने मे कोई कसर नही छोड़ी और यह
प्रमाणित कर दिया कि न कोई विध्वसंक शक्ति से महान बनता है, न सर्जन
शक्ति से। महान वह है जो विश्व के पालन और विकास मे रत है, वही विष्णु
है। यह ज्ञान सूत्र भृगुजी सृष्टि के आरम्भ मे ही दे गये और उन्हें समस्त देवों
मे श्रेष्ठ घोषित किया।

इसी प्रकार भृगु वंश में एक–से–एक उच्च कोटि के महर्षि उत्पन्न हु
उनमे महर्षि परशुराम भृगु ऋषि की वंशवेलि के अद्वितीय पुरुष थे। ज्ञ
व शौर्य मे उद्दीप्त इसी परम्परा मे महर्षि परशुरामजी का जन्म वैसाख शु
पक्ष की अक्षय तृतीया को हुआ। ये वेद और शस्त्र विद्या मे पारगत थे। शि
इनके गुरु थे। जब भगवान शिव ने इनकी परीक्षा लेनी चाही तो गुरु–शि
में घोर संग्राम हुआ और परशुराम ने एक दिन त्रिशूल का वार किया जो शि
के भाल पर लगा। शिष्य के इस कौशल से गद्–गद् हो शिव ने परशुराम
हृदय से लगाया।

महर्षि शुक्राचार्य

महर्षि शुक्राचार्य के पास मृतसजीवनी विद्या थी। भगवान शंकर ज
देवासुर संग्राम में असुरों के विनाश के लिए युद्ध करने लगे तो दैत्यगुरु
शुक्र मृत असुरों को अपनी सजीवनी विद्या के प्रभाव से जीवित करने ल

अत. क्रोधित होकर भगवान शिव ने उन्हें निगल लिया। संजीवनी
प्रभाव के कारण वे मरे नहीं। सहस्र वर्ष कवि शिव के उदर में रहकर शि
मत्र का जप करते रहे। इससे शिव ने उन्हे लघुशका के साथ बाहर
दिया। बाहर आकर वे शिव की स्तुति करने लगे। शिव ने कहा– तुम मेरे शु
मार्ग से प्रकट हुए हो इसलिए अब से तुम्हारा नाम शुक्र हुआ। वे दैत्यो
असुरो के गुरु है। इन्हें भार्गव के नाम से भी जाना जाता है। ये ब
नीतिनिपुण थे। इन्होने शुक्रनीति नामक पुस्तक की रचना की थी
नीतिशास्त्र का अद्भुत ग्रथ है।

एक समय महर्षि शुक्राचार्य ने असुरो के कल्याण के लिए एक ऐ
कठोर व्रत का अनुष्ठान किया जिसे आज तक कोई नही कर सका था। इ
व्रत से उन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न किया और औढरदानी ने वरदा
दिया कि तुम देवताओ को पराजित कर दोगे और तुम्हे कोई मार नहीं सकेग
(मत्स्य पु अ. 46)। अन्य वरदान देकर शकर ने उन्हे धनों का अध्यक्ष औ
प्रजापति भी बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक औ
परलोक मे जितनी सम्पत्तियां है सबके स्वामी बन गये (महाभारत आ
68/39)। सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य तो समग्र औषधियो, मन्त्रो और र
के भी स्वामी है (मत्स्य पु. 47/64)। इन्होने अपनी समस्त राम्पत्तियां
अपने शिष्य असुरों को प्रदान कर दी थीं (मत्स्य पु. 67/65)। दैत्य
शुक्राचार्य का सामर्थ्य अद्भुत है।

गीता अध्याय 10, श्लोक 36 मे भगवान श्रीकृष्ण ने कवियो में शुक्राचार्य को अपना स्वरूप माना है।

वृष्णीनां वासुदेवो अस्मि पाण्डवानां धनंजयः।।
मुनिनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करते हैं। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय और कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग क्षेम का कार्य करते है (महाभारत आदि 66/42–44)। ग्रह के रूप में ये ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते है (महाभा सभा. 91/25)। लोको के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं। ये वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं (श्रीमद्भा. 5–22–12)। इनके अधिदेवता इन्द्राणी और प्रत्यधिदेवता इन्द्र है। शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है (मत्स्य पु 98/5) एव इनके वाहन रथ में अग्नि के समान वर्ण वाले आठ घोडे जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं (मत्स्य पु. 94–5)। महर्षि शुक्राचार्य अत्यन्त गुप्त और दुर्लभ मन्त्रों के ज्ञाता, अनेक विद्याओं के पारदर्शी, महान, बुद्धिमान और परम नीति–निपुण हैं। इनकी "शुक्रनीति" जगत्तप्रसिद्ध है। इनकी महाभारत, श्रीमद्भावगत, वायुपुराण, ब्रह्मपुराण, मत्स्यपुराण और स्कन्दपुराण आदि मे बडी ही विचित्र और शिक्षाप्रद कथाएं हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता तत्त्व विवेचनी में टीकाकार श्री जयदयालजी गोयन्दका ने अध्याय दस, श्लोक 37 मे टीका की है कि महर्षि भृगु के च्यवन आदि सात पुत्रों में शुक्र प्रधान है। इन्होने भगवान शंकर की आराधना करके संजीवनी विद्या और जरामरणरहित वज्र के समान दृढ शरीर प्राप्त किया था। भगवान शंकर के प्रसाद से ही योग विद्या में निपुण होकर इन्होने योगाचार्य की पदवी प्राप्त की थी।

मध्य रेल्वे पर कोपरगांव स्टेशन है। पास ही गोदावरी नदी के तट पर शुक्रेश्वर महादेव का प्रसिद्ध प्राचीन मदिर है जो दैत्यगुरु शुक्राचार्य का आश्रम कहा जाता है। मदिर के बाहर शुक्राचार्य की कन्या देवयानी का स्थान है। गोदावरी के दूसरे तट पर कचेश्वर शिव मन्दिर है। यह देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच द्वारा स्थापित बताया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा तथा महाशिवरात्रि को यहा मेला लगता है। मनमाड स्टेशन के पास ही चादबड स्थान है। इस स्थान का प्राचीन नाम चन्द्रवट है। यहां रेणुका तीर्थ नाम सरोवर है। उसके समीप रेणुका मदिर है। कहा जाता है कि परशुराम की माता रेणुका ने यहां तप किया था। गांव के पास ही पहाडी पर काली मदिर है।

भृगु की पत्नी दिव्या से कवि (शुक्र) और इक्कीस देवपुत्र हुए। कहीं-कहीं पर 12 पुत्रों का उल्लेख है। देवपुत्रों के नाम (1) अज (2) अधिपति (3) अन्त्य (4) अन्त्यायन (5) अव्यय (6) ऋतु (7) त्वाज्य (8) दक्ष (9) प्रभव (प्रसव) (10) भावन (11) भुवन (12) मोवन (13) सूर्धग (14) वसुद (15) व्यजय (16) व्यश्रुष (17) ब्याज (18) श्रुंवा (19) सुनन (20) सुजन्य (21) स्वमुर्द्धन बतलाए गए है।

महर्षि शुक्राचार्य की तीन पत्नियो का उल्लेख मिलता है। उनकी एक पत्नी पितरो की मानसी कन्या गो, दूसरी देवराज इन्द्र की पुत्री जयन्ती, एवं तीसरी पत्नी प्रियव्रत की पत्नी बहिष्मति से उत्पन्न कन्या ऊर्जस्वती थी जिसका उल्लेख भागवत स्कन्ध 5, श्लोक 34 मे मिलता है। ऊर्जस्वती से एक पुत्री देवयानी का जन्म हुआ। एक मत से जयन्ती से देवयानी का जन्म माना जाता है।

फुलेरा के पास सांभर से दो मील दूर देवयानी गांव है। वहां पर एक सरोवर के पास कई मंदिर है। इनमें शुक्राचार्य तथा देवयानी की मूर्तियां हैं। वैशाख पूर्णिमा को यहां मेला लगता है। कहा जाता है कि यहीं शुक्र का आश्रम था। इसी सरोवर में स्नान करते समय भूल से दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा ने आचार्य शुक्र की कन्या देवयानी का वस्त्र पहन लिया था जिससे दोनो मे विवाद हुआ। यह कथा भागवत में आती है।

शुक्राचार्य की पत्नी गो से शुक्र के त्वष्टा, वरुत्री, शँड और मर्क चार पुत्र हुए। त्वष्टा के यशोधरा विरोचनी पत्नी द्वारा तीन पुत्र तिशिरा, विश्वरूप, विश्वकर्मा हुए।

महर्षि शंकराचार्य

महर्षि शण्ड के पुत्र शकराचार्य हुए। नारद पचरात्र ग्रन्थ मे उसका वर्णन है। नारद पंचरात्र बडाग्रन्थ है। इसके पाच भाग हैं। प्रत्येक भाग मे कई हजार श्लोक हैं। समग्र ग्रन्थ की श्लोक संख्या एक लक्ष है। आजकल एक छोटा-सा नारद पंचरात्र अर्थात् भारद्वाज संहिता नाम का ग्रन्थ श्री वैंकटेश्वर प्रेस का छपा मिलता है। वह ग्रन्थ नारद पंचरात्र के किसी एक भाग के प्रकरण का प्रकाशन है। उपरोक्त नारद पंचरात्र महर्षि प्रकरण भाग तीसरा, अध्याय सताईस में विष्णु-नारद सवाद मे कहा गया है यथा नारद पंचरात्रा महर्षि प्रकरणे विष्णु नारद संवादे।

असितपुरा मुनिश्रेष्ठो भार्गव धर्मतत्परः
तस्य पुत्रो अति तेजस्वी षंडाचार्य इति स्मृतः।।1।।
द्वितीयो मर्कटाचार्य शुक्राचार्य पुत्रकः
षंडाचार्यस्यः मवत्पुत्रा शंकराचार्य वाचकः।।2।।

पूर्वकाल मे भार्गव मुनि अर्थात् शुक्राचार्य मुनियो मे श्रेष्ठ हुए हैं। उनके अति तेजस्वी षंडाचार्य और मर्कटाचार्य हुए। यह शुक्राचार्य के दो पुत्र हुए । षडाचार्य के शंकराचार्य हुए।

ततो बभूव शांडिल्यः स्वनामा स्मृतिकारकः
तस्य पुत्रो डामराचार्य चिकित्सा निपुणं सदा।।3।।
तथा ज्योतिष मर्ये शास्त्रो निपुणः कृतवान
सौ संहिता डामरी डक्का तच्छिष्यः बहवोमवत्।।4।।

शंकराचार्यजी के पुत्र शाडिल्य हुए। इन्होंने शांडिल्य स्मृति बनाई। यह धर्मशास्त्र के रूप मे प्रसिद्ध है। शाडिल्यजीके डामराचार्य हुए। वे चिकित्साशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्होने अपने नाम की डामरसहिता बनाई। यही डक्का ऋषि डक मुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

महर्षि शांडिल्य

भृगुकुल में धर्मशास्त्र के ज्ञाता महर्षि शांडिल्य मुनि हुए। ये भक्ति शास्त्र के रचयिता भी थे। शाडिल्य मुनि ने एक महान् ग्रंथ शांडिल्यस्मृति बनाया। ये वेदशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। नर्मदा के दक्षिण तट पर रावेर के पास व्यासजी व अश्वनीकुमारो की तपोभूमि थी। वही पर अकतेश्वर तीर्थ है। रावेर से थोडी दूर पर नर्मदा के उत्तर तट पर जहा महर्षि अगस्त्य ने विन्ध्याचल को बढने से रोका था, वही अगस्त्येश्वर मंदिर है। यहीं पर गाव मे केदारेश्वर मंदिर है। जो महर्षि शांडिल्य द्वारा प्रतिष्ठित है। यह स्थान उनकी आराधनास्थली रहा। इसके अतिरिक्त भारत के अन्य स्थानों पर भी इनके कई आश्रम हैं। ये गोत्र प्रवर्तक भी माने जाते है। अग्नि देव का गोत्र भी शांडिल्य है। ब्राह्मण परिवारो में त्रिवेदी, तिवाडी, त्रिपाठी का गोत्र भी शाडिल्य है। इन्होंने राजा परीक्षित और वज्रनाद को स्कन्दपुराणान्तर्गत श्रीमद्भागवत महात्म्य 1/19–26 मे ब्रज भूमि का रहस्य वर्णन किया था।

महर्षि डक्क (डक मुनि)

शाडिल्य ऋषि के पुत्र डक्क ऋषि हुए। इन्होंने डंकपुर को अपना निवासस्थान बनाया जिसका अपभ्रंश डाकोर है। यह रेल्वे स्टेशन गुजरात प्रान्त के गोधरा–आनन्द–अहमदाबाद रेलवे के मध्य (भृगु कच्छ) भडौच के

समीप है। महर्षि डक्क (डामराचार्य) का विवाह वैद्य धनवन्तरि की पुत्री सावित्री से हुआ था।

डाकोर पहले एक सघन अरण्य था। खाखरिया नाम से इसकी प्रसिद्धि थी। यह हिडम्ब वन का एक प्रधान अंग और ढाक की झाडी जैसा सघन था। उसी प्रकार सुरम्य और आकर्षक था। झाडियों के मध्य कहीं-कहीं स्वच्छ निर्मल जल वाले कमलो से सुशोभित यहां गर्म एवं ठण्डे जल के जलाशय विद्यमान थे। आज भी डाकोर के समीप टुवा रेल्वे स्टेशन पर इन गर्म और ठण्डे जल के स्रोतो के पास कई मदिर है।

इन जलाशयो के तट पर सन्त, ऋषि, महर्षि व महात्माओं की कुटीरें थी। इन्हीं कुटीरो मे एक पर्णकुटी मे तपोधन कण्डु ऋषि के गुरुभ्राता डंक मुनि (डक्क ऋषि) निवास करते थे। भृगुकुल मे उत्पन्न महर्षि शांडिल्यजी के पुत्र ये डक्क ऋषि ही डामराचार्य के नाम से जगत मे प्रसिद्ध हुए। इन्होने ही डामरसंहिता नामक ग्रंथ की रचना की थी। ये ज्योतिष व चिकित्साशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे। महर्षि डक्क द्वारा स्थापित डकपुर ऋषियों की परम पवित्र तपोभूमि थी। डंक मुनि शंकरजी के परम भक्त एव पूर्ण तपस्वी थे। यहां इनके द्वारा स्थापित डंकेश्वर महादेव का मदिर है। डाकोर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहीं पर कालान्तर मे भगवान श्रीकृष्ण द्वारिका से पधारे थे और उनकी द्वारिका की मूर्ति यहां स्थापित हुई। गुजरात प्रान्त में श्रीकृष्ण-भक्तो का यह एक विख्यात तीर्थ है।

तपोभूमि डाकोर डंक मुनि का निवास स्थान होने के कारण डाकोर अपभ्रंश कालान्तर में डाकोत हो गया।

आधुनिक काल में भृगुवशीय ब्राह्मण मूलतः तीन विभिन्न शाखाओ मे विभाजित होकर समाज मे अपनी एक अलग पहचान बनाये हुए हैं।

(1) भृगुपत्नी ख्याति की सतान
(2) भृगुपत्नी पुलोमा की संतान
(3) भृगुपत्नी दिव्या की संतान

(1) महर्षि भृगुपत्नी ख्याति की संतान

महर्षि भृगुजी के तीन पत्नियां थीं ख्याति, पुलोमा, दिव्या। उनसे उत्पन्न सतानो मे पत्नी ख्याति, जो महर्षि कर्दम ऋषि की पत्नी देवहुति की पुत्री थी उससे दो पुत्र धाता और विधाता तथा एक पुत्री श्री (लक्ष्मी) का जन्म हुआ। मेरु ऋषि की आयति और नियति नाम कन्याएं क्रमशः धाता और विधाता को ब्याही थीं। विधाता के पुत्र पांडु (प्राण) तथा पांडु के पुत्र द्युतिमान

तथा द्युतिमान के पुत्र उन्नत एवं स्वनपात, कही द्युतिमान का पुत्र राजवान भी बतलाया है, धाता के पुत्रा मृकड हुए जिससे मार्कण्डेय का जन्म हुआ। महर्षि मार्कण्डेय की माता का नाम मृदुमति था। मार्कण्डेय से देवशिरा, देवशिरा से मार्कण्डेयपुत्र हुए। मार्कण्डेय पुराण का सृजन उन्हीं के नाम से हुआ जिसका एक अश दुर्गा सप्तशती है। यह अन्तिम मार्कण्डेय कुलनाम सूचक है। महर्षि भृगु की श्री (लक्ष्मी) नाम कन्या भगवान श्रीविष्णु को ब्याही थी।

(2) महर्षि भृगुपत्नी पुलोमा की संतान

महर्षि भृगु की दूसरी पत्नी पुलोमा, पुत्री पोलोमा से महर्षि च्यवन का जन्म हुआ था। राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या द्वारा दैववश तप करते समय महर्षि च्यवन की सुलभ ऑखे फूट गई थीं अत राजकन्या सुकन्या का विवाह पिता की आज्ञा से महर्षि च्यवन से हुआ। अश्विनीकुमारो की कृपा से च्यवन मुनि को पुन. आखो का वरदान मिला। शायद यह संसार में आँखो का पहिला ऑपरेशन था। आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि च्यवनप्राश इन्हीं का आविष्कार है। महर्षि च्यवन की गणना महान् ऋषियो मे होती है।

(3) महर्षि भृगुपत्नी दिव्या की संतान

महर्षि भृगुजी की तीसरी पत्नी हिरण्यकशिपु की पुत्री दिव्या से शुक्राचार्य का जन्म हुआ था। यह हिरण्यकशिपु के नाती और असुरो के कुल गुरु थे। इनका दूसरा नाम कवि/उषना था। एक मत के अनुसार भृगुपत्नी दिव्या से कवि एवं कवि से शुक्राचार्य का जन्म माना जाता है।

शिवपुराण के अनुसार शुक्राचार्य/कवि ने काशी में शिवलिंग की स्थापना करके पांच सहस्र वर्ष धूनी धूम्रपान करके तप किया था। इस पर संजीवनी विद्या के अतिरिक्त शिव ने इन्हे आकाश में सबसे उज्ज्वल ग्रह बनने का वरदान दिया था। अतः वैदिक परम्परा मे शुक्र तारे के उदय के पश्चात् ही सब शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं।

पंड (षडाचार्य) और मर्क हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रहलाद के गुरु थे। पंड के पुत्र महर्षि शंकराचार्य हुए। शकराचार्य के पुत्र महर्षि शाडिल्य हुए जिन्होंने शाडिल्य ग्रथ की रचना की। महर्षि शाडिल्य के पुत्र डामराचार्य हुए जिन्होने डामरसहिता ग्रथ की रचना की थी। यह चिकित्साशास्त्र एव ज्योतिषशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे। डक्क/डकमुनि/डंकनाथ इन्हीं का रूपान्तर है एव डंकपुर (डाकोर) आप की तपोभूमि व आश्रम था। महर्षि डामराचार्य के पाच पुत्र (1) डिडिम (2) दुरातिष्य (3) सुषेण (4) शल्य और (5) प्रतिष्य

सभी समाज हम से आगे है और हम लोग आगे होकर ही पीछे है। जरा सोचो, चिन्तन करो, मंजिल को पाना है तो दृढ निश्चय से संघर्ष तो करना ही होगा। इसके लिये त्याग और हिम्मत की आवश्यकता है। कदम आगे बढ़ाना है, पीछे नहीं।

इसलिये हमे तीन बातो का परित्याग करना होगा।

(1) भिक्षावृत्ति को छोड़ना होगा
(2) रूढिवाद को खतम करना होगा
(3) अशिक्षा को खतम करना होगा

शिक्षा को अपनाना होगा तब जाकर इस खारे पेड़ की जडे खोखली होंगी। दीमक की तरह चिपक जाओ, स्वतः ही यह पेड उखड़ कर गिर जायेगा। इसका विरोध करना, आन्दोलन करना इतना आसान काम नही। सम्मान पाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।

भिक्षावृत्ति का यह मतलब नहीं कि हम आपको अपनी गुरु–यजमानी में जाने के लिए मना करते हैं। नही, आप अपनी गुरु–यजमानी मे अवश्य जाये। आप तो ब्राह्मण हैं, ज्ञानी है। ब्राह्मण का स्वरूप बनकर जाये। आप अपने आदर्श की गरिमा का पूरा ध्यान रखे, आप अपना सम्मान एक गुरु की भाति करायें। और आप का यह धन्धा नही है कि आप दूकानो, स्टेशनों, सडको और बाजारो में भिक्षावृत्ति करे। ऐसा करने से आप का, समाज का स्तर गिरता है। क्या ऐसा करना आपको अच्छा लगता है ? आपको शर्म महसूस नही होती ? अगर होती है तो आप ऐसा न करें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए मना करे। आपके मन को शान्ति मिलेगी, आपका मनोबल बढेगा। आपका सम्मान अधिक होगा, इज्जत बढेगी। इसके बारे में समाज के जाति भाइयों और मांओं और बहनों को भी समझाना होगा कि अपने भार्गव समाज के गौरव को समझें। आप के कारण दूसरे समाज के लोग भी शनि की मूर्ति लोटे मे डाल कर चालू हो गये हैं जो हमारे समाज को बदनाम करते हैं। ऐसे लोगो को रोकने के लिये हमे आगे आना होगा। आज हर समाज अपने समाज की महत्त्वपूर्ण पहचान बनाए हुए है। एक हम हैं कि पिछडापन लिए हुए बैठे हैं। न जाने वो समय कब आयेगा जब हमारा समाज भी महत्त्वाकांक्षी होगा। सबसे आगे खडा होने वाला आज सबसे पीछे वाली लाइन में खडा है।

इतने बडे बाप की संतान कहा खडी है यह बडे शर्म की बात है। यह भार्गव समाज की संतान पिताश्री भृगु के वंश, कुल और नाम को मिट्टी

मे मिलाये जा रही है। क्या आप का खून खून नहीं, पानी है ? डर कर जीवन जीना है तो इस धरती पर बोझ बनकर क्यों आये ?

जाति बन्धुओ ! आगे आओ। हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम समस्त रूढिवादी कुरीतियों का बहिष्कार करते हैं और समाजिक स्तर पर हम कुछ कडे नियमो के अनुसार इन पर विचार करके लोगो को पाबन्द करेंगे और अपना कर्तव्य समझ कर नियमों का पालन करेंगे।

तत्पश्चात् आने वाले समय मे आपके बच्चों को पछताना नहीं पडेगा और गर्व से कह सकेगे कि हम भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण हैं।

अतः हमे आगे ऐसी गलती नही करनी है। सोचे, समझें और अपने मन में झाककर चिन्तन करे और भृगुवंश के उज्ज्वल भविष्य एवं पिताश्री भृगुजी के नाम को फिर से कीर्ति एव सम्मान दिलाने मे कोई कसर नही छोडे। यही आशा करता हू आप से।

विष्णु नाभि से

1. मरीचि 2. अत्रि 3 अंगिरा 4. पुलस्त्य 5. भृगु 6. पुलह 7. क्रतु 8 वशिष्ठ 9. दक्ष 10 नारद

ईश्वर ने अपने प्राकृतिक स्वरूप मे सर्वप्रथम बीज को प्रधानता दी है। बीज से ही हर चीज की उत्पत्ति मानी गई है, जमीन चाहे कैसी भी हो। जैसा बीज बोयेगे वैसा ही फल उत्पन्न होगा।

मैने अपनी पुस्तक मे ब्रह्माजी के पुत्र महर्षि भृगुजी की वंशावली उत्पत्ति, भृगुवंश गौरवगाथा व उच्च कोटि के महर्षियो की चिर-परिचित उपलब्धियों से परिचित कराने का प्रयास किया है।

प्रिय सामाजिक एवं अन्य सामाजिक पाठक बन्धुओ ! भार्गव समाज एक उच्च कोटि का ब्राह्मण समाज है। यह मैं नहीं कहता, सृष्टि रचयिता श्री ब्रह्माजी कहते है और सारा जग जानता है और आदिकाल के शास्त्रो मे भी इसका उल्लेख मिलता है।

अतः आज भार्गव समाज को लोग सही दृष्टिकोण से नही समझ पा रहे हैं क्योंकि भृगु भाइयो मे आपसी शिक्षा व अशिक्षा का तालमेल न होने के कारण एक भाई उत्तर की ओर जाता है तो दूसरा दक्षिण की ओर। कोई यह नही जान पाता कि आखिरकार हम हैं कौन ?

अगर आपसे आपकी सही जानकारी के बारे में पूछें कि आप कौन से भार्गव हैं तो आप सही ढंग से बता नही पायेगे क्योंकि आपको इसके बारे में पूर्णतया जानकारी नहीं है। इसलिये दृढतापूर्वक नही कह पाते कि हम भार्गव ब्राह्मण हैं। भार्गव--भार्गव एक ही होते हैं। क्योकि कुछ भाइयों को इस विषय की पूर्णतया जानकारी नहीं होने के कारण शंकित रह जाते हैं और सकोचवश सही बता नही पाते हैं।

अतः मैं आपको इस बारे मे कुछ आवश्यक जानकारियो से अवगत कराना चाहूंगा।

1. आपको अपने गौरव को समझना होगा।
2. आपको अपनी पहचान के बारे मे पूछने पर सही जानकारी देनी होगी।
3. अपने मन मे छिपे हुए डर को निकालना होगा और दृढ़तापूर्वक जवाब देना होगा।
4. अपने मनोबल, आत्मशक्ति को मजबूत करना होगा।
5. सत्य कही छुपता नही, यही हमारी पहचान है।
6. हमें अपनी कुरीतियों को छोडना होगा।

इन सभी बातो को ध्यान मे रखने से हमारे भार्गव समाज का गौरव, सम्मान, कीर्ति, यश बढ़ेगा। आप अपनी कुरीतियो से भलीभांति परिचित हैं, बताने की आवश्यकता नहीं है।

भृगु वंश का प्राचीन इतिहास

भार्गव वश के प्रवर्तक महर्षि भृगु वैदिक काल के आरंभ में हुए थे और राजा वैवस्वत मनु तथा महर्षि कश्यप और महर्षि अत्रि के समकालीन थे। उनका तीन बार भृगु नाम से और तीन बार भृगुवाण नाम से ऋग्वेद मे उल्लेख हुआ है। इसके अतिरिक्त उन्हें अथर्वन और अंगिरस भी कहा गया है। ऋग्वेद के अनुसार भृगु ने अग्नि को देवताओ का दूत बनाया अर्थात् अग्नि मे आहुति डालकर उपासना करने की विधि का भृगु ने ही आविष्कार किया। दूसरे शब्दो मे हम कह सकते है कि महर्षि भृगु ही यज्ञ के प्रवर्तक थे। दुर्भाग्यवश पुराणो में भृगु के सम्बन्ध में मिथको के अतिरिक्त कोई ठोस सामग्री उपलब्ध नहीं है।

ऋग्वेद के छठे मडल में एक मत्र से ज्ञात होता है कि अथर्वन अर्थात् भृगु के पुत्र दध्यच अथवा दधीच थे। दुर्भाग्यवश दधीच महर्षि भृगु से भी अधिक मिथकों से आवृत हैं। प्राचीन पचविश ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि दधीच के पुत्र प्रसिद्ध ऋषि च्यवन थे च्यवन का ऋग्वेद में आठ बार च्यवन नाम से उल्लेख हुआ है। इन सूक्तों से ज्ञात होता है कि रोगग्रस्त होने के कारण जो युवावस्था में ही वृद्ध सदृश हो गये थे उन च्यवन को आश्विनीकुमार ने रोगमुक्त करके पुनः युवा बना दिया। शतपथ ब्राह्मण से हमें ज्ञात होता है कि वैवस्वत मनु के राजा शर्याति ने अपनी पुत्री सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया। च्यवन के एक भाई थे जिनका नाम कवि था। कवि के पुत्र उशना थे जो शुक्र भी कहलाते थे। शुक्र के शण्ड और मर्क नामक पुत्र और देवयानी नामक पुत्री हुई। देवयानी का विवाह प्रसिद्ध राजा ययाति से हुआ। देवयानी के यदु और तुर्वश नामक पुत्र हुए। इसी यदु के वश मे श्रीकृष्ण हुए। षण्ड और मर्क की सतान के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। वे लोग सभवतः ईरान चले गये क्योंकि प्राचीन ईरानी ईश्वर की उपासना असुर अथवा असहुर नाम से करते थे और शुक्रवंशजों को पुराणो मे असुरयाचक कहा गया है।

इतिहासकार डॉ. श्री पुरुषोत्तमलाल भार्गव

क्या षण्ड मर्क की सतान के बारे मे कोई सूचना नहीं मिलती ? इस विषय की या तो आपने आगे जानकारी नही की होगी या फिर आगे की जानकारी को आपने किसी कारणवश लिखना नही चाहा।

अतः इस विषय की आगे की जानकारी से हम आपको अवगत करते हैं। **भृगुवंश गाथा** नामक पुस्तक, जो कि स्व. श्री किशनलालजी शर्मा रतलाम वालो ने लिखी है, उसके पृष्ठ सख्या 160 पर इसका उल्लेख अंकित है जिसे मैं आपकी जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं।

पण्ड (पण्डाचार्य) और मर्क हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रहलाद के गुरु थे। पण्ड के पुत्र महर्षि शंकराचार्य हुए। शंकराचार्य के पुत्र महर्षि शांडिल्य हुए। जिन्होंने शाडिल्यस्मृति ग्रन्थ की रचना की थी। शांडिल्य के पुत्र डामराचार्य हुए जिन्होंने डामरसहिता ग्रंथ की रचना की थी। यह चिकित्साशास्त्र एव ज्योतिशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे। डक्क/डकमुनि/डंकनाथ इन्ही का रूपान्तर है एवं डंकपुर (डाकोर) आपकी तपोभूमि व आश्रम था। महर्षि डामराचार्य के पांच पुत्र (1) डिडिम (2) दुरातिष्य (3) सुषेण (4) शल्य और (5) प्रतिष्य हुए। डिडिम, दुरातिष्य और प्रतिष्य, ज्योतिष और शास्त्रोक्त कर्म, यज्ञ आदि के ज्ञाता हुए। सुषेण व शल्य ये दोनों वैध एवं चिकित्सा शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता हुए। सुषेण ने सुषेणसागर और शल्य ने शल्यतन्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की। सुषेण रावण के राजवैद्य हुए और राम–रावण युद्ध मे लक्ष्मणजी की चिकित्सा करके उन्हें जीवनदान दिया। यही हमारे वशज और बुजुर्ग थे।

भार्गव जाति का इतिहास

एक स्वाभाविक प्रश्न यह है कि च्यवन और उनके वंशज वधुसरा नदी के तट पर रहते थे तो सभी भृगुवंशी ब्राह्मण वधुसर कहलाने चाहिए। केवल एक छोटा–सा समूह ही वधुसर क्यो कहलाया ? इसका उत्तर यह है कि प्राचीनकाल मे प्रदेश के नाम पर ब्राह्मण के नाम नही होते थे। अत जो भृगुवशी ब्राह्मण प्राचीन अथवा पूर्वमध्यकाल मे अपने मूल निवासस्थान को छोड़कर चले गये, वे वधुसर नही कहलाये परन्तु जो उत्तरमध्यकाल तक भी वधुसर नदी के आस–पास के प्रदेश में बसे रहे, उनकी संज्ञा वधुसर अथवा धूसर हो गई।

दूसर भार्गवो के गौत्र से भी इस बात की पुष्टि होती है कि वे लोग सब भृगुवंशी हैं। दूसर भार्गवों मे छः गोत्र हैं। इनमे से तीन बछलश अथवा वत्स, कुछलश अथवा कुत्स और गोलश अथवा गालव गोत्र भृगुवश के वत्स पक्ष के अन्तर्गत हैं। और इनके प्रवर भृगु, च्यवन, अप्रवान, उर्व और जमदग्नि है। विदलाश अथवा बिद गौत्र पक्ष के अन्तर्गत है और इनके प्रवर भृगु, वीतहव्य और सावेतस हैं। गौत्र प्रवर के नियमों के अनुसार वत्स, कुत्स, और

गालव और विद गौत्र वाले केवल गार्ग्य और काश्यप गौत्रा वालों से विवाह कर सकते हैं। परन्तु न तो वत्स, कुत्स, गालव, और विद गोत्र वाले एक-दूसरे से विवाह कर सकते हैं, न गार्ग्य और काश्यप गौत्र वाले एक-दूसरे से कर सकते हैं।

जब दूसर भार्गव पृथक् जाति के रूप मे संगठित हो गये थे तब कम सख्या होने के कारण गोत्र-प्रवर के नियमो का पालन करना कठिन हो गया। अत पृथक् होने के कुछ ही समय बाद जाति के बुद्धिमान नेताओं ने प्रत्येक गोत्र को उनके कुलो मे विभक्त करके केवल समान कुल मे विवाह करना वर्जित कर दिया। प्रत्येक कुल की एक कुलदेवी भी बना ली गई। उदाहरण के लिए विद गौत्र मे चौकडायत कुल की आचल कुलदेवी है और बजाज कुल की नीमा कुलदेवी है जबकि रायजादा कुल की ब्राह्मणी कुलदेवी हैं। काश्यप गौत्रा मे मुन्शी कुल की जीवन कुलदेवी है और दही वालो की चांडव कुलदेवी है जबकि किशनगढ वास वालो की अरघाढ कुलदेवी है। एक उल्लेखनीय बात यह है कि इन कुलों और कुलदेवियो मे से अधिकतर के नाम अत्यन्त अटपटे और भोंडे हैं और जिज्ञासा स्वाभाविक है कि ऐसा क्यो है ? इस प्रश्न का उत्तर वास्तव मे कठिन नही है। कुलदेवियों के अटपटे नामो का कारण यह है कि जिस युग में इन नामो की कल्पना की गई उसमे लम्बे विधर्मी शासन के फलस्वरूप दूसर भार्गव ही नही समस्त हिन्दू जन अपनी सस्कृति से पूर्णतया कट गये थे। ऐसी दशा मे उनके लिए कुलदेवियो के समीचीन नामों की कल्पना करना असंभव था। दूसर भार्गवों मे कुलों के अटपटे नामो का ऐतिहासिक कारण अग्रिम अध्याय मे बताया जायेगा।

जैसे कि ऊपर बताया जा चुका है, दूसर भार्गवो मे समान गौत्र मे विवाह हो सकता है परन्तु समान कुल मे नही हो सकता। हमे इन नियमो का दृढता से पालन करना चाहिए क्योकि यह आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से भी आवश्यक है। परन्तु आज की पीढी हमारे कुलो और कुलदेवियो के अटपटे और भोडे नामो के याद रखना कठिन ही नही समझती है वरन उनके प्रयोग मे लज्जा का भी अनुभव करती है। अत यह नितान्त आवश्यक है कि हम कुलदेवियो के मनगढंत नामो को त्याग दे और कुलो के नामो का ही उचित सुधार करके प्रयोग करे। भार्गव सभा का यह दायित्व है कि एक समिति नियुक्त करके भार्गवो के कुलो के वर्तमान नामो को उचित परिवर्तन द्वारा भार्गव समाज की मर्यादा के अनुकूल बनावे। और हमारे बीच यह भेदभाव की दीवार खडी नहीं होगी। अब समय आ गया है आप के और हमारे बीच की

दूरी को समीप लाने का। शिक्षित वर्ग और बुद्धि जीवी भार्गव जाति बन्धुओ, आपसे मेरा अनुरोध है कि आप आगे आएं, अपनो को गले लगाएं, इस भेदभाव की भ्रान्ति को दूर कर एक–दूसरे का साथ दे।

आप अपने–आपको श्रेणियों मे न बांटें। श्रेणी का स्थान उसी को मिलता है जो उसके योग्य होता है। श्रेणी किसी की बपौती नही। जिसमे क्षमता होगी, योग्यता होगी, वही उसे प्राप्त कर सकता है।

अपने–आप को ए श्रेणी मे समझने वाले भृगुवश भार्गव जाति के सामाजिक भाइयो! इस ओर ध्यान दे। इतने अन्तराल के बाद एक–दूसरे से जुडने के लिए मन में सकोचवश झिझक तो अवश्य होगी, यह स्वाभाविक है। यह आप भी सोचते होंगे, पर पहल कौन करे ? परस्पर जिज्ञासा दोनों ओर बराबर है। ए और बी का संगम होने से ही सामाजिक समस्या का समाधान हो सकता है।

अतः ए श्रेणी में समझने वाले भार्गव बन्धुओ ! आप अपने कम गोत्रो के कारणवश कुलदेवियो का सहारा लेकर विवाह–शादी करने लगे पर उसमे भी आपको कठिनाइयो और उलझनो का सामना करना पडा रहा है। पर वो ठीक नहीं है। कभी–कभी तो आप को अन्तरजातीय विवाह करने के लिए मजबूर होना पडता है और करते भी हैं। परन्तु यह परम्परा के अन्तर्गत सही नहीं माना जाता। एक ब्राह्मण अपनी कन्या का विवाह किसी अन्य जाति में करे यह सामाजिक न्याय उचित नही माना जाता और इससे वंशवृद्धि नहीं होती अपितु वंश कटता है। इससे तो आपके भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण भाई लाख दर्जे अच्छे है। आपकी जाति के तो हैं और आपके, उनके गौत्र प्रवर भी समान है।

भृगु अर्चना दर्पण

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य (एक सुझाव, अपील)

भार्गव समाज एक उच्च कोटि का ब्राह्मण समाज है। अतः पारिवारिक उत्पत्ति एक ही है इसमे कोई संदेह नही है फिर भी अपने–आप में ए और बी का दर्जा लिए हुए है। ए श्रेणी वाले अपने–आपको शिक्षित और बुद्धिमान वर्ग वाला समझते हैं। दूसरी ओर बी श्रेणी वाला अशिक्षित, मद बुद्धि वाला वर्ग है जिसे भार्गव समाज का पिछडा हुआ वर्ग समझा जाता है।

ऐसा क्यों ? क्या वो आपके भाई नही है ? फिर यह भेद कैसा ? वंश परम्परा के अन्तर्गत आप के पिताश्री भृगुजी से ही आप दोनो की उत्पत्ति का एक ही रूप बताया गया है।

अतः मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप अपने सामाजिक जाति बन्धुओ, भाइयो को साथ लेकर क्यो नहीं चलते। अज्ञानतावश राह भटक गये उन्हे सही दिशा–ज्ञान नही मिला और मार्ग भूल गये। शिक्षा लुप्त हो गई ब्राह्मण तत्त्व को नहीं पहचान पाये और इसी अज्ञानतावश ब्राह्मण ने अपनी जीविका चलाने के लिए गुरु–यजमानी, विरत–बाडी का धन्धा अपनाया और अपनी जीविका चलाने लगा। इसके सिवाय उस निरक्षर के पास और कोई चारा भी तो नहीं था। दान देना व दान लेना एक ब्राह्मण का कर्म है। पर रूपरेखा अन्य लोगो की धारणा से अलग–अलग बनादी और भ्रमित कर दिया। इसी अज्ञानता का यह प्रतिफल आज इनको भुगतना पड रहा है और ये अपना स्तर गिरा बैठे। इस उच्च कोटि के ब्राह्मण को डाकोत नाम की सज्ञा देकर इस कगार तक पहुंचा दिया। जबकि इसका यह डाकोत शब्द किसी भी धर्मशास्त्र में अंकित नही है। आपके, हमारे बुजुर्गों ने कभी इस ओर ध्यान नही दिया, ना इसका कोई विरोध किया। अगर किया होता तो आज समस्त भारतवर्ष के भार्गव–भार्गव एक होते। इसमें भी आपको एक–दूसरे के समकक्ष अच्छे से अच्छे शिक्षित, जोडीदार, अच्छे परिवार के रिश्ते मिल सकते हैं। सामाजिक सम्मेलनो मे समस्त भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण समाज के जाति बन्धुओं को एक ही स्थान पर सम्मिलित होकर इस सामाजिक समस्या का समाधान करना चाहिये।

भार्गव समाज की वर्तमान दशा पर प्रकाश डाले बिना यह इतिहास पूरा नही हो सकता। भारत की जनसंख्या के अनुपात मे भार्गव जाति समुद्र में एक बूंद के बराबर है और इसकी सख्या संभवत पच्चीस हजार से अधिक नहीं है। कारण स्पष्ट है क्योकि वंश–परम्परा के अन्तर्गत आपने शादिया नहीं की। अन्य जातियो मे विवाह–शादिया करने का ही तो यह प्रतिफल है। इससे वंश कटता गया, संख्या घटती गई। आप उसी स्थान पर रहे जहा पहले थे। हा, शिक्षा के क्षेत्र मे आपने उन्नति की है। पर अपने समाज को, वश को काटकर, अपनो से दूर रहकर, सामाजिक क्षेत्र मे आपने जो किया, अच्छा नही किया। यह मै नही कहता, पिताश्री भृगुजी कहते है।

पिछडे हुए भार्गव समाज की कुरीतियो पर कुछ ध्यान देकर विचार करना चाहिए। पिछडे को आगे लाना है। इस समाज मे शिक्षित वर्ग का बहुत अभाव है। इसकी परिपूर्ति करना सबका कर्तव्य बनता है और यह हमारा पहला कदम होगा। शिक्षा के प्रति कोई ऐसा रूझान पैदा किया जावे ताकि वो लोग इसकी गरिमा को समझ सके और कोई ऐसा कारगर कदम उठाया

(भृगु) "रचिता भृगु संहिता

च्यवन वज्र शीर्ष शुचि वरेण्य विभुसबन कवि (शुक्र)

भृगु–दिव्या पत्नी का वंश वृक्ष

कवि (शुक्र उसगश उपेना) रुदेव पुत्र

शड (षण्ड शकराधार्य) | त्वष्टा त्रिशिरा | मर्क विश्वरूप | वरुत्री तीन पुत्र रजन/प्रथमरूप/वृद्ध गिरा

शडिल्य (रचना शाडिल्य स्मृति गंथ) (कवि पुत्री

डामेरा चार्य (डक्कमुनि) (रचना डामर सहित गथ) देवयानि पति (पति ययाति)

डिडिम | दूरितिष्य | प्रतिष्य | सुषेण | शव्य

रचिता (सुषेण सागर गथ) रचिता (शल्य तत्र गथ)

भृगु पुलोमा (पत्नी) का वंश वृक्ष

च्यवन

अप्नवान | प्रमति | दधीच

ओर्व (ऋचिक) | रुरू | सारस्वत पिप्पलाद

जम दग्नि आदि सौ पुत्र | शुनक (शोनक)

परशुराम एवं चार पुत्र

भृगु–ख्याति (पत्नी का वंश वृक्ष)

धाता | विधाता | लक्ष्मी (पुत्री)

मृकडु | पाडु (प्राण) | (पत्नी श्री विष्णु भगवान)

मार्कण्डय | धुतिमान

वेदशिरा

मार्कण्डेय | उन्नत | स्वनवात
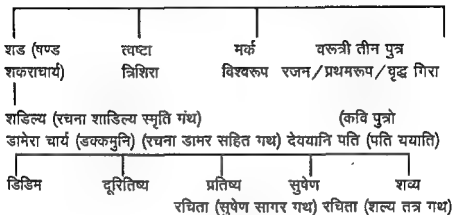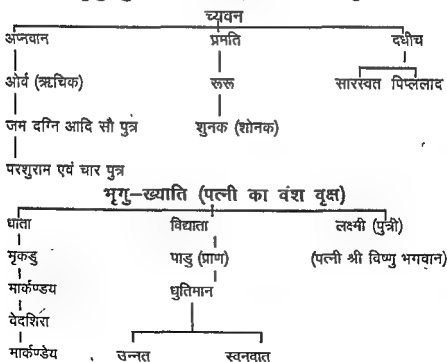
जावे जिससे वो अपना भविष्य सुधार सकें। आप समस्त भृगुवंशी भा
समाज के महानुभावों से मैं यही आशा करता हूँ कि अपनी रोटी तो स
सेकते हैं पर पराई रोटी सेकने का नाम ही परोपकार है। आगे आप की म
है।

एक विषय यह भी आता है अहम और अभिमान का। ए श्रेणी
अपने-आप को समझने वाले भृगुवंशी भार्गव भाई कहते हैं कि हमारा श
इनका क्या मुकाबला ? हम इस प्रपच में क्यों पडें ? हमे इनसे क्या लेना-देन
आपकी सोच ठीक हो सकती है पर मेरी नजर मे नहीं हो सकता है। मैं ग
हूं पर आप को आगाह कर देता हूं, सोचो कुछ और सोचो।

*लिखने को मेरे पास बहुत-कुछ है। खट्टे-मीठे अनुभवो को लिख
फिर कभी, और कभी।*

—गौरीशंकर भा

वंश परम्परा

प्रश्नकाल का एक उदाहरण

महाराजा दशरथ की तीन पत्नियो की संतान में किसी प्रकार
कोई भेद नहीं है तो महर्षि भृगु की तीनो पत्नियो की संतान मे भेद कैसा

वश-परम्परा हमेशा से पिताश्री के नाम से ही चली आ रही है।
कोई नई बात नही है। इस विषय की जानकारी दुनिया को है।

यहां पर यह दरसाया गया है कि महाराजा दशरथजी की ती
पत्नियो के नाम इस प्रकार हैं। (1) कौशल्या के श्रीराम (2) कैकई के श्रीभ
(3) सुमित्रा के श्रीलक्ष्मण और श्रीशत्रुघ्न हैं। इन भाइयो मे परम्परागत कि
प्रकार का कोई भेद नही दरसाया गया है तो भृगुजी की तीनो पत्नियो
सतान मे भेद कैसा ?

(1) महर्षि भृगु की पत्नी ख्याति (2) महर्षि भृगु की पत्नी पुलोमा (
महर्षि भृगु की पत्नी दिव्या। इन तीनो पत्नियो की संतान के नाम आगे दि
हुए हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वंश परम्परा के अन्तर्गत भृगुजी के व
मे तीनो पत्नियो की संतान ही भार्गव ब्राह्मण हैं और भार्गववंश भृगुजी व
ही उत्पन्न संतान है, जो परम्परागत चली आ रही है।

अपने मन से ही एक-दूसरे को भेदभाव की भावना से देखना औ
उचित-अनुचित की जानकारी के बगैर ही भेदभाव का पनपाना न्यायोचित
नहीं है।

कुछ करना है

सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिये कुछ करना है। राजस्थान मे कुल 32 जिले एवं 6 सभाग है।

प्रत्येक डिवीजन की कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय डिवीजन मे होगा।

जैसे : 1. जयपुर डिवीजन (कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय जयपुर)
जिला भरतपुर
जिला धौलपुर
जिला अलवर
जिला झुझुनूं
जिला सीकर
जिला दौसा
2. बीकानेर डिवीजन (कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय बीकानेर)
जिला चूरू
जिला श्रीगगानगर
जिला हनुमानगढ
3. जोधपुर डिवीजन (कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय जोधपुर)
जिला पाली
जिला बाडमेर
जिला जैसलमेर
जिला जालौर
जिला सिरोही
4. उदयपुर डिवीजन (कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय उदयपुर)
जिला चित्तौडगढ
जिला राजसमन्द
जिला डूंगरपुर
जिला बांसवाडा
5. अजमेर डिवीजन (कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय अजमेर)
जिला भीलवाडा
जिला टोक
जिला नागौर

6 कोटा डिवीजन *(कार्यसमिति का मुख्य कार्यालय कोटा)*
जिला सवाईमाधोपुर
जिला बूंदी
जिला झालावाड
जिला बारा
जिला करौली

जिस जिले मे सम्मेलन आयोजित होगा उसकी पूर्व सूचना जिले की कार्यसमिति की होगी तथा सम्मेलन के कार्यक्रम की सूचना 15 दिन पूर्व हर शहर एव गॉव भेजी जायेगी।

अत जिस जिले में सम्मेलन होगा उसकी व्यवस्था जिले की कार्यसमिति की होगी। यह सम्मेलन हर जिले में वार्षिक उत्सव पर्व की तरह मनायेगे। इन आयोजनो मे सामूहिक विवाह, परिचय सम्मेलन एवं कई प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाना चाहिये। अतः आप सभी जाति *बन्धुओ से मेरा अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या मे भाग लेकर* समय–समय पर होने वाले आयोजित समारोहो को सफल बनाने में अपना पूर्ण योगदान देवे ताकि आने वाले समय मे हमारे बच्चो का भविष्य उज्ज्वल हो।

इन्ही प्रयासों से एक सुन्दर, स्वच्छ और शक्तिशाली, शिक्षित समाज का निर्माण होगा।

— गौरीशकर भार्गव

आत्म–संकल्प

1 ईश्वर को सर्वव्यापी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन मे उतारे।
2. शरीर को भगवान का मन्दिर समझ कर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा शुद्ध विचार अपनाएं।
3 अपने को कुविचारों, दुर्भावनाओं से सदैव बचाये रखने के लिये स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था बनाये रखें।
4. इन्द्रिय–संयम, अर्थ–संयम एवं समय–संयम और विचार–संयम का सतत अभ्यास करे।
5. समाज को अपना अभिन्न अंग मानोगे और सभी के हितो को अपना हित समझोगे।
6. मर्यादाओं को पाले, वर्जनाओ से बचे, नागरिक कर्तव्यो का पालन करे और सामाजिक निष्ठावान बने रहे।

7. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का अभिन्न अंग मानें।
8. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करे।
9. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करें।
10. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओ, योग्यताओं एव विभूतियो को नहीं, उसके विचारों और सत्कर्मों को माने।
11. दूसरो के साथ वह व्यवहार न करें जो हमें अपने लिए पसन्द नही।
12. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देवे।
13. सज्जनों की संगति करें और अनीति से लोहा और नव सृजन की गतिविधियो में सदैव पूरी रुचि लेवें।
14 मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरो को श्रेष्ठ। बनायेगें युग बदलेगा, हम सुधरेगे तो युग सुधरेगा, इस तथ्य पर हमारा पूर्ण विश्वास है।

— गौरीशकर भार्गव

मंजिल

आओ चलें एक नई दिशा की ओर। हमारी मूल दिशाओ से अलग नहीं। मंजिल सब की एक है। पृथ्वी के गोल आकार मे घूम–फिर कर उसी स्थान पर आना होता है। अतः सामाजिक धरातल को एक जैसा रूप कैसे दिया जा सके, जरा सोचो।

1. समस्त भृगुवशी भार्गव बन्धुओ को एक ही नाम से जाना जाये।
2. अपने अलग–अलग नामों की संज्ञा न देकर समस्त भार्गव कहलाए।
3. भृगुवंश के झन्डे के नीचे आएं और यह संकल्प लें कि समस्त भारतीय भृगु ब्राह्मण एक है।
4. शिक्षा के महत्त्व को समझकर इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयास करें।
5. संगठन शक्ति का महत्त्व समझे, एकता बहुत बडी ताकत है।
6. आत्मविश्वासी एव संघर्षशील बने।

यही कुछ ऐसी बाते हैं जो समाज को नई दिशा और प्रगति की ओर ले जाने मे सहायक सिद्ध हो सकती है। भृगुवंश के शिक्षक वर्ग से मेरा यह कहना है कि गाँव–गॉव, शहर–शहर, ढाणी–ढाणी जाकर फैली डाकोत नाम की इस भ्रान्ति का पुरजोर विरोध करना, खण्डन करना है। शिक्षा की परिपूर्ति करने मे अपना तन–मन–धन का सहयोग देकर समाज को प्रगति की ओर

ले जाने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

जाति बन्धुओ, माताओं, बहनो से मेरा निवेदन है कि आप अपने बच्चो को स्कूल अवश्य भेजे ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके एवं अपना विकास कर सके और अपने जीवन को एक आदर्श रूप दे सके। यह मैं नही कहता, आज का युग कहता है। जीवन मे कुछ पाना है तो शिक्षित बनो।

मैंने पूरी जानकारी की है कि आपका यह डाकोत शब्द किसी धर्मशास्त्र मे अकित नहीं है। जैसे कि रामायण, महाभारत, गीता, श्रीमद्भागवत, गीता, चार वेद, 18 पुराण ग्रन्थो में इस नाम का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी इस डाकोत नाम की जड़े इतनी मजबूत और गहरी हो गई है कि इसकी तह तक पहुंचना इतना आसान काम नही है।

हमे दृढ निश्चयवान होकर प्रयत्न करना होगा, बहिष्कार करना होगा। हमारे पूर्वजो ने कभी इसका विरोध नही किया। यदि किया होता तो आज एक ब्राह्मण डाकोत नहीं होता।

शिक्षा व रहन–सहन, खान–पान के आधार पर हमारे समाज के दो भाग हो गये। लेकिन यह सही नहीं है क्योकि भाई ने भाई को काटने का प्रयास किया है। मगर पानी मे लाठी मारने से पानी के दो भाग नही होते। एक भाई अगर कमजोर है तो उसका साथ नहीं छोडा जाता। यह अनुचित होता है। अपितु उस भाई को साथ लेकर चलना चाहिये। उस भाई का कर्तव्य बनता है और मर्यादा के अन्तर्गत यही सही माना गया है।

पेड का तना एक ही होता है पर शाखाएं अलग–अलग होती है। क्या वो उस पेड की संतान नहीं होतीं ? क्या उसके अलग–अलग फल लगते हैं ? वाह रे हमारे भृगुवंश समाज और ब्राह्मण भाइयो, आपका क्या कहना ! एक ब्राह्मण भाई को डाकोत बना दिया। आप कितने महान है। मैं आप को इसका पूर्ण विवरण दूंगा कि आखिरकार हम हैं कौन।

शनि भगवान की आराधना

यह भी सुना जाता है कि भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण शनि भगवान की पूजा–आराधना क्यों करते हैं। आदिकाल से ही ब्राह्मण भगवान की पूजा–अर्चना करता आया है। यह कोई नई बात नही है। अतः आप यह कहिये कि भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण नवग्रह का दान क्यो लेता है और देता है ? उत्तर स्पष्ट है कि आदिकाल से ही ब्राह्मण दान लेता है और देता आया है।

अतः भृगु ब्राह्मण ही अपनी आत्मबल शक्ति से लोगो को ग्रह–कष्टो से मुक्त करता है और यह ज्योतिष विद्या के पूर्ण ज्ञाता हैं और लोगो को जीवनदान देते हैं। इसी प्रकार ज्योतिष विद्या और ग्रहों पर अपने तपोबल से सिद्धिपूर्वक विजय प्राप्त करके प्राणिमात्र को ग्रह–कष्टो से मुक्ति दिलाने में सहायक बनें।

आज शनिग्रह व कुग्रह के दान लेने वाले ब्राह्मण को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उसका अनादर किया जाता है। मूर्ख प्राणी यह नहीं जानता कि किसका अनादर करता हूं। जिसने मुझे पाप (ग्रहों) से मुक्ति दिलाने मे मेरा सहायक बनकर एक डॉ. बनकर मेरा इलाज किया है वह तो एक महान शक्ति है। इसका आदर करना सीखो। कर्म जीवन कल्याण करो ऐसा करने से सभी पापों का विनाश होता है। ग्रह शान्त होते है, पितृ प्रसन्न होते हैं और सृष्टि का उद्धार होता है। यह मुनिवर कहते हैं, ईश्वर कहता है।

ईश्वर एक है। नाम अलग–अलग हैं। समस्त प्राणी मात्र को भगवान की पूजा–आराधना, मन्दिर पूजने का अधिकार होता है। ना कि जातीय आधार पर।

जाति पांति पूछे ना कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

विशेष समझाने की आवश्यकता नहीं है कि कुछ कमियां हमारे भृगु भाइयो में भी हैं। आपने कभी अपने अस्तित्व को नही पहचाना। भृगुवंश मे जन्मे पर शिक्षित न होकर अशिक्षित रहे। भृगुवश को लजाने का काम किया। इसीलिये तो आपके भाई भी भाई से कहते है कि आप हम में से नहीं हैं। क्योकि आपके कर्म ही ऐसे हैं। भाई को भाई कहते हुए भी शर्म महसूस करता है क्योकि सत्य बात छुपाई नही जाती।

अत. भाई–भाई मे भेदभाव का मूल कारण एक ही है। आपके आचरणों का, रहन–सहन, खान–पान, बोलचाल सब से बडा कारण है। भिक्षावृत्ति, मांगने एव अशिक्षा के इस भेद के कारण ही भाई को भी आप से घृणा और

ईर्ष्या है। मै यह भी कहना चाहूंगा कि आप भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण हो। अपने–आपको कभी मत छिपाओ। आप दृढतापूर्वक कहे कि हम भार्गव ब्राह्मण है। डर को अपने मन से बाहर निकाल फेको। गर्व से कहो– हम भार्गव हैं।

— गौरीशंकर भार्गव

पूर्वकाल, आज और कल

पूर्वकाल की संस्कृतिः–

पूर्वकाल में माता–पिता अपने बालक–बालिकाओ को पाठशाला, आश्रम अथवा गुरुकुल मे गुरुजन के पास विद्या–अध्ययन करने भेजते थे। उससे पहले अपने बालक–बालिकाओ को गुरुजन के प्रति आदर्श मार्गदर्शन देते थे। अपने सुसंस्कार, स्वच्छ वातावरण और प्रणाम करने की शिक्षा–दीक्षा माँ अपने बच्चों को दे देती थी। अपने बालक–बालिकाओं को इस प्रकार के सद्‌गुणो से तैयार कर गुरुजन के पास विद्या–अध्ययन करने भेजती थी।

बालक–बालिकाएं भी पाठशाला, आश्रम अथवा गुरुकुल मे प्रवेश करने से पूर्व अपने गुरुजनो को प्रणाम करते थे। अतः गुरुजन भी निस्वार्थ भाव से अपने शिष्यो को विद्या–अध्ययन कराते थे और अपनी संतान जैसा प्यार करते थे। पाठशाला, आश्रम एवं गुरुकुल से विद्या–अध्ययन करके बालक–बालिकाए अपने घर की ओर आते थे तो अपनो से बडो को और माता–पिता को प्रणाम करते थे। ऐसे संस्कारो मे पढ–लिख कर बडे हुए विद्यार्थी पूर्वकाल मे महापुरुषों के रूप मे अपना नाम सार्थक करते थे। अपने गुरुजन, माता–पिता का नाम ऊचाइयों की चोटी पर पहुँचा कर अपने कुल का, समाज का एव अपनी मातृभूमि, अपने देश का नाम संसार मे पूजित एवं कीर्तिमान बनाकर दिखाया करते थे।

यह थे हमारे पूर्वज महर्षि भृगुजी जिन्होंने एक महान ज्योतिषशास्त्र भृगुसंहिता ग्रन्थ की रचना की थी, जो आज विश्वविख्यात ग्रन्थ है।

आपके द्वारा रचित भृगुसहिता ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से लाखो ब्राह्मण भाई अपनी रोजी–रोटी कमाकर, अपना जीवनयापन करते है। ब्रह्मपुत्र भृगुजी ने इस प्रकार तपोबल सिद्धि से बहुत ऐसे कार्य किये और अपने पिताश्री का नाम रोशन किया।

अत. एक आप है कि इस ज्योतिषशास्त्र को एक व्यवसाय का रूप दे दिया और अपने कर्म–फर्ज को भूल गये। कभी यह नही सोचा कि आखिर हमारा भी कोई फर्ज बनता होगा। अपने पिताश्री के प्रति एक कदम तो हम

भी उनके पदचिह्नों पर चलकर दिखाएं। अपने कर्तव्य का पालन कर अपना दायित्व निभाएं। यह थी हमारे पूर्वकाल की संस्कृति।

एक उदाहरण और गुरुजन से विद्या ग्रहण करने की लालसा—

शुक्रः—हिम कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परम गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारत भार्गव प्रणमाम्यहम्।।

अंगिरा और भृगु दोनो ही ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं। दोनों [illegible] पुत्र हुए। इनमें से अंगिरा के पुत्र का नाम बृहस्पति (जीव) [illegible] पुत्र का नाम कवि (शुक्र) था। समय पर दोनों बालकों का [illegible] हुआ। अंगिरा और भृगु मे मैत्री थी। दोनों महर्षियों ने [illegible] दोनो मे से एक को इन दोनों बालको की शिक्षा का [illegible] जिससे दूसरे को आराधना का अवसर मिल जाय।

अच्छी बात है। अंगिरा ने कहा— मैं कवि को [illegible] ही पढ़ाऊंगा। वह मेरे पास सुखपूर्वक रहे।

गौतम के कहने से कवि ने गोतमी (गोदावरी) के तट पर आकर भगवान शिव का पूजन किया। उनकी स्तुति करने लगे। देव ! मैं बालक हूँ। आपके स्वरुप को या आपकी महिमा को जानता नही हूँ। गुरु ने मुझे त्याग दिया है, मैं असहाय हूँ। मेरा कोई सुहृद नही है। आप अनाथ–नाथ हैं, अशरण–शरण है, यह सुनकर आपकी शरण मे आया हूँ। विद्या के लिए मैने आपकी शरण ग्रहण की है। आप मुझ अबोध पर दया करें।

शुक्र की निश्छल एकान्तिक भक्ति से प्रसन्न होकर महेश्वर प्रकट हुए। बोले– 'वत्स ! तम्हारा कल्याण हो। तुम इच्छानुसार वरदान मांगो।'

अंजलि बाधकर साश्रुलोचन कवि ने कहा– 'ब्रह्मादिक ऋषियो को भी जो विद्या प्राप्त नही है, मै ऐसी विद्या की आप से याचना करता हूँ। आप ही मेरे गुरुदेव एव आराध्य हैं।,

भगवान शिव ने कवि को लौकिक एव वैदिक विद्याएं सभी प्रदान की। कवि ने पुन. अंजलि बॉधकर प्रार्थना की– 'विद्याओं और ज्ञान के भी साक्षात् स्वरूप परमाधिष्ठान प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे लिए शेष क्या रहता है ? फिर भी मैं मृत प्राणियो को सजीवित कर देने वाली विद्या चाहता हूँ . महेश्वर ने कवि को संजीवनी विद्या प्रदान की। इसे प्राप्त करके यह अपने पिताश्री भृगुजी के पास लौट आये।

ऐसी थी विद्या सीखने की लालसा जो हमारे पिताश्री शुक्राचार्यजी मे थी और आज वो आकाश मे शुक्र तारे के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके उदय होने से ही सारे मांगलिक कार्य शुभ माने जाते हैं। ऐसे महापुरुषो की संतान हैं आप। ईर्ष्या की भावना आदिकाल से ही चली आ रही है।

आजकल हमारे बीच एक नई संस्कृति ने जन्म लिया है :–

वह इस प्रकार से है। जैसे समय के अनुसार हाय ममा, हाय डेडी और हलो सर, स्टूडेण्ट, ओके सर, या सर, क्या कुछ रिडिंग किया ? यस सर, थेक्स आज के सर स्वार्थी, पैसे के लालची, अपने स्टूडेन्ट को सिर्फ किताबी ज्ञान कराकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। आदर्श भाव गुरुजन के छिप कर रह गये और गुरु महागुरु हो गये।

इनकी महानता देखिये। महानता में चेला गुरु से दो कदम आगे। महागुरु से शिक्षा प्रगति की में क्या–क्या सद्‌गुण सीखे। सदा झूठ बोलना चाहिये, गुटका खाना चाहिये, सिगरेट पीनी चाहिए, सिनेमा देखना चाहिए, गुरु व महागुरु दोनो साथ मिल–बैठ कर पीना–पिलाना चाहिए। आज के गुरु–चेले की यह मान्यता है।

यह उन बच्चो का दोष नही है। प्रथम गलती उन अभिभावको की है जो अपने अबोध बच्चों पर ध्यान नहीं देते। बच्चा पढता है या नहीं अथवा भटकता है या आवारागर्दी करता है तो अशिक्षित लोग अकसर इस ओर ध्यान देकर कहते हैं कि देखो पढ़ा–लिखा निठल्ला आवारागर्दी करता फिरता है। क्या खाक पढायें अपने बच्चों को, पढ–लिखकर बच्चा जाहिल बन जाता है। रूढिवादी लोग इस बात को बहुत जल्दी पकड लेते हैं। अतः आप अपने फर्ज को समझते हुए अपने बालकों–बालिकाओं को अनुशासित, सुसंस्कार, स्वच्छ वातावरण मे रहने की प्रेरणा दे, सत्य–आदर्श मार्ग पर चलने की शिक्षा दे ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके।

यह थी वर्तमान संस्कृति की एक झलक।

आइये, भविष्य की संस्कृति पर कुछ प्रकाश डालें :–

अब बदलते युग परिवेश में कुछ कठिनाइयो का सामना करना ही होगा।

आंख खुली वही सवेरा।

खैर अभी समय है, जागो।।

भूले–भटके लोग अब धीरे–धीरे वापिस अपनी पुरानी संस्कृति और सुसस्कार, स्वच्छ वातावरण की गरिमा को समझने के बाद वापिस अपने उसी स्थान की ओर प्रस्थान करने लगे हैं। युग बदलते समय का संकेत दे रहा है कि मनुष्य को अपनी गलतियों का एहसास होने लगता है तो इधर–उधर के थपेडे लगने का आभास होने लगता है तब उसकी कुंभकरणी नींद खुलती है तो यह सोचता है कि यह क्या हो गया और इधर–उधर बगलें झांकने लगता है। लेकिन इतने उदास मन और अधीर क्यो होते हो ?

आओ, सोच की दो बातों पर विचार करे– अतीत मे खोकर चिन्तन करे कि एक चींटी भी पर्वत को लांघ सकती है तो हम तो उन महापुरुषो की सन्तान हैं। इतने अडिग क्यों होते हो ? हिम्मत से प्रयत्नशील होकर कार्य करे, मंजिल अवश्य मिलेगी। कोई तो माँ जन्मदेगी महाभारत के भीष्म पितामह को, कोई तो होगा विदुर, कोई तो होगा परशुराम एवं सुषेण जो शल्य चिकित्सक बन कर इस समाज को कोढ रूपी कैंसर जैसी भयंकर कुरीतियों की इस बीमारी से उबार कर जीवनदान देगा। यह मेरा विश्वास है।

क्योकि हम तो खुद संजीवनी विद्या के ज्ञाता हैं। यह तो हमारे पूर्वजो का जन्मसिद्ध अधिकार है। हम इसको कोई भीख में नहीं लाये, यह तो अपने तपोबल की शक्ति से प्राप्त की है।

हम कोई थोपे हुए ब्राह्मण ऋषि नही है। हमने विद्या अध्ययन करके ज्ञान अर्जित किया है। हमारे पूर्वज ज्ञान के विपुल भण्डार थे। पूरा बखान करे तो एक बहुत बडा ग्रन्थ बन सकता है। हमारे बुजुर्गो मे तो वो शक्ति थी कि मरे हुए मुर्दो मे भी प्राण फूंक दिया करते थे।

कोई तो शिष्य जन्म लेगा जो अपने गुरुजन की आज्ञा का पालन कर अपनी गुरु दक्षिणा का मूल्यांकन करेगा। भृगु महापिता की गरिमा को समझ कर अपना कर्तव्य निभायेगा। कोई तो एक जन्म लेगा जो हमारे समाज को इस दलदल मे से निकालेगा। कोई तो माई का लाल इस पावन धरती पर जन्म लेगा, अवश्य लेगा, समय आ गया है। हम हमारा सख्याबल मजबूत बनाकर एक संगठित शक्ति का रस्सा तैयार करेंगे जिससे हम दलदल से उपर कर बाहर आयेंगे और एक नये समाज का निर्माण करेगे।

यह थी भविष्य की सस्कृति की एक झलक।

-- गौरीशकर भार्गव

क्रान्ति बिगुल

आइये एक इस प्रश्न का भी हल करे कि ब्राह्मण व डाकोत शब्द का सही रुपान्तर कर इसका बहिष्कार करे और यह प्रमाणित है कि आपका यह नाम किसी भी धर्मशास्त्र मे अंकित नही है। यह तो एक अशिक्षा का ही प्रतीक है। इसका विरोध आज तक नही होने के कारण ही आपका स्तर गिरा। अव समय आ गया है इस नाम की भ्रान्ति को मिटाने का। शहरों, गॉवो मे अपने सगठन की कार्य समितियों का गठन करके आह्वान किया जाय कि अपने स्तर पर हर शहर, गांव में संगठित होकर प्रचार–प्रसार और प्रभातफेरिया निकाल कर, अपने बैनर पर लिख कर हम आम शख्स को इस समाज के इस नाम की जानकारी से अवगत कराये कि हम एक उच्च कोटि के भृगुवशी भार्गव ब्राह्मण हैं। इस में कोई सदेह नही कि आप ब्राह्मण हो। इसके महत्त्व को समझ कर इसका विरोध करो। यह नाम स्वत ही आपके आगे से हट जायेगा। क्योकि इस विषय की जानकारी जनता को आज तक किसी ने नहीं कराई। अगर कराई होती तो आज आपका रूप कुछ और ही होता।

जनता आपको इसी नाम से जानती आई है। यह जानकारी उन्हे पहले कराई जाती तो शायद इस नाम से नहीं पुकारते। हम आज के बनाये हुए एवं थोपे हुए ब्राह्मण तो हैं नही। हम तो पूर्वकाल–कालान्तर से ही भृगुवंशी ब्राह्मण हैं। महर्षि भृगु के कुल की सतान होने के कारण ही हम भार्गव ब्राह्मण कहलाते हैं। यह भ्रमित नाम तो न जाने हमारे कुल के साथ कैसे जुड गया। हमने बडे–वडे ग्रन्थो मे, महाकाव्यों मे, पुराणो मे पूरी जानकारी की है पर (डाकोत) नाम का उल्लेख व लिखा हुआ कही भी नही मिला। अतः एक जानकारी से आपको अवगत कराना चाहूगा कि ब्रिटिश सरकार के समय 1932 मे यह फैसला दिया गया था कि यह जाति ब्राह्मण है, डाकोत नही शुद्ध ब्राह्मण है और गीताप्रेस गोरखपुर की नवग्रह नामक पुस्तक मे भी आपको ब्राह्मण नाम से ही सबोधित किया गया है। सभी प्रमाणित तथ्य प्राप्त करने के पश्चात आपके समक्ष इस नाम का विरोध करने का साहस किया है, हिम्मत की है।

हमारा यह नाम है ही नही तो हम इस नाम से क्यो जाने जाते हैं ? हम ब्राह्मण हैं, हमे आदरपूर्वक इस नाम से जानना चाहिए। हम उच्च कोटि के भार्गव ब्राह्मण है। हम ऋषिपुत्र हैं और हमारा वशधर भी भार्गव है। दान लेना व दान देना तो बाह्मण का कर्म है। क्योकि यह नाम तो अन्य भाइयो

का फैलाया हुआ है। यह ऊच–नीच इन ही की फैलाई हुई भ्रांति का प्रतिफल है और जनता को भ्रम में डालकर हमें बदनाम किया गया है। हमने विश्व स्तर पर भारतीय जनता को इस विषय की पूरी–पूरी जानकारी कराने का प्रयास किया है। अब हमे संगठित होकर इस का डट कर विरोध करना चाहिए।

हमारा अतीत क्या कहता है। महर्षि भृगुजी पिताश्री आप का न्याय चलता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश में कौन श्रेष्ठ है का निर्णायक आप ही को बनाया गया था और आपने न्याय करके उचित निर्णय दिया। इसलिये आपका न्याय चलता है।

श्री ब्रह्माजी का ब्रह्म शस्त्र चलता है।
श्री विष्णुजी का चक्र चलता है।
श्री महेश्वरजी का त्रिशूल चलता है।
श्री बलरामजी का हल चलता है।
श्री कृष्णजी की तीव्र बुद्धि चलती है।
श्री परशुरामजी का परशु चलता है।
श्री रामजी का धनुष–बाण चलता है।

सभी दिव्य ज्योति, महान शक्ति हैं। इन्हीं के द्वारा सारा संसार चलत है। आज जो प्राणी जीवन जीता है वो आप ही का दिया हुआ जीवन है फिर भी मूर्ख प्राणी नही समझता, अहम और अभिमान की दुनिया में खोय हुआ रहता है।

अत: हमे एक महत्त्वपूर्ण कार्य और करना होगा। हम अपने पिताश्री भृगुजी का एक सुन्दर–सा पोस्टर छपा कर उसमें भृगुवंश की उत्पत्ति की जानकारी वशवृक्ष कलेन्डर के नीचे लिखवाकर हर शहर–गांव मे इसका प्रचार व प्रसार करे जिससे जनता को वास्तविकता का विश्वास हो सके एवं आपकी सही पहचान को समझ सके। यह तब ही हो सकता है जब आप अपने–आप को पहचान सकोगे। ब्राह्मण हो, ब्राह्मण के रूप को जानो और विद्या अध्ययन करके अपने खोये हुए सम्मान–गौरव को प्राप्त करना है। यह पिताश्री महर्षि भृगुजी का कहना है अपनी निकम्मी सतान से।

अत आशा करता हू श्रीभगवान से, अपने पिताश्री भृगुजी से कि सद्‌बुद्धि दे अपनी सतान को, जो आप के नाम को फिर से पूजित करे इस जगत मे, ससार मे, ऐसा चमत्कार हो। ऐसा वरदान हो प्रभु ! आपके द्वार पर आया हूँ प्रार्थना लेकर। स्वीकार करो हे दीनबन्धु दीनानाथ !

— गौरीशकर भार्गव

हमारी प्रगति का आधार : संस्कार

मनुष्य की सबसे बड़ी और बहुमूल्य वस्तु उसका जीवन है। जब जीवन नष्ट होने की घडी आती है तो वह उसके बदले बडी से बडी वस्तु देने को तैयार हो जाता है। चाहे वह कैसी भी दीन दशा में हो परन्तु यदि मृत्यु का भय उसके सामने होता है तो वह उससे बचने का उपाय करता है। मनुष्य जीवन रक्षा के साथ–साथ सम्मान की गरिमा को भी बचाना चाहता ह। और इसी क्रीडा में जीवनलीला समाप्त हो जाती है। उस प्रतिष्ठा को बनाने मे वह जीवनपर्यन्त प्रयत्नशील रहता है। श्रेष्ठ और पवित्र जीवन जीना मानव का स्वाभाविक गुण है। इन्ही परम्पराओ की सम्पुष्टि के लिए अमृत (सत्य) तथा पारस (प्रेम) एवं कल्याण वृक्ष (न्यायालय) प्रतिपल प्रबल इच्छापूर्ति में लगा रहता है। पूर्वजों, ऋषियों, मनीषियों ने अपने चिरकालीन अनुभव के आधार पर ऐसे तत्त्वो का अस्तित्व पाया है।

जब मानव उस आशय पर कि मैं पवित्र अग्नि जैसा और निर्लिप्त आत्मा हूँ, इस गहन सत्य को स्वीकारते हुए अमरत्व के समीप पहुच जाता है तो उसका दृष्टिकोण अमर सिद्ध महात्माओ जैसा हो जाता है। मानव गीली मिट्टी के समान है जो संस्कारों द्वारा भला–बुरा बनाया जाता है। जन्म से सभी शूद्र और कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हैं। जो व्यक्ति अपने सम्बन्ध मे बार–बार बुरे विचार करेगा, हीनता और तुच्छता के भाव रखने का स्पष्ट फल यह होता है कि हमारे जीवन की अन्तःचेतना उसी ढांचे मे ढल जाती है और रक्त के साथ दौडने वाली विद्युत शक्ति में ऐसा प्रवाह उत्पन्न हो जाता है। अपने–आपका तिरस्कार करने वाले आत्महत्यारे अपना यह लोक भी बिगाडते हैं और परलोक भी। उनके उन्नति के स्रोत रुक जाते हैं। वे दीनता की सडी हुई कीचड मे कीडो की भांति कुलबुलाते रहते हैं और सदैव ही दु ख–दरिद्रता से घिरे होते है। उनका उद्धार दूसरे भी नही कर सकते। कृपा करके अन्य लोग उन्हे बाहर निकाल भी दें तो वे फिर उन्हीं संस्कारो की नाली में फिसल जायेंगे।

ठीक यही दशा हमारे समाज की भी हो रही है। ऐसा दृष्टिगोचर होता प्रतीत हो रहा है। बात बताने मे निपुण और कार्यकलाप नग्न ? जेसे हमारे कर्णधारों के हैं। कोई ठोस सुधारवादी खोई प्रतिष्ठा को बनाने के संकल्प की कार्यरूप मे प्रगति होते दिखाई नहीं देती। ईश्वर इन लोगो को सदबुद्धि प्रदान करें। अमृत, पारस, कल्पवृक्षो के अर्थ समझ कर उनके आधार पर समाज का पुनः पूर्वजो जैसा वर्चस्व एव सम्मान बना सके।

यदि हम ससार मे सम्मानपूर्वक जीना चाहते हैं तो आत्मा का आदर कर उसे परमात्मा से जोडकर चलना होगा। आत्मा को शुद्ध कर इस योग्य बनाना होगा कि परमात्मा हमे स्वीकार करे। जैसे एक शूद्र या म्लेच्छ का सम्बन्ध ब्राह्मण से नही होता उसी प्रकार आप परमात्मा को तब तक प्राप्त नही कर सकते जब तक आत्मा को परमात्मा के अनुकूल पवित्रा न बना लोगे। नीचता से ऊंचता की ओर, हीनता से महानता की ओर बढने का एकमात्र उपाय है आत्मा को ईश्वर का अंग समझते हुए अर्चना, दिनचर्या पावन बना कर परमात्मा की शरण मे जाकर प्रतिष्ठा रूपी अमृत का रसास्वादन करें। अपना श्रेष्ठ कार्य आडम्बर व अभिमानरहित हो, फिर ईश्वर के पवित्र अंश रूप मे जाने की याचना करे। जिस प्रकार राजा के पास जाने के लिए अच्छा आचरण एवं शिष्टता का वातावरण बनाना पडता है ठीक उसी प्रकार आत्मा को परमात्मा की शरण मे जाने के लिये श्रेष्ठ, ब्रह्म जैसे कार्य करने पडते हैं। आत्मा को ईश्वर से जोडने के लिये जिस प्रकार विद्युतीय प्रतिध्वनि पवित्रता का संचार कर वास्तव में मानवता का उदय करती है उसी प्रकार पारस रूप प्रेम को ईश्वर से जोड़ने हेतु शुभ संकल्पों का आश्रय लेना पडेगा। इससे आत्मा की अमरता के साथ तेजस्विता का प्रकाश भी मानव मे उत्पन्न होता है।

मनुष्य के जीवन को महत्त्वपूर्ण, सार्थक बनाने की अनुभूति संस्कार से ही उत्पन्न होती है। इसलिये हर व्यक्ति को सस्कारी बन कर, अपने कर्तव्य और मर्यादा को समझ कर जीवन को इस योग्य बनाने मे अपने–आपको ईश्वर के समर्पित कर अपने बहुमूल्य जीवन को सफल बनाने में सस्कार रूपी बीज को बोते हुए आगे बढाए जिससे समाज का विकास हो सके और हम अपने गौरव को प्राप्त करने मे सफल हो सके।

— गौरीशंकर भार्गव

अद्भुत ग्रंथ भृगु संहिता, रावण संहिता एवं नाड़ि ग्रंथ

भृगु संहिता काफी प्राचीन एवं प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसी प्रकार नाडि ग्रथ भी काफी प्राचीन एवं प्रसिद्ध ग्रथ है। मैने जो अनुभव में पाया, देखा, जानकारी की पर मैं लखनऊ में पं. परमेश्वर द्विवेदी, भृगु आश्रम, सरोजनी नायडू मार्ग लखनऊ गया। पंडितजी काफी वृद्ध हैं। मेरा आज से 15 वर्ष पूर्व उनसे संबंध आया था। मैंने उन्हे 15 वर्ष पूर्व एक देवी प्रतिमा मेरे बडे भाई साहब के हाथो भेट की थी। उसके बाद सन् 2000 मे मुझे काफी सकट आये तो मैं उनके पास भृगुसंहिता का फलादेश सुनने गया। अक्षरशः जो बाते उन्होने बताई, वे बिल्कुल सही थी। ज्योतिष और संस्कृत का उन्हे सच्चा ज्ञान है। काफी वृद्ध है, काफी व्यस्त है। बडे–बडे नेता लोग, विदेश से लोग उनकी सलाह लेने आते हैं। उसी प्रकार होशियारपुर मे भी भृगुसंहिता व नाडि ग्रंथ सुनने मे आया। पंडित ईश्वर के पास गया। उसने भी मेरी पत्नी का नाम, बच्चो का नाम, मेरी माता का नाम, मेरा व्यवसाय, रिश्ते, कहा नौकरी करता हू आदि बाते पूर्ण विवरण से पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। सुना है कश्मीर मे जम्मू मे सरकारी पुस्तकालय में भृगुसहिता का जूना ग्रथ है। बहुत–सारे लोग एव उनकी कुडलिया भी है।

मैं नाडि ग्रंथ एवं भृगुसंहिता जिन लोगो के पास हैं, उनके पते आपको दे रहा हूँ जिससे आप स्वयं ही जाकर अपना अनुभव खुद कर सकते हैं– (1) पडित परमेश्वर द्विवेदी, 29 सरोजनी नाईडू मार्ग, भृगु आश्रम, लखनऊ (उत्तरप्रदेश) (2) ईश्वर नाडी वाचक, ईश्वर नाडी ज्योतिष टेलीकॉम, सभागृह के पास, नागपुर गुस्वळिया, जिला पडरोना (उत्तरप्रदेश) (3) रावण सहिता बागीश्वर पाठ्यक्रम पो. गुस्वळिया, जिला पडरोना (उत्तरप्रदेश) (4) पं. ब्रह्मगोपाल भादूरी भृगुसहिता डी 43–23 रामपुर, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)। (5) पं रामानुज शर्मा सन ऑफ पं. जनार्दनदेव, भृगुसहिता देशराज भृगु मार्ग, 74 रेक मडी रोड होशियारपुर (पजाव) 146771। (6) महाशिव भृगुशास्त्री सुपुत्र वेदप्रकाश घर न 369 झालघर रोड, मौहल्ला गोकुल नगर, होशियारपुर (पजाब) (7) प. जनार्दन शास्त्री, भृगु शास्त्री, सिविल अस्पताल मु. के पीछे, होशियारपुर 146001। (8) थिरू के अरविद स्वामी अगस्तीयो नाडी 5/66 झगन कोईल स्ट्रीट, चैन्नई 600053 चैन्नई (9) महागणपति थुनाई ॐ नम शिवमयम, प्लाट नं. 319, फ्लेट न 401, रामकृष्ण टावर, डॉ. अम्बेडकर कोआ बैंक के पास, लक्ष्मी नगर, नागपुर–22 फोन नं. 247108। इस कडी से जुडता

एक और पता हम आपको बताते हैं। बीकानेर मे हमारे ही मौहल्ले निवासी श्री मधुसूदनजी पुरोहित एडवोकेट हाईकोर्ट जोधपुर। आप ही के पास भृगुसहिता है।

जब नाडी ग्रथ वाले के पास एवं भृगुसंहिता वाले ज्योतिष भाई गुरु भाइयों के पास बडे–बडे नेता देश–विदेश से पूछने आते हैं तो क्या इन ग्रथों का पता करके एवं प्राप्त करके जन–हितार्थ उसे प्रकाशित करवाकर ज्योतिषशास्त्र को सर्वोच्चशास्त्र के पद तक लाया जा सकता है। सारे संसार मे यह ग्रंथ प्रसिद्ध हो एवं इस पर संशोधनार्थ किया जावे। बडे–बडे अधिवेशन तिष्य के प्रचार प्रसार के लिये बडे–बडे अधिवेशन कर रहे हैं। देश–विदेश में भी ज्योतिष अधिवेशन कर रहे हैं। बडी–बडी पत्रिकाएं निकल रही हैं। ज्योतिष अधिवेशन कर रहे है। ज्योतिष विद्यालय भी खुल रहे हैं। परन्तु साथ–साथ उन से मेरी नम्र प्रार्थना है कि जिन लोगो के पास ये ग्रथ हैं उनका पता लगाकर उस पर शोधकार्य करके जन–हितार्थ प्रकाशित करना चाहिये।

कई ऐसी बाते होती हैं कि जो मनुष्य के लिये कीमती हैं। साथ–साथ राष्ट्र के लिये भी हितकारक होती हैं। यदि वास्तव मे ज्योतिष के उत्थान के लिये कुछ करना है तो इस ओर शोध और समय देकर ज्योतिष के हितार्थ अपनी सेवाएं देनी चाहिये।

प्रस्तुति

श्री ओमप्रकाशजी द्वारकादासजी परिमाल
नवग्रह मन्दिर तेलीपुरा
वैद्य पाडे के सामने, बैचलर रोड
वर्धा–442001
फोन न. 07152–41562

सासू माँ से साक्षर
नारी जाति के लिए प्रेरणा के प्रति हमें कुछ बताएं

मेरे भार्गव समाज की हमउम्र बडी व छोटी प्रिय बहनो एव बहुओ और बेटियो ! नारी जीवन महत्त्वपूर्ण संसार की एक बहुमूल्य, जीवन की प्रथम नीव है और इसके बगैर संसार नही चलता। ईश्वर ने नर व नारी के अटूट सम्बन्ध का एक जोडा बनाया है। संसार को चलाने के लिये ही ईश्वर ने इसकी रचना रची है। परम्परा के अन्तर्गत हम देखते आ रहे हैं कि नारी बिन पुरुष और पुरुष बिन नारी दोनों ही एक–दूसरे के बगैर अधूरे हैं।

ईश्वर ने भी अपने–अपने जोडे बना रखे है जैसे कि सृष्टि रचे तो ब्रह्माजी संग सरस्वतीजी, भगवान श्री विष्णुजी सग लक्ष्मीजी, भगवान शिवजी के सग पार्वतीजी, इसी प्रकार प्राणी मात्र मे नर–नारी के साथ–साथ पशु–पक्षियो के भी जोडे ईश्वर ने बनाये है।

ईश्वर ने संसार चलाने के लिये ये सभी चीजे अनुकूल बनाई हैं। ईश्वर की लीला अपरम्पार ही है, इसे कोई नहीं पहचान सका। अत. इसकी जानकारी प्राणीमात्र को होनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य अपनी बोलती भाषा मे एक–दूसरे की भाषा समझ कर बात करता है और पशु–पक्षी अपनी भाषा मे बात करते हैं जो हमारी भाषा से भिन्न है। ऐसा सुनने में आता है कि प्राचीन काल मे पशु–पक्षी भी अपनी तरह बोलते थे। यह भगवान की रचना थी।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हर नारी को अपने नारी धर्म के कर्तव्यपालन को समझ कर अपने परिवार, अपने समाज व अपने देश के लिये हर पल आगे आकर कार्य करना चाहिये। आज हमारे भार्गव समाज को होनहार, पढी–लिखी पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली नारियों की समय के अनुसार अति आवश्यकता है जो अपने बच्चो को, समाज को अनुशासित व आज्ञाकारी, सत्य बोलचाल और स्वच्छ वातावरण में सस्कारी बनने की प्रेरणा दे सकें जिससे वो अपना जीवन उज्ज्वल बना सकें और भविष्य मे कुछ कर दिखा सकें ऐसा विश्वास उनमे पैदा कर सके।

मैं इतना ही कहूंगी कि नारी अपने नारी तत्त्व की गरिमा व मर्यादा को समझे। नारी अपनी जाति का गौरवमय कीर्तिमान स्थान बनाने मे अपना पूर्णतया योगदान देती है। नारी जाति के सत्यत्त्व के रूप का एक उदाहरण आप को और बताना चाहूगी।

नारी का रूप कैसा हो

सामाजिक व अन्य सामाजिक मेरी बहनों ! नारी अपने कर्तव्यपालन से ही ऊपर उठकर अपने पतिव्रत धर्म के पालन को समझे तो सही अर्थ में नारी के सतीत्व की सही पहचान है। जैसे कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की धर्मपत्नी श्रीसीताजी ने अपने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए राजपाट, वैभव को त्यागकर अपने पति परमेश्वर श्रीराम के साथ वन में जाना ज्यादा पसन्द किया। वो नारी धर्म के सतीत्व को समझती थी।

इसी प्रकार इन से भी बढकर त्याग और तप की एक और मूरत है पति धर्म की। एक और देवी, वो है लक्ष्मणजी की पत्नी उर्मिला, जिसने पति वियोग मे 14 वर्ष एकान्तवास में रहकर काटे। सीताजी तो सदैव ही पति परमेश्वर श्रीराम के समीप रहती थी। पर पति वियोग में रहना कितना गम है। यह तो उर्मिला का त्याग ही बता सकता है। नारी के दर्द को नारी ही जान सकती है।

मेरी बहनो ! आप ही सीता हैं, आप ही उर्मिला हैं। जीवनरूपी संसार मे आई हैं तो आप भी इन ऊचाइयो को छू सकती हैं। अपने–आप मे दृढ विश्वास, आत्मबल हो तो इन ऊंचाइयो को छूआ जा सकता है जैसे हमारी भारत की नारियों ने कर दिखाया है। जैसे प्रेम–भक्ति में मीराबाई, संगीत मे रानी रूपवती, त्याग और बलिदान की मूरत पन्नाधाय, रणभूमि मे महारानी झांसी, रानी दुर्गावती, राजनीति मे हमारी पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी आदि–आदि।

त्याग ही जीवन को सार्थक बनाता है। नारी स्वभाव से सहनशील, स्नेहमयी, प्यार और प्रेम का सागर–सा वातावरण, मधुर वाणी ही नारी के सद्गुण होते है। इन गुणो के कारण ही नारी की पूजा की जाती है और उसे सम्मानित किया जाता है।

नारी ही शक्ति है, नारी ही प्रेममूरत है, नारी से ही संसार चलता है। नारी से ही परिवार बढता है।

मैं अपने भार्गव समाज की समस्त नारियो से पुन: अनरोध करती हू कि क्यो न हम अपने परिवार को, समाज को, देश को जाग्रत करने का संकल्प लेकर अपना कदम आगे बढायें। हमारी प्रौढ बहनो को सही दिशा, ज्ञान का मार्गदर्शन देकर समाज की कुरीतियों को दूर करने मे समाज के जाति बन्धुओ को अपना सहयोग दे, उनका हाथ बटाये। क्या आपका–हमारा यह कर्तव्य नहीं बनता ? हमारा भार्गव समाज भी उच्च श्रेणी मे आवे और हम गर्व महसूस

कर सके और सिर उठा कर चल सकें। तो प्रिय बहनो, हम एक साथ होकर नारी सतीत्व का कर्तव्यपालन करते हए अपने समाज के सभी वर्गो को साथ लेकर चलें और भार्गव समाज की प्रगति के बारे मे सोच कर अपना कदम आगे बढायें और यह प्रमाणित कर दिखाएं कि भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण समाज की नारी पिछडी हुई नही है।

एक खास बात और हमें ध्यान में रखकर चलना है, वो यह है कि स्नेह एवं प्रेम को ही अपने जीवन मे सर्वव्यापी मानकर चलना है। प्रेम में ही एक जीवन जीने का अलग अंदाज होता है। प्रेम, शान्ति से घर–परिवार को हमेशा सराबोर रखे। प्रेम ही जीवन का एक उत्साह व सुखमय आनन्द की अनुभूति का प्रतीक है। यह जीवन का बहुमूल्य सार है। प्रेम बिना कुछ नही है।

यह था मेरी सासूमां का साक्षात्कार, जिसकी मैने आपको प्रस्तुति दी है।

मेरी सासूमॉजी व मेरे ससुरजी मेरे जीवन के आदर्श है। मैं इस परिवार की बहू होना अपना सौभाग्य समझती हूँ। गर्व महसूस करती हूँ कि मै बहू हूँ पर रहती बेटी की तरह हूँ। मेरी सासूमॉजी का नाम श्रीमती गिन्नी देवी है और मेरे पिताश्री ससुरजी श्री गौरीशंकरजी हैं। हमारा भरा–पूरा परिवार है जिसके हम छोटे–बडे 21 सदस्य है। मेरे ससुरजी को पांच पुत्र, एक पुत्री, पांच पौत्र, दो पौत्री, दो नाती, एक दामादजी, तीन बहुए हैं। मेरी बडी जेठानी श्रीमती अनिताजी व छोटी जेठानी सुनीताजी और मैं पुष्पलता छोटी बहू हूँ। हम तीनो ही पढी–लिखी है। हमारा सारा परिवार पढा–लिखा शिक्षित परिवार है।

लिखने को तो बहुत–कुछ लिखना चाहती हूँ। लेकिन पुस्तक हमारे पिताश्री की लिखी होने के कारण आप पाठक महानुभाव यह नही समझ ले कि सारे अपनो को ही भर लिया, इसलिए उचित नहीं समझा और इसी आशा के अन्दाज मे कोई गलती हो तो छोटी समझकर माफ करना।

जय श्री महर्षि भृगुजी की

– श्रीमती पुष्पलता भार्गव, बीकानेर

समय की पुकार

हमारे भार्गव समाज के होनहार नौजवान युवाओ एवं युवतियो ! समय के साथ–साथ जागो और औरो को भी जगाओ। हमारे समाज के युवा–युवतिया आज भी समाज मे कुछ करने की निष्ठा रखते हैं, प्रयत्नशील होकर कार्य करना चाहते है।

परन्तु वो क्या देखते है कि हमारे समाज के लोग बाते तो बहुत बढ–चढ कर नैतिकता की, ऊचे–ऊंचे आदर्शो की करते हैं पर व्यावहारिकता के जीवन मे तो बुराई ही पनपती नजर आती है। यह प्राय· देखने को मिलता है कि सभी लोग अपने–अपने स्वार्थ में लगे रहते हैं। अगर कोई सामाजिक उत्थान की बात करता है तो उसे मूर्ख समझा जाता है, उसकी खिल्ली उडाई जाती है, लो यह समाज सुधारक आ गये अब समाज सुधर जायेगा। उनकी टाग खींचने मे कोई कसर नही छोडते। आप लोग सभी धन्यवाद के पात्र हैं। आपने बहुत ही महानता का कार्य किया है। समाज के उत्थान की बात करने वाले समाज के विद्रोही हैं। यह हमारे समाज के उन लोगो का कथन है जो प्रौढ है, रूढिवादी असमझता के शिकार हैं और अज्ञानी अथवा शिक्षाविहीन है।

अतः मैं आज के युवा एवं युवतियो से अनुरोध करता हूँ कि हमे इन रूढिवादी विचारों के पदचिह्नो पर नही चलना है। हमे एक नये समाज का निर्माण करना है। हमें प्रयत्नशील होकर आगे कदम बढाना है। हमे अपने विश्वास के साथ अपने कर्तव्य का पालन करते हुए यह दिखाना है कि ससार हमारा है, समाज हमारा है, इसे सही मार्गदर्शन, दिशाज्ञान का बोध कराना हम समस्त भृगुवंशी भार्गव समाज–जनों का फर्ज बनता है।

आज का युवा वर्ग समाज मे एक नया परिवर्तन, नया जोश, नई क्रान्ति चाहता है। एक नया इतिहास रचना चाहता है। हम ऐसी क्रान्ति चाहते हैं जिसमें जनहित हो। इतिहास साक्षी है कि क्रान्तियो के बहुत तरह के उदाहरण और उल्लेख मिलते है। परन्तु उन क्रान्तियो से संसार में कभी शान्ति और अमन–चैन नहीं हुआ, उनसे मनुष्य का ही पतन ही हुआ है। राजनीतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक जागृति चाहे हुई हो लेकिन उनसे इन्सान की इन्सानियत नही जागी। उन सब क्रान्तियो के बावजूद भी मनुष्य मे अभी देवत्व सुषुप्त है। हर व्यक्ति मे अच्छाई का जो बीज है वह अभी समाज मे

अंकुरित नहीं हुआ है। बल्कि आज हम देखते हैं कि प्रगति करते–करते आज मानव विश्व संहारक अस्त्रों का निर्माण कर अपने ही हाथों अपनी हत्या कर रहा है।

आज यही हाल हमारे भार्गव समाज का है जो अपनी रूढिवादी कुरीतियों, बुराइयों को पनपाकर अपने समाज की हत्या अपने ही हाथो से कर रहा है। ऐसी क्रान्ति का दिन–प्रतिदिन शिकार होता जा रहा है जो बुराइयो से पनपती है। वह मानव मुरदा है जो निराश होकर हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाता है। वह कायर है जो परिस्थितियो का सामना करने के बजाय कायरो की भांति पीठ दिखाकर भाग जाता है।

मैं अपने भार्गव समाज के नौजवान युवाओ एवं युवतियों का एक बार फिर से आह्वन करता हूं कि आप आने वाले कल के उदीयमान उत्सव, अमिट उमंग के धनी हो। हमारा आज का युवा ही समाज का आशादीप है, जो ज्योति को दिखाने वाला एक उज्ज्वल तारा है, जो आकाश मे ध्रुव की तरह चमकता है। इसी आशा के साथ कई सालों के बाद युवा एव युवतियो जागो और औरों को भी जगाओ। अपने समाज का एक उच्च स्तर बनाओ। समाज के ढांचे को बदलने की जो भावना, शुभ इच्छा आपने मन मे बनाई है और समाज के इस रूढिवादी ढाचे को बदलने का जो संकल्प लिया है यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कदम है। आपने एक नया दौर लाने की तमन्ना अपने मन मे जाग्रत की है यह आप का पहला विजयकदम है। इसमे आप अडिग रहना, आप के सामने बहुत–सी कठिनाइयां आयेंगी व रूढिवादी प्रश्न आपके सामने आयेगे। अपने–आप को हताश नहीं होने देना, हिम्मत करके इनका मुकाबला करना।

1 इस शुभ संकल्प को पूरा कैसे करे ?

2. क्या नये विधि–विधान से यह समाज बदलेगा ?

3 क्या सामाजिक नियमो को बढावा अथवा कडा करने से ?

4. राजनीतिक और राजनीतिक दल बदलने से ?

5. अक्रोश भडकाने या नारे लगाने से ?

6. यथा संसार से ?

7. कुनीतिक कार्यो को अपनाने से, अपने क्रोध को दर्शाने से क्या यह समाज सुखमय बनेगा ? नही।

कानून और डन्डे से किसी भी समाज को बदला नहीं जा सकता। आक्रोश और क्रोध से कभी भी बिगडे कार्य नहीं सुधर सकते। विध्वंसात्मक

कार्यों से विध्वस ही होता है। राजनीतिक नेता या दल बदलने से देश के लोगों की वृत्ति और प्रवृत्ति नही बदली जाती।

हमे एक सशक्त क्रान्ति की जरूरत है जो हर व्यक्ति के मन मे नैतिक मूल्य भर दे और हर मनुष्य मे इंसानियत को जगा दे और हर विकृत मन में भलाई उत्पन्न कर दे। युवा एव युवतियो ! जागो और जगाओ ऐसी क्रान्ति लाने के लिये। हर मोरचे पर अपने सामाजिक जाति बन्धुओ को, माताओ और बहनो–भाइयो को, इस ओर लाने के लिये प्रेरित करके इस सामाजिक क्रान्ति मे अपने साथ लाकर शामिल करे।

समस्त भृगुवशी भार्गव ब्राह्मण एक होकर इस समाज मे पनप रही बुराइयो, कुरीतियो को मूल जड से उखाड दो।

हम आशावादी है, हमें अपने युवा वर्ग पर गर्व हे और हमारे युवा एव युवतिया ही इस सघर्ष मे आगे आकर इस समाज की बुराइयो को मिटाने में सहायक बनेगे।

अगर आप नही मिटा पाये तो और कौन मिटा पायेगा ? जो छोटे बच्चे है वो अभी समाज को बदलने मे असमर्थ हैं, अनभिज्ञ है। उनके प्रति व बुजुर्गो के प्रति आप जैसे युवा एव युवतियो का ही दायित्व बनता है कि आगे आये और अपने माता–पिता एवं समाज के बडे–बुजुर्गों का आशीर्वाद लेकर उनके सपनो को साकार करने मे अपना तन–मन–धन सब–कुछ लगाकर पूरा करे। आने वाले समय मे आपके बच्चो को एक स्वच्छ समाज मिल सके और उन्हे तो इस समाज की बुराइयो की लडाई नही लडनी पडे।

अत. मै आपको वृद्धजनो की भावना से अवगत कराना चाहूंगा। जो अतिवृद्ध है उनकी तो अपनी शारीरिक शक्ति भी कमजोर होती जा रही है। पर स्वयं उनके मन मे आज भी यह जोश है, उमग है, शुभ चाह है कि हमारा समाज भी स्वच्छ और अच्छा बने। आज भी उनके मन मे ऐसे विचार बार–बार उठते है। मैं उनकी इस भावना की कद्र करता हूँ।

क्या हमारे भार्गव समाज के होनहार नौजवान युवा एवं युवतियो को अपने कर्तव्यपालन करने मे नया जोश नही आयेगा ?

क्या आपका खून तो वैसा नही है जैसे कालान्तर से देखता आ रहा हूँ ? शायद अब ऐसा नही होगा।

आइये हम महर्षि भृगु की संतान, आज समस्त भार्गव ब्राह्मण बन्धु अपने हाथ मे तुलछी व गंगाजल लेकर यह प्रतिज्ञा करें कि जब तक हम अपना वो गौरव प्राप्त नहीं कर लेते जो हमने खोया था, तब तक चैन की नींद

नही सोयेगे। हम अपने समाज के लिये अपने–आपको न्यौछावर कर देगे। हम होगे कामयाव। इसी आशा के साथ कई सालो के बाद।

— गौरीशंकर भार्गव

जिन्दगी का सफर

मैं अपने भार्गव समाज के जाति बन्धुओं की जिन्दगी जीने का ढग देखता हूँ तो मेरे मन में एक कोलाहल–सा मच जाता है, भूचाल–सा आ जाता है। मैं देख रहा हूं जिन्दगी के इस दौर मे जीवन जीने का एक सफर।

जिन्दगी हर आदमी की दुश्वार हो गई है क्योकि आज अर्थ का जमाना है। पैसा है तो शोहरत है, इज्जत है, चाहे वो कैसे ही कमाया हुआ हो। पैसे के बलबूते पर सब–कुछ ढांपा जाता है। यह अर्थ का युग है। पर असत्य सत्य पर विजय नही कर सकता। वो अपने–आप मे भले हमे ना कहे पर उसकी आत्मा गवाही नही देती, जमीर नहीं कहता। दुनिया को दिखाने के लिए बहुत–कुछ हो सकता है पर खुद के लिए कुछ भी नहीं। अगर वह अपने गिरेबान मे झांककर देखता है तो उसे अन्दर ही अन्दर रोना आता है, घुटन–सी महसूस करता है। और हम क्या देखते है कि आज के इस युग मे जिन्दगी की दौड सभी दौडते है पर हाथ कुछ नही आता। सब–कुछ यही रह जाता है।

उदास चेहरे, मायूस आंखे, निराश मन। जीवन जीने का ढंग बदला हुआ–सा लगता है और जीवन जीने के लिए लोग लोभ, लालच और पैसे के लिए कोई अच्छा–बुरा काम करने को तैयार रहते है। उन्हे यह पता नही कि इसका परिणाम क्या होगा ? बस, पैसा आना चाहिये।

अगर मनुष्य अपनी जिन्दगी का सफर सुख–शान्ति से जीना चाहता है तो अपने–आप में संतोष की प्रवृत्ति को अपनाये। तो वह जिन्दगी के सफर मे सब–कुछ प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति जीवन मे कुछ करना चाहता है तो प्रयत्नशील होकर कार्य करे, ईश्वर पर भरोसा रखे, आशा ही जीवन ज्योति को सार्थक बनाती है।

पीछे पछताये क्या होत है।
जब चिड़ियां चुग गई खेत।।

समय रहते नही पहचान पाने से यही दशा होती है।

जिन्दगी की इस दौड मे एक कछुआ और एक खरगोश भी हैं। इन दोनो की दौड में कछुआ ही विजयी होता है क्योकि वह समय की गति को जानता है। दौड तो तेजी से जीती जाती है, अभिमान और घमंड से नही। आदमी को इस भ्रम मे नही रहना चाहिये। दौड जीतने के लिये संयम एवं धीरज की आवश्यकता होती है।

अभिमानी एव घमंडी लोग यह सोचते हैं कि मेरे पास पैसा है, मै सब–कुछ खरीद सकता हू। बाजार मे मिलने वाली वस्तु तो खरीद लेगा पर किसी इन्सान की इन्सानियत नही खरीद सकता। खुद्दारी बाजार मे नही मिलती। इतना कुछ समझने पर भी वह नादान मनुष्य पैसे का लालची, मोह–जाल की विकृतियो मे फंस जाता है और अकाल मौत का शिकार हो जाता है, नर्क मे धकेल दिया जाता है।

अत· ज्ञानी, मुनि, महापुरुषो ने अपने प्रवचन, उपदेशो मे सदैव मनुष्य को मोह–जाल की प्रवृत्ति त्यागकर सुखी–जीवन जीने के मार्गदर्शन का ज्ञान दिया है। इसलिये हर व्यक्ति को चाहिए कि शान्त प्रवृत्ति, परोपकारी, सादगी का जीवन जीना सीखे। यह जीवन का मोक्ष मार्ग है। यह एक रास्ता है जो जीवन को सफल बनाने के लिये सार्थक बनता है।

भार्गव समाज के धनी वर्ग के महानुभावों और महापुरुषो और जाति बन्धुओ, इस ओर ध्यान दे पैसा आपके साथ नही चलने का। अगर ससार में आये हैं तो कुछ परोपकार कर,'अपने जीवन को सार्थक कर सफल बनावे। दानदाता बनकर, अपने समाज के उत्थान मे भाग लेकर, सेवा का लाभ लेवें।

दानवीर कर्ण और दानवीर भामाशाह की तरह आप भी अपना नाम समाज में कीर्तिमान बनावे। आने वाले समय मे भार्गव समाज मे आपका नाम सम्मानपूर्वक लिया जायेगा। जैसे पिताश्री भृगुजी का लिया जाता है। वो अपनी तपस्या–निधि और विद्या के भंडार थे। उन्होने जग मे नाम अमर किया। आप उन्ही की सतान हैं। इतनी पीछे क्यो रहे यही जिन्दगी का सफर है। आगे आकर दिखा दें, हम मॉ दिव्या की संतान है। हम अपनी मॉ के दूध को लज्जित नहीं होने देगे, हम पूर्ण निष्ठा के साथ जीते–जी जिन्दगी का सफर पूरा करेगे।

— गौरीशंकर भार्गव

यज्ञ (हवन) से लाभ

यज्ञ की उपयोगिता का वर्णन किया जाता है कि प्राणी के जीवन हेतु वायु का शुद्ध होना अत्यन्त लाभकारी है। इस शुद्ध वायु के लिये यज्ञ (हवन) से वायु शुद्ध होती है। यही कारण था कि हमारी संस्कृति में, प्रकृति की शुद्धि मे हवन का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आज भले ही यह प्रचलन कम हो परन्तु पूर्ण रूप में लोप नहीं है। आधुनिक समय में पाश्चात्य देशों के लोग भी यज्ञ (हवन) के लाभ जानकर वायु शुद्धि के लिये इस पद्धति पर जोर दे रहे है । अतीत में हमारे देश के लोगो को अपने वेदों से विरासत में मिली यह श्रेष्ठ पद्धति अमूल्य निधि के रूप में रही है।

अतः यहां यज्ञों से लाभ का वर्णन भी उतना ही आवश्यक है जिससे यह प्रचलन पुनः उसी रूप में घर–घर प्रसारित हो, प्राणी के जीवन को श्रेष्ठ बनाने मे सहायक हो सके।

यज्ञ (हवन) के लाभ निम्न प्रकार वर्णित हैं–

1. हवन से वायु शुद्ध और सुगंधित होती है।

2. हवन से वर्षा होती है जिसके कारण अन्न, जल, जडी–बूटिया , पेड–पौधे तथा मवेशियो (पशुओ) के लिये चारा, घास–पात पैदा हाते है।

3. हवन करने वालों को दिल, दमा, कफ व मन्दग्नि का रोग होता ही नहीं।

4. हवन करने वाले के रुधिर मे संचालन होकर रुधिर शुद्ध होता है। उत्साह बढकर आलस्य दूर होता है एवं मन प्रसन्न होता है।

5. हवन दिल व मस्तिक का आहार, भोजन और सादगी का प्रतीक है।

6. यज्ञ की ऊर्जा (गर्मी) से अनेको सक्रामक रोगों के कीटाणु, कीट–पतगे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

7. हवन करने वालो के आचार–विचार शुद्ध हो जाते हैं। वे ब्रह्मचर्य का पालन करके अधिक सतानोत्पत्ति के असहनीय दुःख से छुटकारा पाकर सुख–शन्तिमय जीवन व्यतीत करने लगते हैं।

8. हवन में बैठने वालो का आपसी प्रेम व संगठन बढता है। बुरी आदतों अर्थात् असत्य से बचने–बचाने पर सत्य चर्चा सुनने को मिलती है।

9. हवन की ज्वाला को देखकर बहुत से हिसक जीव–जन्तु पास नहीं आते।

10 हवन से वायुशुद्धि के साथ ज्वाला से प्रगति पथ पर बढने की प्रेरणा मिलती है। ज्ञान प्रकाश की शिक्षा भी इसके द्वारा प्राप्त होती है।

इन उपरोक्त लाभो के सक्षिप्त सार के आधार पर हवन घर--घर होना अनिवार्य है। गृहणिया यदि इस कार्य मे सहयोग देकर अपने परिवार के आलसी पुरुपो को प्रात.काल उठकर हवन करने की प्रेरणा देकर सफलता को निश्चित कर सकती हैं। यह वह स्थान है जहां सत्य की चर्चा होती है। मनुष्य को दैनिक असत्यो से बचने के उपाय खोजने के अवसर ज्ञात होते हैं परन्तु मनुष्य कितना बुद्धिमान है कि वह जिस डाली पर बैठा उसी को काट रहा है। दुर्लभ मानव शरीर इसका आखिरी श्वास तक साथ दे, उसके निमित्त इसका कर्तव्य तथा व्यवहार हर मनुष्य को समझना चाहिये।

इसके प्रचलन से शरीर शुद्धि, मन की शुद्धि एवं वायु की शुद्धि और वात हारक शुद्धि प्राप्त होती है। इसके न करने से हमारा कितना पतन और कितना स्तर गिरा जा रहा है, सोचने--समझने की बात है। खोज करने का अवसर प्राप्त कर सुधारवादी स्थिति पाने के लिये हवन की अनिवार्यता पर बल देना चाहिए जिससे हम सुधरे और अन्यो का भी सुधार कर सके। आओ, घर--घर मे यज्ञ का प्रचलन कर अपने जीवनमूल्य को ऊचा उठा पुन वही स्थान प्राप्त करे जिसे हमारे पूर्वजो ने स्थापित किया। आशा है कि इसे गभीरतापूर्वक मनन करे और अपने विकारो का परित्याग कर मानव मात्र का कल्याण यज्ञ (हवन) से करे।

— जगदीशप्रसाद शर्मा (जिज्ञासु), दिल्ली

कन्याओं से नारी तक

एक नारी ही अपनी कन्या को एक नारी का अथवा एक बालक को एक पुरुष का रूप देती है। अत. नारी ही अपने शैक्षिक गुण, सुसंस्कार से अपने बच्चो को सजोती है। अगर वह खुद एक अच्छी पढी--लिखी है तो वह स्वच्छ वातावरण और आदर्श गुण सुसंस्कारों से अपने और अपने परिवार को उत्तम गुणो से परिपूर्ण कर सामाजिक स्तर की ओर बढेगी एव समाज के अन्य

परिवारो के बच्चो को भी एक अच्छा आदर्श मार्ग देकर एक आदर्श नागरिक एवं आदर्श नारी बनाने मे सहायक सिद्ध होगी।

यह तब ही हो सकता है जब हम अपनी कन्याओ मे शिक्षा का सचार करेगे। अत उत्तम शिक्षा सुसंस्कृत महिलाओ के गर्भ से ही निहित होती है। शिक्षा से ही मानवीय गुण उत्पन्न होते हैं। अतः एक कन्या के संस्कार सुधरने से हजारों कुलों का विकास होता है। यही शिक्षा का चरम उद्देश्य और सच्चा लक्ष्य है जिसमें प्राणी मात्र को मोक्ष प्राप्त होता है एव सुख शान्ति की जीवन में उपलब्धि होती है। केवल अक्षरज्ञान अथवा भाषा का बोध होना ही माना जाता है। शिक्षा से सस्कार निर्मित होते हैं और विसगतियो तथा विरोधाभासों के दोष दूर हो जाते है। शिक्षा के द्वारा प्रेम व सत्य, उपकार आदि गुणो का मार्ग प्रशस्त होता है व धैर्य, सहिष्णुता, मैत्री की उत्पत्ति होती है। इसके साथ ही शिक्षा से मानव का सर्वांगीण विकास एवं व्यक्तित्व की परिकल्पना को मूर्तरूप दिया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र भौतिक विकास नही बल्कि मानसिक भावात्मक शक्ति को उजागर करना है। इसी के द्वारा हमारे चारित्र का निर्माण भी किया जा सकता है।

जीवन में अनुशासन विकसित न होने से ही तनाव, अशान्ति, उद्दण्डता और अपराधों की प्रवृत्तियों का प्रसार हो रहा है। ज्ञान और आचरण की दूरी के दुष्परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे है। इस दूपित दूरी को दूर कर स्वस्थ शिक्षा पद्धति को आधार बना कर मानवीय गुणो का विकास किया जा सकता है। जिसकी नितान्त आवश्यकता है। इससे विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है जो समय की पुकार के अनुसार परम आवश्यक है। यदि इस ओर हमने ध्यान न दिया तो हम घोर अंधकार के गर्त मे पहुंच कर नाना प्रकार की व्याधियों के शिकार हो जायेगे। हमारी प्रगति यो ही व्यर्थ रहेगी और दैत्य प्रवृत्तियो का आधिपत्य होकर सारी भौतिक प्रगति का विनाश सम्भव है।

अतः सोच–समझ कर शिक्षा के अर्थ को जान कर उसे जीवन में अपना कर मानवता के गुणो को उत्पन्न करे। यही हमारे पूर्वजो का लक्ष्य था जिसके लिये उन्होंने महान तप कर संसार का उपकार किया। हम भी उनके अनुगामी बन शिक्षा मे संस्कारो को महत्त्व दें और सुमति बनाये।

जहं सुमति, तहं सम्पति नाना।
जहं कुमति तहं विपति निदाना।।

भाइयो हमारे ऋषि की संस्कारयुक्त पत्नियां दिव्या, ख्याति व पुलोमा

ने श्रेष्ठ मनीषी पुत्रों को जना व सस्कारो से अलंकृत कर हमे गौरव प्रद
किया है। यदि आज हम अपने आदर्शों को भूलेगे तो हमारी प्रतिष्ठा घटेग
अतः अब हमें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए जिससे हम भी अप
गौरव प्राप्त कर सकें।

— *जगदीशप्रसाद शर्मा (जिज्ञासु) दिल*

जाति के वीरों उठो, जागो :
हृदय की वेदना

इक हूक–सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है।
मैं रात को उठकर रोता हूँ, जब सारा आलम सोता है।।

मेरी जाति के होनहार प्यारे युवको एवं युवतियो! कुछ बाते जीवन ऐसी भी है जो पीडा से हृदय को द्रवीभूत कर देती हैं और शूल की भा वेदना से वक्ष को बेधती हुई प्रतिपल चुभन उत्पन्न करती रहती हैं। ये वेदन जो पत्थर को भी पिघाल देने वाली हैं, कठोर दिल को रूला देती हैं। जीव की राह मे कांटे भी आते है और उनको झेलना भी मानव का ही काम है लेकिन आपत्तियो का आना भी किसी सीमा तक ठीक होता है। जब ए आपत्ति के बाद दूसरी आपत्ति सिर पर मंडराने लगती है तब यही क जायेगा कि–

हजारों मंजिले होंगी, हजारों कारवां होंगे।
निगाहें हमको ढूंढेंगी, न जाने हम कहाँ होंगे।।

प्यारे साथियो ! आज जितने भी हमारे समाज के कर्णधार में मैदान उतर कर आये हैं और अपनी–अपनी जीवनलीलाओ का बखान करने मे तथ अपनी सता जमाने मे लग गये हैं उन सब की स्थिति दयनीय–सी दिख रह है। सत्य यह है कि ये सब अपने स्वार्थो के वशीभूत होकर चल रहे हैं। उ लोगो का न कोई लक्ष्य है और न ही कार्यशैली मे कोई सार्वभौम व्यापकत एवं एकाग्रता दीख रही है। आज समाज मे चेतना तो आई है परन्तु वास्तविक

र हमें संस्कारो मे विकार आया है। उसके सुधार के क्रियाकलापो में आशा
की प्रति दृष्टिगोचर होती नहीं दिख पड़ती। अतः हमारा कार्यक्रम तभी सार्थक होगा
जब हम पवित्र भावनाओं के साथ आदर्श फल दुखो का आभास करा रहा
है तो निश्चय ही हमें अशुभ कर्मों का परित्याग करना पडेगा। इसमें सत्य का
आश्रय लेना होगा क्योंकि सत्य ही ईश्वर है। फिर ईश्वर को साक्षी कर भय
रहित हो बुरे कर्मों अथवा बुरी संगति को तिलांजलि देनी होगी, चाहे मृत्यु
को ही चुनौती क्यों न देनी पडे ? हम वेदोक्त मार्ग व खान–पान, शुद्ध
कर्मकाण्ड को अपनाकर ही इस घोर अंधकार से मुक्ति पा सकते हैं और यही
हमारे बालकों के भविष्य का यथोचित मार्ग है अन्यथा बच्चों का भविष्य घोर
नरक बन जायेगा। अतः हम सब को इस पर सोच–विचार करना नितान्त
आवश्यक हो गया है। कहा भी है–

धर्मो यशो नयो दक्ष्य मनो हरि सुभाषितम्।
इत्यादि गुण रत्नानो संग्रही नावसीदति।।

नहि कल्याणकृत कश्चित दुर्गति ताव गच्छति। धर्म–यश नीतिदक्ष और
मोहर सुभाषित आदि गुण रत्नों का संग्रह करने वाला मनुष्य कभी दुःखी नहीं
होता। साथ ही कल्याणकारी की कभी दुर्गति नहीं होती। आज इस वैज्ञानिक
युग और शिक्षा के बढते व सुधरते स्तर के साथ सभी शिक्षित व सभ्य समाजों
के साथ हमे अपनी खोई सिद्धियों को सजोना होगा जिनके द्वारा हमारे
पूर्वजों ने ख्याति प्राप्त कर महान सफलता का स्वप्न साकार किया था। नये
पथ को बनाने मे युवाओ को प्रेरणा तथा सहयोग देकर पथ को सरल बनाना
पड़ेगा। यदि युवाशक्ति का भविष्य बिगाड़ तो हमारी सभी तपस्याओं का
फल नष्ट हो जायेगा। आइये सब मिल कर इस विकास में युवाशक्ति का
मनोबल बढायें और ब्राह्मण अस्तित्व की रक्षा करने में सक्षम बनें। अन्यथा
समय क्षमा नहीं करेगा आंधिया मगरूर दरख्तों को पटक जायेगी। शाखा
ही बचेगी जो लचक जायेगी। अन्त मां छूने का पता भी चल जायेगा जब
जमीं पैरो के नीचे से निकल जायेगी। रूप में पथ प्रदर्शक बन, नवयुवको
प्रतियों को इस शुद्ध धारा में परिणत कर के समाज में नई प्रेरणा का साहस
करें।

इसके लिये अथक परिश्रम, शुद्ध दिनचर्या, सतत प्रयास, कठोर परिश्रम
व आध्यात्मिक समीकरण का मार्मिक विचार प्रस्तुत करेंगे और युवा वर्ग को
आधुनिकता के साथ संस्कार शोधन तथा परिवर्तन के आधारभूत सिद्धान्तो

का प्रतिपादन करेगे तभी हम कर्म के गुण इस प्रकार कह सकेगे।

उठे कर्मों से जो ऊँचे, उनसे संसार झुकता है।
गिराने से किसी के वे, गिराये जा नहीं सकते।।
खुदी को कर बुलन्द इतना, हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से यह पूछे, बता तेरी रजा क्या है।।

युवा साथियो ! शक्तिदायिनी युवतियो ! आज बडा ही विचारणीय प्रश्न चिह्न हमारे सामने दृष्टिगोचर हो रहा है। यहा सबसे बडा आत्मगौरव, आत्मसम्मान, स्वाभिमान और जीवनस्तर का रूप अज्ञानता के कारण परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, आहार, व्यवहार में निरन्तर कुपोषण के कारण विडम्बना बन हमारे तेज को क्षीण कर रहीं है। इस पर हमे गहन विचार करना होगा क्योकि इससे हम कान्तिहीन होते चले आ रहे हैं तथा लज्जा के पास मे फस कर निष्क्रिय, प्रमादी बन आर्थिक प्रगति मे बहुत पिछड गये हैं सोचना होगा।

हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी ?
आओ, विचारें आज मिल, ये समस्याएं सभी।।

भृगु भाईयो। पहिचानो अपने अतीत के गौरव को, तुलना करो आज के अपने जीवन के मूल स्रोतो से, स्तर कहाँ तक बढा या गिरा ? हमारे पूर्वजो मे महर्षि भृगु (ज्ञानी), च्यवन (साधना), दधीचि (दानी, उपकारी), औंर्व (विनय) पिपलाद (साहसी), जमदग्नि (सौम्य), परशुराम (वीर, दानी), शुक्र व चाणक्य (निज, त्यागी), सुषेण (वैद्य, औषध), शल्य (चिकित्सा), शकराचार्य प्रचारक (विद्वान), मारकण्डे व शाडिल्य (स्मृति रचना) और भाई भतीयर (बलिदानी) इत्यादि गुणो से परिपूर्ण रहे है। इतना उज्ज्वल इतिहास साक्षी है। जिसका फिर वह क्यों न गर्व करता अपने मनीषी लोगो पर जो असभव को सम्भव कर दिखाते रहे हैं। हमे अपना स्वाध्याय स्तर सोचना होगा तथा संगतिकरण और संस्कार मे सुधार कर पूज्य विवेकानन्द के वाक्य की पुनरावृत्ति करनी होगी उठो, जागो और लक्ष्य तक पहुचो तब तक रूको नही "आप सभी गर्व से हाथ उठा कर कहो कि हमारे लिये कोई कार्य असम्भव नही, न ही निराशा का स्थान हमारे जीवन मे है फिर कह दो–

तुम क्या जानो तुम कायर हो, रणवीरों के हुंकारों को।
गर्ज-उठे तो कम्पित कर दे, गांव नगर मीनारों को।।

मुझे विश्वास है कि युवा वर्ग ओजस्विता, स्वाभिमान, आत्मगौरव

आध्यात्मिक चिन्तन, दिनचर्या उचित दिशा में प्रवाहित्त हो, शुद्ध शाकाहारी भोजन, शुद्ध भेषज, शुद्ध आराधना, शुद्ध शिक्षा एव संस्कारों का चयन करके श्रेष्ठ सजीवनी का रसास्वादन कर, अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर, अन्याय के समक्ष बिगुल बजाकर, आत्महीन की रूग्णता को समाप्त कर सकने मे सक्षम होगा। जरा सोचो, विचारो और उस पर चलो।
निम्न युक्ति के साथ त्राुटि क्षमा कर कहो।

यदि है प्यार काया तो परशुराम वीर ना बनना
समझ कर सोच कर आना कि जीवन भेट करना

– जगदीशप्रसाद शर्मा (जिज्ञासु) दिल्ली

हम यशस्वी बनें

उत्तमा आत्माना ख्याताः पितु ख्याताश्च मध्यमा।
मातुलेनाधमाः ख्याताः श्वसुरेणाधमाधमाः।।

जो अपने नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे उत्तम, जो पिता के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे मध्यम और मामा के नाम से प्रसिद्ध होते है वे अधम एव जो ससुर के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे अधमाधाम मनुष्य होते हैं। अतीत के अपने गौरव पूर्ण ऋषियो के इतिहास को दृष्टिपात करने पर हम जान पायेगे कि हमारे सभी वंशज अपने–अपने गुणो के आधार पर तप व त्याग से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपने पूर्वजो, ऋषि–मनीषियो की प्रतिष्ठा को वढाकर सहिताओ, पुराणो, नीति, चिकित्सा, शल्य व सजीवनी आदि विद्याओं को खोजकर मान–सम्मान का अस्तित्व प्राप्त किया। इसमें उन्होने निस्वार्थ होकर अपना लक्ष्य केवल परोपकार कर मान–प्रतिष्ठा को ही रखा। जैसे कि कहा भी है।

अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमा मानधनमिच्छन्ति मानोहि महतां धनम्।।

निम्न श्रेणी के मनुष्य केवल धन की, मध्यम श्रेणी के मनुष्य धन और मान दोनो, की श्रेष्ठ पुरुष मान की ही कामना करते है क्योकि मान ही श्रेष्ठ पुरुषो का धन (वैभव) है। सत्य यह है कि ब्रह्मापुत्र भृगु के वंश मे कोई भी ऋषि धन से जुडा नही रहा है। बल्कि समस्त पृथ्वी को इक्कीस बार अत्याचारी राजाओं से छीनकर दासता से मुक्त किया तथापि शुक्राचार्य ने भी वीर और दानी राजाओ को उत्पन्न कर पीडित मानवो को मुक्ति दिलाई। स्वयं के मान हेतु जप स्वाध्याय करने मे समय त्याग के साथ व्यतीत किया।

कुछ ने तो मानव सेवा मे अपने शरीर को अक्षत कर मानव सेवा मे समर्पि
कर कुल–कीर्ति बढाई। आज भी वंश में परम्परा के आधार पर धन के दा
नही अपितु धन को दास बनाने की ज्योतिष विद्या तथा बुद्धि–विवेक व
चमत्कार दृष्टिगोचर होता रहा है लेकिन कुछ लोग अविद्या, कुपोषण औ
अज्ञानता की कुरीतियो के कारण आत्महीन होकर अधोगति को प्राप्त ह
दु खों से सतप्त होकर घृणायुक्त कार्यों में लिप्त होकर दीन–हीन जीव
बिताने पर विवश हो रहे है। दोष किसका ? कहावत है– (चाणक्य)

परान्न, परवस्त्रां च–परशय्या परस्त्रियः।
परवेश्मनि वासश्च, शक्रस्यापि श्रियं हरेते।।

पर–अन्न (भोजन), पर–वस्त्र, शय्या और पराई स्त्री का सेवन तथ
पर– घर का वास इन्द्र की महिमा को भी नष्ट कर देता है। अब हमे स्व
को ही सोचना पडेगा कि इस प्रलोभन मे हमारा कितना और विनाश हु
? साथ ही चाणक्य महाराज का यह संकेत संजीवनी समान औषधि रूप
है। यदि अब समय के अनुसार हम नही चेते तो समय हमें कभी क्षमा नह
करेगा। महाराज मनु का कथन इस सम्बन्ध मे उचित ही है कि दान लेने क
पात्र न (अधिकारी) होकर भी बार–बार दान लेने से ब्रह्मतेज हीन (नष्ट) ह
जाता है चाहे वह कितने ही तपस्या मे अभ्यस्त क्यो न हो । अतः आधुनि
युग मे हमें अपने मान–प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उचित निर्णय लेने होगे औ
बुद्धि व विवेकपूर्ण कर्मो से वे ही कार्य करने होगे जिनसे हमारी कीर्ति क
आघात न पहुंचे जीवन की शोभा तो इसी मे निहित है–

भूयो याव धस्य कीर्तिस्ता बल्वर्गे स तिष्ठति।
अकीर्तिरेव नरको नान्योऽस्ति नरको दिवि।।

जब तक जिसकी कीर्ति संसार मे रहती है तब तक ही वह स्वर्ग
रहता है तथा दूसरा कोई नरक परलोक मे नही है। शुभ कर्मो का फल ह
मानव जीवन मे सुख (स्वर्ग) और अशुभ कर्मो का फल भोग नरक (दुष्कर्म
है। इसीलिये तो सुख का नाम स्वर्ग और दु.ख का नाम नरक है। इन युक्तिय
के साथ मैं अपने सभी युवा, युवतियो एव वृद्धो से निवेदन करना चाहूगा कि
कठोर सकल्पो के साथ आह्वान करे जिससे हमारे ब्राह्मण चिह्न सुरक्षित रहे
जिनकी आज पहिचान के लिये अति आवश्यकता है। वे हैं 1 चोटी 2 सन्दूल
3 जनेऊ 4 संध्यापूजा 5 शास्त्रा 6 शस्त्रा आप सब को समय की पुकार के
साथ सजग होना चाहिए क्योकि जो लोग कुपोषण, कुकर्मो, कुरीतियो में
व्यस्त हो मलेच्छो जैसा वातावरण बना रहे हैं। वे लोग दूषित वातावरण बाना

कर सारे समाज का अपमान से ग्रस्ति करने मे मगन हैं और रीतिरिवाजों तथा खानपान एवं रहनसहन की अपवित्रता मे ही पडे रहना चाहते हैं। अन्य लोगों को भी उसी पथ में फंसाकर बहुमत की ओर बढ रहे हैं। सुधारवादी लोग ही इन प्रपंचो के शिकार बन समाज की छवि धूलमिल करने मे अपने को समर्पित करते दिखाई देते हैं। अत अब हम सब इन के हथकन्डो को सूझबूझ के साथ संगठित होकर चुनौती दें और आह्वान करें कि ये विवश हो जाये अपनी निरंकुशता से जिससे हमारे समाज का अहित्त हो रहा है। इनका बहिष्कार करने का साहस हम तब ही कर पायेंगे जब हम स्वयं को सुधारे समाज के लोग पीड़ित हैं परन्तु इनका सामना कौन करे ? भाइयों! अधर्मियो के पैर सुदृढ नही होते। एक सूर्य अथवा चन्द्रमा अनेको तारो के प्रकाश को विलिन कर देता है। इसलिये आप सब सत्य पथ पर चलकर थोडी (अल्प) सख्या में भी इन्हे नतमस्तक करा सकते हो। शेरों की सतान कब तक गीदड बनी रहेगी ? *मिलकर इन मदारियो जो समाज को धोखा दे रहे हैं, मुकाबला* करे। विवेकानन्द की भांति नि स्वार्थ हुंका के साथ विधर्मी लोगो का पतन कर दो। अन्यथा

रहे यदि नाव पानी में तो किनारे पर लगा देगी।
रहे यदि नाव में पानी तो अधर में डुबा देगी।।
वही फल–फूल पाते सुरक्षित भूल करते हैं।
कर्म खोटे करे और सुख चाहे वे भूल करते हैं।।

इन सभाओं के क्रियाकलापों से सहस्रो वर्षों भी सुधार नहीं हो पाया क्योंकि इन्हे स्वयं पता नही हमें कहां जाना है ? क्या करना है ? क्या आवश्यकता है ? समाज को जिनकी सभा में बीस व्यक्ति अथवा किसी विशेष सम्मेलन में सौ की संख्या भी एकत्रित नही हो पाती और उसमें भी उत्पात होता है। भला आप ही सोचें कि इतने समय से सगठन का कौन सर्वे अथवा परगना, तहसील, जिला, कमिश्नरी हुआ है। क्या समाज का स्तर सुधारने के लिये पचास वर्षों मे संगठन का संविधान का निर्माण हुआ है ? इससे और लज्जा की बात क्या होगी।

इन सभाओं का प्रत्येक कार्यकर्ता स्वयं ही अपने कुकृत्यों (परस्परघृणा द्वेष) की ज्वाला मे आत्महीन किंकर्तव्यमूढ होता प्रतीत होता है। केवल पत्रिकाओ की होड में लगे है उनमे केवल अपनी जीवन गाथाओं तथा डिग्रियों की झलक के अतिरिक्त रोना धोना अबलाओ की भांति झलकता है। हा, कुछ सार की बातें सुई की नोंक के बराबर प्रकट होती है। अन्य समाज

की पत्रिकाओं से तुलना करो, क्या अतर नहीं पाता ? जब कि हमारे वश का स्तर व तप का स्तर ऊंचा है फिर भी नीच कर्मों का स्वागत करे, मुझे तो यह बात पचती नही है। यदि हमारा मनोबल ऊंचा रखना है तो योजनाबद्ध कार्यक्रम बना और समाजसेवा के कठोर सकल्प लेकर इतिहास की खोज करनी पडेगी। सस्कारो का सुधार करना होगा। हमारा ज्ञान, विद्या का स्तर इतना सबल होना चाहिये कि हम खुले में शास्त्रार्थ करने मे सक्षम बने। इसके लिये श्रेष्ठ साहित्य का ज्ञान, पठन–मनन करके तेजस्विता बनानी पडेगी और स्वाभिमान की रूपरेखा भी तभी बनेगी। हमें वही विद्या जाननी चाहिये जिससे समस्त विश्व के मानव का कल्याण हो। ब्राह्मण ही एकमात्र सबका कल्याण चाहता है। हमारा लक्ष्य (दृष्टिकोण) विश्वशाति एवं मैत्री कही प्रतीक होता है। ये तो–

स्वगृह पूज्यते मूर्खः स्वग्रामे पूज्यते प्रभु।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्रा पूज्यते।।

मूर्ख अपने घर मे मालिक, मुखिया अपने गांव में और राजा अपने राज्य मे ही आदर पाता है लेकिन विद्वान सब स्थान पर आदर पाता है। आप विश्व ख्याति के विद्वानों ऋषि–मनीषियो की सतान हो। तपस्वियो के तप की रचनाओ की आज भी कहानी प्रसिद्ध है। आपका मानव सभ्यता के विकास मे योगदान है। हर विषय को आपके पूर्वजो ने गहराई से देखा और उसका मार्गदर्शन किया। आप भूल गये पूर्वजो के इतिहास को, जो खोजना है और उसके अनुसार ही जीवनशैली को बनाना है। हमे निम्न गुणों का अभ्यास पुन करना पडेगा अन्यथा हमारी घोर दुर्दशा होगी।

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयान्ति प्रज्ञाच कौल्पंच दमः श्रुतच।
पराक्रमश्च बहुभाषिताच दान यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

(चाणक्य)

सद्‌बुद्धि, कुलीनता, जितेन्द्रियत्व, शास्त्रा–ज्ञान, पराक्रम, अल्प भाषण, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता ये आठ गुण मनुष्य को चमका देते है। अतः सरस्वती माता के पुजारियो, शिव भक्तों, भृगु पुत्रों अब तुम्हे सोचने पर विवश होना पडेगा क्योकि बहुत पतन हो चुका तुम्हारे प्रमादी जीवन से। अब जागो, निद्रा त्यागो और अपने लक्ष्य को पूरा कर सम्मान स्तर बनाओ।

– वन्दना शर्मा

89 वैस्ट ज्योति नगर, शादर दिल्ली

गायत्री मंत्र का महत्त्व

ओउम भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

ओउम यह परमेवर का निज नाम है। भूः जो प्राणों का भी प्राण, भुवः सब दुःखो से छुडानेहारा, स्वः स्वय सुखस्वरूप अपने उपासको को सब सुखो की प्राप्ति करानेहारा है। उस सवितुः सब जगत की उत्पत्ति करने वाले सूर्यादि प्रकाश के भी प्रकाशक समग्र ऐश्वर्य के दाता, देवस्य कामना करने योग्य भगः सब क्लेशों को भस्म करनेहारा पवित्रा शुद्ध स्वरूप तत उसको हम लोग धीमहि धारण करें। यः यह जो परमात्मा नः हमारी धिय बुद्धियो को उत्तम गुण स्वभाव में प्रचोदयात् प्रेरणा करे।

इसी प्रयोजन के लिए इस जगदीश्वर ही की स्तुति, प्रार्थनोपासना करना और इससे भिन्न किसी को उपास्य (इष्टदेव), उसके तुल्य, उससे अधिक न मानना चाहिये।

इस मंत्रा के अनेकों नामों के अर्थ, भावनापूर्वक जप की भारी महिमा वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रथ, मनु स्मृति, महाभारत तथा अन्य ग्रथो मे गाई गई है। गायत्री मंत्र गुरु मंत्र सावित्रों मत्र , वेद माता महामत्र इत्यादि अनेको नामों से पुकारा जाता है। यद्यपि गायत्री एक छन्द का नाम है, इसमे साधारणतया 3 पाद तथा 24 अक्षर होते हैं और उस छन्द के हजारो मत्र वेदों में पाये जाते है। तथापि बुद्धि विषयक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रार्थना के कारण यह गायत्री मंत्र के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। गायत्री शब्द का अर्थ है, 'गायन्तत्रोयेत इति गायत्री'।

जो इसका श्रद्धा, भक्ति और पूर्ण तन्मयता से पाठ तथा जप करता है, जैसे गायक किसी गीतों का, तो उसे परमेश्वर की रक्षण शक्ति का साक्षात्कार हो जाता है। इसका यह तात्पर्य नही कि केवल इस पाठ से रक्षा हो जाती है परन्तु इन शब्दो के मनन से निसन्देह निर्भयता, निश्चिन्तता, शान्ति और आनन्द प्राप्त होने लगते है। इस प्रकार जब सर्वव्यापक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान आनन्दमय, सकल दुःख विनाशक, सुख–शान्ति दाता, परमेश्वर को हम अपना सहायक (रक्षक) मानेगे तो क्या हमको सुरक्षा प्राप्त नहीं होगी। जबकि एक बलवान से मित्रता के कारण निर्बल मित्र की निर्भयता हो जाती है फिर भला यहा बलवान (ईश्वर) के आश्रय मे क्या संदेह की बात हो सकती है ? पहले

गुरु शिष्य को इसी मत्रा का वेदारम्भ संस्कार के समय उपदेश देते । इसीलिये इसे गुरु मंत्रा के नाम से पुकारा जाता है। इसे गुरु मंत्र मानने का दूसरा कारण है। मनुष्य जीवन मे बुद्धि का सबसे अधिक महत्त्व वडे-वडे विद्वानो को जब अभिमान हो जाता है तो उनका सारा गौरव नष्ट हो जाता है। विश्व के समस्त विज्ञान, शिल्प, कला, उद्योग, आविष्कार और राजनीति सब बुद्धि पर ही आधारित है। नीतिकारो ने ठीक ही कहा है—

बुद्धिर्यस्य बलं निर्बुद्धिस्तु कुतो बलम् ?

अर्थात् जिसमे बुद्धि है उसी मे है। निर्बुद्धि का बल किसी काम का नही होता। 'बुद्धिनाशात् प्रणश्यति' यह श्रीकृष्ण भगवान का कथन है कि बुद्धि के नाश से मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। इसलिये शुद्ध बुद्धि की प्रार्थना के लिये इसे गुरु मत्र कहा गया है। "सावित्री मंत्र" इस मत्र मे भगवान को सविता के नाम से भी पुकारा गया है। जिसका अर्थ है संसार का उत्पादक तथा सूर्यादि का प्रकाशक, सर्वप्रेरक। इसलिये उसे सावित्री मत्रा के नाम से भी पुकारा गया है। वेदमाताः

स्तुता माया वरदा वेदमाता
प्रचोदयान्तां यावमानी द्विजनाम।
आयुः प्राणं प्रजा पशु कीर्ति द्रिविणं,
ब्रह्मवर्च समहा दत्वा ब्रजत बहु लोकम।।

गायत्री को वेद माता के नाम से भी पुकारा गया है। उसके द्वारा भगवान की उपासना से दीर्घायु, प्राण शक्ति, उत्तम संतान, कीर्ति, धन, ब्रह्मज्ञान तथा अन्त मे परमानन्द रूप मोक्ष की प्राप्ति का निर्देश किया गया है। गायत्री मंत्र द्वारा जब उपासक समस्त ज्ञान के भण्डार परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करता है तो उसे सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। साधक की बुद्धि शुद्ध हो जाने से उसे यश-ऐश्वर्य-दीर्घायु क्रमश प्राप्त हो जाते हैं।

महामन्त्रः

हमारे महर्षियों, ऋषियों, मनीषियो ने कहा है कि इस मंत्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण मे श्रद्धा व योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे मंत्र में अथवा किसी मत्र के मंत्रो मे इतनी गहराई और सच्चाई नही है। हमारा पूर्व का वर्चस्व भी वेद ऋचाओ और इस मंत्र की सिद्धि मे निहित था। बन्धुओं! आओ हम भी उसी स्तर अथवा उपरोक्त कल्याणकारी तत्त्वो को प्राप्त कर जीवन को सुखी व समृद्ध बनाये।

धन्यवाद !

— जगदीशप्रसाद शर्मा 'जिज्ञासू', दिल्ली

सतयुग से पुरातन की जानकारी

भार्गव ब्राह्मण समाज सतयुग से भी पुरातन है।भार्गव ब्राह्मण महर्षि भृगु की संतान हैं। भार्गव मुनि असुर राजपुरोहित श्री शुक्राचार्य को कहते थे। श्री शुक्राचार्यजी नृसिंह अवतार एवं राजा बली के समकालीन थे। वे राजा बली के राजपुरोहित थे। श्री शुक्राचार्यजी के पुत्रा श्री शांडिल्य मुनि थे। श्री शांडिल्य के पुत्रा श्री डामराचार्य हुए, जिन्हे डक्क ऋषि कहा जाता था। श्री डक्क ऋषि की वंश परम्परा मे डक्क ब्राह्मणो की उत्पत्ति निर्विवाद एव शास्त्रसम्मत है। भार्गव वश मे श्री डक्क ऋषि के होने का प्रमाण नारद पचरात्रा भाग तृतीय अध्याय 27 के श्लोक मे है।

उपर्युक्त शास्त्रा प्रमाणो से सिद्ध होता है कि डक्क ब्राह्मण असुर ध र्म गुरु श्री शुक्राचार्य के वंशज हैं। दान देना व लेना, जप अनुष्ठान करना व कराना इनकी प्रमुख जीविका थी। "ग्रथ सभा मृति" पृष्ठ सख्या 10 पर उल्लेख है कि–

यद्दानं दीयते लोक कर ग्रह विशुद्धये।
तस्यधिकारे प्रोक्ता ब्राह्मण डक्क संज्ञका।।

यदि कोई पुरुष ग्रहपीडा के निवारणार्थ दान करता है तो उस दान को लेने का अधिकारी डक्क ब्राह्मण ही है। इस प्रकार हमारे पूर्वज तप तपस्या एवं यज्ञ एवं अनुष्ठान मे पारगत थे। अनधिकारी को दान देने का प्रतिफल क्या होता है ? यह ज्योतिष श्याम सग्रह पृष्ठ सख्या 42 श्लोक 18 मे लिखा है।

गृहथेन कत दान देवज्ञ बिन दीयेत।
ततो रोषातुर दुःख प्येता कुर्वति नान्यथा।।

सतयुग एवं त्रोता युग में ऋषि–मुनि ब्रह्मतेज से युक्त थे। प्राय. वे सात्विक दान ही लेते थे। अमत प्रतिग्रहों को वो कभी ना लेते थे तथा नौ ग्रहो का दान, सोना चांदी के पात्र, छाया दान, भैस, अश्व, काली गाय, बकरा, बकरी, तिल के तेल, अन्य क्रूर ग्रहों का दान लेने मे अन्य ब्राह्मण स्वय को सक्षम नही मानते थे। हमारे जाति इतिहास मे शनि का किचित् भी सम्बन्ध नहीं रहा है। शनि न तो हमारे देवता हैं, ना ही कुलगुरु। वास्तविकता तो यह है कि शनि जैसे क्रूर ग्रंह का दान ग्रहण करने की तपस्या द्वारा

शमित करने की क्षमता केवल हमारे पूर्वजो में थी। शनि की आराधना के कारण ही शनि ब्राह्मण कहलाने लगे।

धीरे–धीरे कलिकाल के प्रभाव से सभी ब्राह्मणों मे कर्मकाण्ड के प्रति शिथिलता आई इससे हमारा समाज भी न वच सका। क्रूर ग्रहों के दान लेने की प्रवृत्ति तो वनी रही किन्तु जप, तप, अनुष्ठान छूट गये। नतीजा यह हुआ कि क्रूर ग्रहों के दान से पाप प्रकट हुआ, बुद्धि कुण्ठित हो गई, विवेक तिरोहित हो गया। ब्राह्मण तत्त्व का स्वाभिमान जाता रहा। ग्रहों के कोप से विद्या–बल विवेक नष्ट हो गया। अब मिथ्याडंवर से एवं छल–कपट में लोगो को भ्रमित कर उदरपूर्ति करने हेतु उल्टा–सीधा कार्य करने लगे जिससे अन्य समाज में मान–सम्मान घटने लगा है। अज्ञानता ने आचरणहीनता को जन्म दिया अन्य नक्षत्रजीवी ब्राह्मणो ने व्यावसायिक प्रति दृंद्वितार्थ मनगढंत कहानिया रच अपमानित करना शुरू किया।

मेरे भृगुवशी भार्गव समाज के जाति वन्धुओ! कब तक अपमान को स्वीकार करते रहोगे? क्या आपने आगे आने की सौगन्ध खाई है, जो अपने गौरव के लिये कुछ नहीं करना चाहते? बडे शर्म की वात है।

— मनोजकुमार रावल भार्गव
गंगाशहर, वीकानेर

(यज्ञ कैसा यज्ञ है)

हमारी सामाजिक पत्रिका धरती धोरां री तथा भृगु मित्र संदेशवाहक मे समाचार पढा था। एक समाचार था नागल चौधरी का में दिनाक **25-6-90** को जाति यज्ञ। श्री सागरमल द्वारा श्री रामजी का खर्च। दूसरा समाचार नायणपूरी के ग्राम आधी मे चार दिशा सात वावनी यज्ञ। श्री मोहनलाल, रामगोपाल व बाबूलाल द्वारा स्व. पिताश्री कल्याणसहाजी की प्रथम पुण्य तिथि दिनांक **15-3-89** को कीर्तन तथा **16-3-89** को यज्ञ। ऐसा ही एक समाचार सावलपुरा मीणो का (जयपुर क्षेत्र) मे विक्रम सवत् **2045** अप्रेल **1988** के चैत्र शुक्ल पक्ष मे हनुमानप्रसाद रामनारायण द्वारा अपने पिताश्री स्व मागीलालजी का खर्च सुनने मे आया था। हरदास का वास (सीकर जिला) मे श्री सूरजभान जी जो पंजाव में गीदडवा मंडी मे रहते है उन्होने भी ऐसा ही यज्ञ किया था।

यज्ञ शब्द का रूप

यज्ञ शब्द यज धातु से उत्पन्न है यानी यजन। यजन का अर्थ कर्म से

हैं। कर्म से यज्ञ उत्पन्न हुआ। कर्म का अर्थ यहां मात्र सत्कर्म से है। कल्याणकारी जो कर्म है। सांसारिक कर्म, अकर्म, कुकर्म का अर्थ कुछ और होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया है।

अन्नाद्‌भवन्ति भूतानि
पर्जयन्यादन्नसम्भव
द्‌यज्ञ दाभवति पर्जन्यो
यज्ञः कर्मसमुद्‌भव

– गीता अध्याय 3 श्लोक 14

अर्थ– प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से होती है। अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ से होती है और यज्ञ की उत्पत्ति कर्म से होती है।

हमारे समाज में यज्ञ का रूप

किसी भी शब्द के तीन रूप होते है **1**. तत्सम **2**. तद्‌भव **3** अपभ्रश। यज्ञ शब्द तत्सम रूप में है। इसका दूसरा रूप तद्‌भव का प्रयोग रामचरित मानस मे तुलसीदासजी ने किया है। यथा–

सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा
पुत्राकाम सुभ जग्य कराया

बाल कांड 188

प्रात कहा मुनि सन रघुराई
निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई

बाल कांड 208

नाथ करइ रावन इक जागा
सिद्ध भएँ नहिं मरिहि अभागा

लंका कांड 84

जग्य या जग का रूप बदलते–बदलते हमारे समाज मे जिग अपभ्रश रूप मे सामने आया। पहले समय मे भी ऐसे जिग हमारे जाति बन्धु राजस्थान मे कर चुके है। वे जिग किस रूप मे हुवे, यह जानकारी तो लेखक के सामने नही आई परन्तु वे जिग तीर्थ पर या धाम पर देने का विवरण अवश्य सुनने मे आया है। जाति बन्धु उस जिग (यज्ञ) को स्वीकार करते और जिगकर्त्ता के उपाधि, पदवी देकर सम्मानित करते ऐसा ही सम्मान राजस्थान मे कुछ बन्धुओ को मिला हुआ है। जैसे चौधरी, कोठारी, जगदेव आदि–आदि जाति उत्सवो पर उन बिडद–विडदायता को विशेष सम्मान मिलता था। कालान्तर

मे यह सम्मान लुप्त होता नजर आ रहा है। उस जिग (जग्य यज्ञ) शब्द का हमारे जाति बन्धु जिस रूप में व्यवहार करते है इसको देखकर विद्वान लोगो को सोचने के लिये विवश होना पडता है। पुराना या नया खर्च (मोसर) या नुक्ता को यज्ञ शब्द से सम्बोधित करना ही अज्ञानता का परिचायक है। लेखक का उद्देश्य यह तो नहीं है कि किसी शब्द को मानने या न मानने के लिये किसी बन्धु को बाध्य करे परन्तु शब्द का सही रूप तो लोगो के सामने रखना होता ही है। जातिया या जातीतर लोग सभी जानते हैं कि यज्ञ हमारे देवताओं के लिये किया जाता है। जैसे ब्रह्म यज्ञ, इन्द्र यज्ञ, रूद्र यज्ञ, शतचण्डी यज्ञ या सहस्रचण्डी आदि–आदि। जिनमे सम्बन्धित देवता का वैदिक या पौराणिक मन्त्रों द्वारा उच्चारण सहित "स्वाहा" शक्ति के निमित आहुति दी जाती है। यज्ञ का आयोजन करने मे यज्ञाधिकरी देवताओ के पीठ (मण्डल) स्थापित किये जाते हैं।

यथा सर्वतोभव मण्डल, लघु सर्व तो भव क्षेत्र पाल मण्डल, योगिनी मडल, नवग्रह मंडल, द्वादश–त्रिघापक वेदी, वस्तु देवता वेदी, षोडशामातृका वेदी, सत धृतमातृका, पचोकार पीठ, पचतत्त्व पीठ, आदि। इन देवताओ का आह्वान, पूजन तथा बलिदान आदि। क्रिया के बाद पूयेहुति। ये सब यज्ञ के आवश्यक अग हैं। हमारे जाति–बन्धुओ यज्ञ की घोषणा करते हैं। वे कौन से देवता का मंत्र उच्चरित करते हैं, यह तो वे यज्ञ करने वाले ही जानते हैं।

हम जो जातीय यज्ञ का विज्ञापन छपवाते है या प्रचार–प्रसार करते है वह यज्ञ नही श्राद्ध कहलाता है जहा यज्ञ की शक्ति "स्वाहा" है वहीं श्राद्ध की शक्ति "स्वधा" कहलाती हैं। वेद मे स्पष्ट है– देवताओ के निमित्त अर्पित कर्म यज्ञ या हवन कहलाता है।

यज्ञाग्नि को "हव्यानल" तथा श्राद्धाग्नि को "व्यानल" कहते है। हव्य तथा कव्य दोनो ही आर्य सस्कृति के गृहस्थ कर्तव्य हैं। विवाह समय मे भी वर वामांग धारणार्थ वधू को आदेश देने पर वधू पति को वचनबद्ध करती है। देखिये विवाह पद्धति का पौराणिक सप्तपदो का दूसरा वचन.

हव्य प्रदार्नेभंशन पितरंच
कव्य प्रदानेर्यदि पूजये या।।
वामांग मायामी तदात्वदीय
वद् कन्या बचन द्वितीयम।।

अर्थ– कन्या वर से दूसरा वचन मांगती है कि आप हव्य प्रदान कर

देवताओ का तथा कव्य प्रदान करके पितरों का पूजन करे तो मैं आपका वामांग धारण करूं। इसके अलावा हमारे शास्त्र हमें दोनों कर्मों का भेद समझाने के लिये भी अलग–अलग विधि तय करते हैं। चतुर्थी लाल अपा–कर्म पद्धति में स्नानांगत पर्ण खंड में पृष्ठ संख्या 20–26 पर वेदादेश देखिये के तत. पूर्वभिमुख. सन्कुशव्य ग्रहीत्व सव्येन देव तीर्थेनोंकारपूर्वक देवभ्य साक्षत में केकम जली जेकेक्षिपेत"।

अर्थ–पूर्व की ओर मुंह कर तीन कुशा लेकर यज्ञोपवीत सव्य रखकर देवतीर्थ (अंगुलियों का अग्रभाग का नाम देवतीर्थ) ही से ऊंकार का उच्चारण पूर्वक चावलो से एक–एक अंजली की दे (देवतावों के लिये) 'अथोड सुखो निवित्यु ध्वजुय (कठी कृन्चा) प्रजापत्येन तीर्थन सथवेन जले न सना कदीन द्विस्तर्पयेत"।

अर्थात् उत्तराभिमुख, यज्ञोपवीत कंठी की तरह, प्रजापति तीर्थ से करतल से मणीबंध की ओर ऋषि तीर्थ या प्रजापति तीर्थ कहलाता है। जौ के साथ जल से दो अंजली सनकादिक ऋषियो को तर्पण करे।

तते अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः
पितृतीर्थेन कृष्णति लोदकः कव्य
बाडन लादि स्त्रि व्रस्तर्पयत

अर्थात् अपसव्य होकर, जनेऊ दाहिने कंधे पर आने को अपसव्य कहते हैं, दक्षिण में मुख करके पितृतीर्थ, अंगुष्ठ तथा तर्जनी अंगुली के माध्यम भाग को पितृतीर्थ कहते है, कोल दिल के काले तिल के साथ जल से पितरो के तिल अंजली देकर तर्पण करे।

इस प्रकार हमारे वेदशास्त्रा मे यज्ञ विद्या और श्राद्ध विद्या का अलग–अलग रूप व्यवहार में लाने का आदेश दिया है। फिर पितरो के नाम से किये गये कर्म को हम यज्ञ के नाम से पुकार कर जाति के समक्ष प्रचारित करते हैं। यह तो यज्ञ शब्द का उपहास करना है। कतिपय जाति बन्धु यज्ञ को अर्थ जाति का भोजन करवाना ही समझ कर चार दिशा सात बावनी का यज्ञ प्रचारित करना चाहेंते उनकी भी मनोकामना पूर्ण होनी ही चाहिए। इसका रास्ता बहुत आसान है। ऐसे बन्धु लोगों से, जो पुराने खर्च या नवीन खर्च (मोसर) करना चाहें तो वह भी करें तथा उसके उपरांत विधिवत् यज्ञ योजना भी कर सकते हैं। मोसर नुक्ता आदि कानूनन अनुचित हैं। इस रूढि से हमे निकलना चाहिए। इासकी जगह जाति विद्वानो को आमंत्रित करके गायत्री यज्ञ, महालक्ष्मी यज्ञ, शतचण्डी यज्ञ आदि करवाने वाले विद्वान मौजूद

जाति बन्धुओं से निवेदन

बहुत समय से श्रीमान् गौरीशंकरजी भार्गव 'भृगु अर्चना दर्पण' पुस्तक को जाति बन्धुओं के समक्ष प्रस्तुत करने के प्रयास मे सलग्न हैं। यह अतिप्रसन्नता का विषय है। ारी जाति बहुत वर्षों से कुम्भकरण की नीद मे सो रही है। आज हमारा ा स्वतंत्र है। देश के नागरिकों को सब प्रकार से उन्नतिशील बनाने के लिए मान अधिकार प्राप्त हैं। देश की बहुत–सी जातियां उन्नति के पथ पर कदम ाती जा रही हैं।

इस युग में सभी जातिया अपने को उन्नतिशील बनाने में प्रयत्नशील । हमारी ही भार्गव जाति अपनी भूतपूर्व गौरव गाथा को भूल चुकी है। उसने क्षावृत्ति को ही अपना मुख्य धन्धा बना लिया है। भारत की अस्सी प्रतिशत नता गावो में रहती है अतः गांवो मे हमारी जाति और भी अधिक पिछडी ई है। विद्यारूपी प्रकाश का लोप हो जाने पर इस जाति को अज्ञानान्धकार । चारो तरफ से घेर लिया है। हम यह भी भूल चुके है कि हमारे पूर्वज क्या े और हम आज क्या हो गये हैं। हमारे पूर्वज ज्योतिष विद्या के चमत्कारी वेद्वान थे। विद्या पढते थे विद्या पढ़ाते थे, यज्ञ करते थे। स्वर्ग तक मे उनका आदर–सम्मान था। जब भगवान विष्णुजी के वक्षस्थल पर अपने पैर से भृगुजी ने प्रहार किया तो भगवान विष्णुजी भी कहने लगे कि ऋषिवर ! आपको कहीं चोट तो नहीं लगी ?

जब हम अपने भूतकाल और वर्तमान काल की तुलना करते है तो हमे बड़ा दुःख होता है। हमारी इस अवनति से हमारे महान पूर्वजों को कितना दुःख हो रहा होगा। हम ब्राह्मण होकर ब्राह्मण के कर्मो से गिर गये है। अब भी समय की पुकार है, हमें अतीत की तरह फिर संसार मे पूर्वजों की महान् गौरव गाथा को दोहराना है। विद्या द्वारा अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर भगाना है। ज्योतिष शास्त्र का व अन्य विद्याओ का ज्ञान प्राप्त करके दुनिया को चमत्कार दिखाना है। अनुचित कर्मों को त्यागना है ताकि हम अपने पूर्वजो की कीर्ति को प्राप्त कर सके।

–वैद्य मागीलाल भार्गव,
भार्गव मौहल्ला, बीकानेर

नई दिशा में अग्रसर होता हमारा समाज

इसमे कोई दो राय नहीं है कि पिछले कुछ समय से हमारा समाज काफी एकजुट हुआ हे। वर्तमान मे समाज की दशा को पहले जैसी दृष्टि से देखना अनुपयुक्त है। हमारे समाज मे स्थापित वधुओं की कमी नही है। बन्धु क्या यह सोचने हेतु मजबूर नही है कि हमारा भी एक सशक्त सगठन होना चाहिये। हमारा सख्यावल अन्य ब्राह्मण वन्धुओ की तुलना मे सभी वर्ग के ब्राह्मणों से अधिक है फिर कुछ तो कारण है ही जिससे हम उपेक्षित हैं, हमारी सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति जैसी होनी चाहिए वैसी नही है। हमारा समुचित आधार भी होना आवश्यक है। इसके लिए हमें प्रयास करने होगे। हमे शिक्षा के महत्त्व को अंगीकार करना होगा। आप ब्राह्मणोचित्त कोई भी कार्य करे परन्तु शिक्षित होना आवश्यक है। हमे यह मानकर चलना होगा कि यदि हम सुसम्पन्न होगे तो समाज के दूसरे वर्ग स्वत ही अच्छी निगाह से देखेगे। हमे अपने प्रचलित अटपटे रीतिरिवाजो को छोडना होगा। खान–पान को सुधारना होगा। हमारे आचरण अनुकरणीय होगे तभी कोई हमारे अन्य बन्धुओ का अपमान करने का साहस नही कर सकेगा। हमे निर्वल न रहकर सशक्त होना पडेगा जो केवल सुशिक्षा से ही सम्भव है।

समाज को आगे बढाने मे हमारे स्वर्गीय बन्धुओं एव वर्तमान काल के महापुरुषो, पुरोधाओं का विशेष योगदान रहा है। हमारी सभाओ, महासभाओ, सम्मेलनो, विचारगोष्ठियो, पत्र–पत्रिकाओ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है। प्रगति की जिस मशाल को हमने जलाये रखा है वह अपना प्रकाश व्यापक करने की ओर अग्रसर है।

अपनी सामर्थ्य, अपनी सोच और श्रद्धा से जितनी भी समाजसेवा, जिस रूप मे भी की जाए, प्रशंसनीय है।

आज यह दीवार पर्दो की तरह हिलने लगी, शर्त लेकिन थी कि यह बुनियाद हिलनी ही चाहिये। मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही। हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिये। वह समय अधिक दूर नही है जब हमारा समाज भी नई करवट लेगा और हम देश के अन्य वर्ग के ब्राह्मण बन्धुओ के साथ प्रगतिशील समाज कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकेगे।

— रामसरन जोशी
मेरठ (उ.प्र)

समाज के विकास में नेतृत्व की भूमिका

मित्रो,

नेतृत्व वह गुण है जिसके द्वारा प्रत्येक कार्य सम्पादित करने के प्रयास को उचित दिशा और मार्गदर्शन मिलता है और जहां सही नेतृत्व का लाभ प्राप्त हो वहां बिना शक्ति और अर्थ के अपव्यय के वांछित परिणाम प्राप्त होते हैं। समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले व्यक्ति की सामाजिक विकास और उत्थान मे क्या भूमिका होनी चाहिए, इस पर विचार करना आवश्यक है। हमारी अपनी सामाजिक संस्था प्रभावी ढग से और सुचारु रूप से समाज सुधार और विकास के लक्ष्य प्राप्त कर सके, इसी सद्भावना से मैं कुछ सुधार प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

1. अखिल भारतीय भृगुवंशीय ब्राह्मण सेवा समिति का नेता ऐसा हो जो सेवा के दृढ और निष्ठा भाव को सर्वोपरि मानता हो।

2. आपसी सामंजस्य और सहिष्णुता को महत्त्व देता हो।

3. निस्वार्थ और निष्पक्ष एव पूर्वग्रहरहित सोच वाला हो।

4. प्रचार, लोलुपता से परे रहने वाला हो।

5 भृगुवशीय ब्राह्मण समाज मे व्याप्त कुरीतियो को योजनाबद्ध तरीके से दूर करने हेतु उचित दृष्टि रखता हो।

6. समाज के प्रबुद्ध वर्ग को एक मंच पर लाकर हमारी सामाजिक संस्था में आस्था और आत्मविश्वास का सृजन करने की क्षमता वाला हो।

7. अहकाररहित आचरण और गरिमापूर्ण व्यवहार द्वारा सदस्यो मे आपसी सौहार्द और आत्मीयता का वातावरण बनाने की क्षमता रखता हो।

8. सुनियोजित ढग से सदस्यों को समाज–सुधार और विकास के कार्यक्रमो मे सक्रिय भूमिका निभाने हेतु प्रेरित करने की योग्यता रखता हो। मर्यादित और अनुशासित ढग से सभाए, सम्मेलन और विकास के कार्यक्रम सचालित हो, यह सुनिश्चित करने की उसमे क्षमता हो।

8 समाज–सुधार के कार्यक्रम प्रेरक और रुचिकर बने तथा उनमे उपस्थिति अधिकतम हो। सदस्यो की क्षमताओ का अधिकतम उपयोग हो, इसके लिये सदस्यो से अतरंग सम्बन्ध विकसित करने की क्षमता वाला हो।

10. भृगुवशीय समाज के इतिहास की जानकारी और समाज सुधार के

कार्यक्रमो के आयोजन/सचालन विधि–विधान के अनुरूप ओर शालीन वातावरण मे हो, इसके लिए अनुभव रखता हो।

11. उसमे नियमित सभाएं आयोजित करने, खुले विचार–विमर्श का अवसर उपलब्ध कराने और प्रतिभा/योग्यता के अनुरूप सहभागिता के दायित्व सदस्यो को देने की योग्यता हो।

12. समस्याओ के निराकरण और गतिरोधों को दूर करने की क्षमता और सदस्यो से अपनी बात मनवाने और अपना अनुसरण करने हेतु प्रेरित करने की योग्यता रखता हो। मेरी यही मूल भावना है कि समाज को सही नेतृत्व मिले ओर समाज का भला हो।

— डॉ. आनन्द रावल
जयपुर

किसी ने दिये सुन्दर–सुन्दर उपहार,
किसी ने दिये आशीर्वाद
किसी की शुभकामनाएं हमारे साथ
किसी की आखे शामिल है हमारी आखो मे
हम आभारी है मन से, हृदय से, मस्तिष्क से, अपने पूरे अस्तित्व से।

शिक्षा के क्षेत्र में समाज को चुनौती

हमारे समाज की शिक्षा के क्षेत्र मे विडम्बना देखिये। सुश्री लता गौड (राज्य पद अधिकारी) जिसके लिए भार्गव समाज मे सुयोग्य वर नही मिला आपका स्वजाति प्रेम देखिये, आपने किसी अन्य जाति में शादी नही की। यह भृगुवशीय पुरुषो एव युवको के लिए बडे शर्म की बात है। एक तमाचा है

धरती धोरा री पत्रिका जो श्री मानव घासीलालजी द्वारा प्रकाशित की जाती है। बहन लता गौड (राज्य पदाधिकारी) का दर्दभरा लेख कुछ समय पहले पढने को मिला, पढकर बहुत खेद हुआ।

कविता रावल, बीकानेर ने आपके दर्दभरे पत्र को समझा और उसका उत्तर इस प्रकार दिया।

प्रिय

लता दीदी को आपकी छोटी बहन कुमारी कविता रावल का सादर प्रणाम, आपका दर्दभरा लेख धरती धोरा री पत्रिका मे पढा। पढकर आपके

दर्द को महासूस किया। आप बहुत निराश मन हो चुकी है। आपने भृगुवशीय समाज के मुंह पर जो तमाचा मारा है, मुझे इस बात की अति प्रसन्नता है। क्योकि भृगुवशीय भार्गव समाज के लिए जब तक जहरभरे शब्दो का प्रहार नहीं किया जाता है, तब तक इसमे चेतना नही आ सकती। मै भार्गव समाज के बुजुर्गों से प्रार्थना करती हूँ कि बहन लता गौड की चुनौती को समझने की कोशिश करें। आने वाले समय में हम उदीयमान, उठती हुई आपकी इन कलियो, आपकी बहनों, बेटियों को यह दिन न देखना पडे। हम जब पढ–लिखकर आगे आयेगी तो हम भी बहन लता की तरह उसी स्थान पर आकर समाज वालो के लिये एक चुनौती बन जायेगी। इसकी परिपूर्ति करने के लिए भार्गव समाज़ के हर परिवार से युवाओं को शिक्षा के क्षेत्र मे आगे आना चाहिए। हमारे समाज में लडकों के बनिस्पत लडकिया शिक्षा के क्षेत्र मे आगे हैं। बस, अभाव है तो पढे–लिखे लडकों का। यह क्षेत्र बिल्कुल खाली है। है भी तो गिनती के। जब तक आप इस योग्य नही बन पाओगे तब तक बहन लता की तरह सुयोग्य वर के लिये आपकी बहने–बेटिये यूं ही कोसती रहेगी।

वाह रे हमारे भार्गव समाज ! आप तो धन्य है। इस समाज को पता नही और कैसे–कैसे जलील होना पडेगा। हर क्षेत्र में पिछडा हुआ है। मैं इस समाज को एक रूढ़िवादी और पंगु समाज की सज्ञा देती हूँ। क्या इतना कहने पर भी आपको शर्म महसूस नही होती। मे कक्षा 9 की एक छात्रा, पढ़ने वाली बालिका आपसे इतना–कुछ कह गई और आपके खून मे उबाल नही आया ? आप के शरीर में खून है या पानी ? अगर खून है तो आइये, हम प्रतिज्ञा करें कि भविष्य में हमारी बहने और भाई एक चमकता सितारा बन कर चमके।

बहन लताजी ! आप निराश न होना। हम आपके साथ हैं, कधे से कधा मिलाकर तन–मन से आपका साथ देगी। भृगुवशीय भार्गव ब्राह्मण समाज मे आपके योग्य वर नही मिला, इस बात का बहुत दुःख व खेद है। हम ईश्वर से प्रार्थना करती है, आपको भार्गव समाज के परिवार में ही सुयोग्य वर मिले। भगवान से सदैव ही यह प्रार्थना करती रहती हूँ और हमारा पूरा परिवार आपके प्रति यही कामना करता है कि आपकी मनोकामना पूरी हो। धन्यवाद, शेष कुशलता के साथ।

— आपकी छोटी बहन कुमारी कविता रावल भार्गव
पुत्री श्री गौरीशंकरजी भार्गव (लेखक)

समाज और हम

आज के भारतवर्ष में लगभग सभी जातियो मे सगठन है तथा वे उन्नि
के शिखर पर है। किन्तु हमारा समाज अज्ञान एवं अशिक्षा के कारण पिछ
हुए समाजो की श्रेणी मे खडा हुआ है। इस पिछडेपन को दूर करने के लि
हमे शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक आदि स्तरों पर विकास कर
के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

इन्ही बिन्दुओं को ध्यान मे रखकर भृगुवशीय ब्राह्मण समाज के उत्था
हेतु जो प्रयास सेवा समिति द्वारा किये जा रहे है वे सराहनीय हैं व
उल्लेखनीय है। इस प्रयासो के द्वारा हमारा समाज सगठित होकर विभिन्न
क्षेत्रों मे उन्नति करेगा। ऐसी हमे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है। किन्तु यह
चहुमुखी विकास तभी सम्भव है जब हम निम्न सुझावो पर विचार कर उनक
क्रियान्वयन करेगे–

1. अपनी स्वयं की जाति में ऊंच–नीच का भेदभाव दूर करना

आज ससार मे जहां चारो ओर जात–पात, ऊच–नीच, अमीरी–गरीबी
का भेदभाव समाप्त–सा हो गया है वही हमारे समाज के लोग दो वर्गों मे
विभक्त है– बीसा व दस्सा। बीसा वर्ग ऊचा कहा जाता है तथा दस्सा वर्ग
नीचा होता है। यह ऊंच–नीच वाली भावना दूर कर हमे एकीकृत होना है।
जब हमारा समाज ही एक नहीं है तो हम क्या सामाजिक एकता कायम करेगे?
हमे आपस मे वैवाहिक सम्बन्धो एव खान–पान के प्रचलन को रोकने का दृढ़
सकल्प लेना होगा। तभी हमारे समाज का नाम आने वाले समय में विकसित
समाजों की श्रेणी मे होगा।

2. भिक्षावृत्ति पर रोक

हमारे समाज मे भिक्षावृत्ति करना पारम्परिक रिवाज–सा बन गया है।
कुछ परिवारो के लोग पढे–लिखे होने के बावजूद एक निश्चित दिन
भिक्षावृत्ति अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। हमे समाज द्वारा ऐसा नियम
पारित करना चाहिए जिससे भिक्षावृत्ति पर रोक लग सके तथा इस क्षेत्र मे
लगे बेरोजगार युवको को रोजगार की व्यवस्था करायी जा सके ताकि उनका
भविष्य सुरक्षित हो सके। ऐसा हमे सरकारी स्तर पर कारवाई कर सुनिश्चित
करना चाहिये। बहुधा यह भी देखने में आया है कि अपनी जाति की आड
लेकर अन्य जाति के लोग भिक्षावृत्ति कर हमारी जाति, हमारे समाज का नाम

बदनाम करते हैं। हमे ऐसे लोगो की पहचान कर उन्हे कानूनन दंडित करवाने का प्रयास करना चाहिए।

. सामूहिक विवाह–सम्मेलनों का आयोजन

हमे सामूहिक विवाह–सम्मेलन आयोजित कराने का सकल्प लेना होगा। इससे हमारे गरीब तबके के जाति–बन्धुओ को विवाह सम्बन्धों मे आ रही परेशानी से राहत मिलेगी तथा फिजूलखर्ची, दिखावा प्रवृत्ति जैसी कुरीतियो से छुटकारा पाने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। हम यदि आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं तो भी हमे औरों को प्रेरणा देने हेतु अपने बच्चो का विवाह सामूहिक रूप से करने का बीडा उठाना चाहिए। इससे आपसी मेल–मिलाप बढेगा तथा अमीर–गरीब, ऊंच–नीच, भेदभाव वाली भावना दूर होगी एवं सामाजिक एकता कायम होगी। फिजूलखर्ची रोकने हेतु ऐसे आयोजन विकसित समाजो मे भी हमेशा करवाये जाते रहे हैं।

. मृत्युभोज पर रोक

भृगुवशी भार्गव ब्राह्मण समाज मे जो सबसे भयंकर कुरीति है वह है मृत्युभोज। परिवार मे किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के उपरांत उसके बारहवे को एक विशाल भोज करने की सामाजिक परम्परा रही है। परिवार मे किसी की मृत्यु होने से हमें दुःख होता है, किन्तु दुखी होने पर भी मृत्युभोज का आयोजन कर हम खुशी का इजहार करते है। इस आयोजन से सम्बन्धित परिवार पर अनावश्यक आर्थिक बोझ पडता है। मृत्युभोज बन्द करना एक अकेले आदमी का काम नही है, क्योकि वह समाज मे रहता है तथा सामाजिक नियमो को मानने को बाध्य है। इसका उल्लघन करने पर उसे समाज मे हेय दृष्टि से देखा जाता है। इस तरह के आयोजनो पर समाज के प्रबुद्ध, शिक्षित, बुद्धिजनों के निर्णय लेने से ही रोक लगायी जा सकती है। मृत्युभोज आदि बिल्कुल बंद नही हो सके तो इसका स्वरूप छोटा करने हेतु कठोर नियम जरूर बनाए जाने चाहिए।

अंत मे मै यही कहना चाहूंगा कि उपरोक्त बिन्दुओ मे से यदि हम एक भी बिन्दु को लागू करने मे सक्षम हो सके तो निश्चित ही हम एक नये समाज के निर्माण व सामाजिक उन्नति की राह मे अपना कदम बढायेगे।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं, वह पत्थर है, जिसमें स्वजाति का प्यार नहीं।

– कमलकिशोर रावल भार्गव जयपुर

भृगुवंश का उत्थान कैसे हो

प्राचीनकाल मे महाराज भृगु ने विभिन्न उच्च वंशो के एक लाख ब्राह्मणो को चुनकर उन्हे पुत्रवत स्वीकार करके धर्म तथा ज्योतिष की उच्च शिक्षा प्रदान की। कालान्तर मे यही कुलीन ब्राह्मण भृगुवशी ब्राह्मण कहलाये। भृगुवशी अपने त्याग, तपस्या, साधना तथा उच्च ज्योतिपी ज्ञान के वल पर अनेक राजाओ द्वारा पूजित हुए तथा अनेक राजज्योतिष तथा पुरोहित के उच्च पद पर आसीन हुए। इन्होंने ग्रहो की स्थिति वताकर तथा उच्च स्तरीय धार्मिक सलाह देकर राजकुलो का सही मार्गदर्शन किया तथा समाज को भी धर्मच्युत होने से बचाया किन्तु इन्होने अर्थ का लोभ कभी भी नही किया। यही कारण है कि विद्वत्ता में सर्वश्रेष्ठ ये ब्राह्मण आर्थिक रूप में सम्पन्न नहीं रहे और पश्चात्वर्ती काल मे, जब अर्थ की महत्ता बढी, ये दरिद्र हो गए। दरिद्रता ने इनमे हीन भावना का संचार किया और ये वशहीनता का शिकार हो गये। हीनता से ग्रस्त इन्हीं भृगुवशियो के उत्थान के लिए समय–समय पर इस समाज के बुद्धिजीवियों तथा विद्वान नेताओ ने कदम उठाये तथा इन्हे हीनता से मुक्ति का मार्ग दिखाया। परिणामतः मुरलीमनोहर जोशी, जैसे राष्ट्रीय स्तर के राजनेता बने, शर्मा बन्धु जैसे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानप्राप्त भजन गायक हुए, पुष्पादेवी जैसी विधायिका हुई, भोलानाथजी भार्गव जैसे मन्त्री हुए, इसी क्रम मे दिल्ली मे समाज के कुछ नेताओ ने भृगुवशी महासभा संघ की स्थापना की है जिसमे किशनलाल शर्मा, पं. पूरनचन्द राजज्योतिषी, शेरसिंह पकज, रामशरण जोशी, रामपाल आर्य, घनश्यामदास, हरिशकर गंगवारिया, विश्वम्भर दया, घासीलाल मानव, जगदीशचद्र शर्मा, कमलेश मानव, श्रीमती राजप्रभा प्रमुख हैं। इनके अलावा देश मे फैले समाज के डाक्टरो, वकीलो, न्यायाधीशो, सरकारी कर्मचारियो तथा व्यवसायियो ने भी समाजोत्थान के लिए कार्य किया है। परिणामतः आज पुनः देश मे भृगुवशियो का स्थान ऊचा होता जा रहा है। यहा मै कुछ उपायो के बारे मे चर्चा कर रहा हूँ जिन्हे अपनाकर यह समाज तीव्र गति से उन्नति और विकास कर सकता है।

1. बेझिझक खुल कर घोषित करे कि वे भृगुवंशी है और उच्च कोटि के ब्राह्मण है।

2. हीनता की भावना का परित्याग कर जान ले कि भृगुवंशी महाराज

भृगु द्वारा चुने गए एक लाख कुलीन ब्राह्मणों की संतान हैं। इनके अलग रीति–रिवाज है ओर उनमें इनकी पूर्ण आस्था और निष्ठा है।

3. भृगुवशी सगोत्र नहीं हैं। ये विभिन्न कुलीन कुलो मे परस्पर शादी–ब्याह करते हैं। ये किसी अभृगु के यहां शादी–ब्याह नही करते क्योकि महाराज भृगु का आदेश था कि वे ऐसा न करे अन्यथा इनका समाज मिश्रित हो जायगा और ये अपनी उच्च पहचान खो देगे तथा पतित हो जायेगे।

4. भृगुवशियो को चाहिए कि वे गौत्र का विचार अवश्य करे तथा दूसरे गौत्र के भृगु से ही शादी–ब्याह करे। रिश्ते दूर–दूर करे ताकि भृगुवशी समाज पुनः राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट हो सके तथा पुनः इसका राष्ट्रीय स्वरूप उभरे।

5. शर्मा, पाण्डेय, तिवारी, मिश्र, दुवे, चतुर्वेदी, चौवे आदि भृगुवशी ब्राह्मण भृगुवंशी के रूप मे अपने को नि.संकोच प्रकट करें तथा भृगुवशी पाण्डेय, भृगुवशी मिश्र आदि।

6. अपने साथ निरर्थक उपनाम पकज, नीरज आदि न जोड़कर भृगु या भृगुवंशी लिखे।

7. जोशी या ज्योतिषी शब्द पूरे भृगुवंशी समाज का द्योतक है। अतः कोई भृगुवशी चाहे तो अपना पूर्व कुल पाण्डेय, तिवारी आदि लिखे तो बुराई नहीं किन्तु जोशी या ज्योतिषी एक कर्म से जुडा नाम है, वश से जुड़ा नही। अतः भविष्य के लिए यही अच्छा होगा कि सभी लोग एकरसता के लिए भृगु, भार्गव या भृगुवशी उपनाम का प्रयोग करे।

8. शिक्षा की भावना का विकास करें, समाज को अधिकाधिक शिक्षित करे। शिक्षित और महत्त्वाकाक्षी लोगप्रशासन में जाने के लिए कठिन परिश्रम करे तथा निडर होकर राजनीति मे प्रवेश करे।

9. राजनीति में जाने वाले पिछलगू न बने। अपने समाज को एकजुट करे तथा उनकी जनसंख्या और जनशक्ति दिखाकर राष्ट्रीय राजनीतिक दलो पर अपना प्रभाव बढायें तथा समाज के लोग अधिक संख्या मे जहां रहते हो उनके लिए विद्यालय, अस्पताल आदि खुलवाने की कोशिश करें। अपनी जनशक्ति दिखाकर टिकट प्राप्त करे तथा एम.पी., एम.एल.ए. का चुनाव लडे। नगरपालिका का चुनाव तो अवश्य लडे। यह उनका राजनीति मे प्रवेश का पहला चरण होगा।

10. राजनीति मे आने वाले स्वजातीय बन्धु का पूरी निष्ठा से सहयोग करें उसके पक्ष में देशभर के स्वजातीय बन्धु यथासंभव मदद करें। क्योकि

आपकी ताकत और जनशक्ति का उपयोग दूसरे समाज का व्यक्ति कर रहा है। यह समाज के लिए ठीक नही, अपना नेता अपने समाज से चुने।

11. कही कोई भी मसला हो, स्वजातीय बन्धुओं को वरीयता दे, उनके हितो के लिए सघर्ष करें, वह आपके वंश का है। उसकी सफलता आपके समाज की और आपकी सफलता है।

12 किसी विरोध से न डरे, उसका डटकर मुकाबला करे। अपने हर आदोलन मे जिला कचहरियों के स्वजातीय वकीलों को साथ लें तथा जिला कचहरियो के स्वजातीय वकील हाईकोर्ट के स्वजातीय वकील से समय-समय पर सहयोग ले।

13. अपने जिले के स्वजातीय बन्धुओ की सूची तैयार करें। उसमे नाम, पता, परिवार की सदस्य संख्या, गोत्र तथा व्यवसाय लिखकर श्रीमती राजप्रभा, सपादक भृगु मित्र, 111/4 आई.जी.एस.आई. स्टाफ कॉलोनी, हापुड 245101 के पते पर दो माह के भीतर प्रेषित कर दे।

14. अपनी जीविका के साथ-साथ नि स्वार्थ भाव से थोडा समय, धन और श्रम अपने समाज के कल्याण के लिए भी लगायें।

यदि उपरोक्त बातों का पालन किया तो मै दावे के साथ कह सकता हू कि आने वाले चार-पांच वर्षो मे भृगुवशी समाज राष्ट्रीय क्षितिज पर सूर्य की तरह चमक उठेगा और उसे कभी कोई कलकित नही कर सकेगा।

– रंग पाण्डेय भृगुवंशी
एडवोकेट हाईकोर्ट (इलाहाबाद)
7 मोनप्पा रोड, द्रोपदीनगर
समीप सी.डी.ए (पो) ऑफिस,
इलाहाबाद, 297001

चिन्तन

भार्गव समाज के उत्थान की प्रथम व परम आवश्यकता सही

'मानव के जीवन को कान्तिमय बनाने वाली सबसे पहली अथवा शक्तिशाली कड़ी चिन्तन ही है। चिन्तन के अभाव मे प्रेरणा कभी ग्राह्य नहीं होती। सर्वप्रथम हमे चिन्तन करना है कि हम अतीत मे कहा थे ? आज हमारा सामाजिक स्तर क्या है ? ये दो प्रश्न स्वतः ही हमारे समक्ष उभर आते है। मानव जीवन समताओं एवं विषमताओ से ग्रसित है।

चिन्तन बुद्धि मे उत्पन्न होने वाली वह जटिल प्रक्रिया है जो एकाग्रता एव उपयुक्त बौद्धिक विकास चाहती है। केवल शिक्षित व्यक्ति ही अपने –आपको इस पवित्र गंगा मे स्नान करके निर्मल एव मुखरित कर पाता है। अशिक्षित व्यक्ति में व पशु मे चिन्तन करने की क्षमता नही हो सकती। सर्वप्रथम हमे इस बारे मे चिन्तन करना है कि हम हमारे समाज को उन सामाजिक बुराइयों से उबारना चाहते है। हम हमारा नैतिक मानवीकरण चाहते है। हम यह भी आकाक्षा रखते है कि हमारा समाज राष्ट्रव्यापी पक्ति मे खडा होने योग्य हो।

आइये, आज हम अपने समाज को उचित दिशा दे जिससे हमारे भार्गव समाज को भी अन्य स्वच्छ समाजों की पक्ति मे खड़ा कर सके। आज प्रचार व प्रसार का युग है। इसके लिए हमे अपनी लेखनी को सशक्त बनाना है।

किसी भी समाज को उचित दिशा देने हेतु केवल सशक्त लेखनी व उसमें प्राण फूक देने वाले मसीहा की परम आवश्यकता होती है। विश्व का कोई भी धर्म दिशा देने वाले व आहुति दने वाले मसीहा के बिना विकसित नही हुआ। ईसाई धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, मुस्मिल धर्म, सिक्ख धर्म एव सनातन धर्म, हिन्दू धर्म सभी धर्मो की मशाल किसी अद्‌भुत पचतत्त्वधारी चिन्तनशील आत्मा ने ही जलाए रखी है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण बिंदु है अनुशासन, जो स्वत ही किसी अलौकिक शक्ति से बंधा है। हमारे समाज का प्रत्येक स्त्री, पुरुष, बूढा, जवान, बच्चा सभी को त्याग की भावना ही सही ज्योति दिखा सकती है। कुछ लोगो की

आवश्यकता है। अपने अतीत का इतिहास साक्षी है कि सीमा पर भी की गई लडाई उन्होंने जीती है जिनका सेनापति साहसी, दूरदर्शी व कर्तव्य के प्रति समर्पित रहा हो। तथा जो अपने सैनिको मे अनुशासनरूपी शक्ति संजोए रख पाता हो। हमे भी समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए आत्मानुशासन की महती आवश्यकता है। हमारे समाज मे उच्छृंखलता व्याप्त है। हम दूसरो की बुराइयां लक्षित करके चलते है।

छोटे–छोटे बच्चों मे बचपन से ही ऐसे सस्कार डालने की आवश्यकता है ताकि वे बुराइयो से परहेज करे। मनुष्य के माता–पिता ही उसके सच्चे निर्माता होते हैं। यदि उनके आचरण, बातचीत, दैनिक कार्यकलापो मे अनुशासन व चिन्तन है तो कोई ऐसा कारण नही कि उनकी सतान बुरे रास्ते को चुने। चिन्तन के अभाव मे माता–पिता अपनी सतान को सही मार्गदर्शन नही दे पाते। बचपन मे उन्हे शिक्षा की आवश्यकता है। माता–पिता अपनी संतान को भिखारियो की तरह भीख मांगने नही, बल्कि उन्हे शिक्षा सस्थानो में भेजे उन्हे अपनी निगाहो व चितन के आधारभूत अनुशासन मे रखे। पैसे के लालच मे स्वय माता–पिता ही दीमक की तरह उनके भविष्य के अस्तित्व को चाट जाते हैं। आज शिक्षा व अनुशासन की परम आवश्यकता है। शिक्षा व अनुशासन के अभाव मे बच्चो के भविष्य की नीव एकदम खोखली रह जाती है। बच्चा अपने मां–बाप के अनुबन्धन व अनुशासन को तोडकर स्वच्छन्द बन जाता है। इसका परिणाम होता है कि वह अनेक प्रकार की मानवीय विकृतियो को जन्म देता है और अपने भविष्य को अंधकार मे धकेल लेता है।

इसके पश्चात् दूसरा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र शिक्षा जगत में पदार्पण है। उचित शिक्षा के बिना कोई भी मनुष्य अपने जीवन को सही दिशा नही दे पाता। मनुष्य सामाजिक विकृतियो मे लिप्त हो जाता है। हमारे समाज मे प्रबुद्ध विद्वानो का अभाव है। यद्यपि हम महर्षियो की सन्तान है। पर वर्तमान मे हमे लिखना पडता है कि हमारे समाज के इतिहास को अन्य विद्वानो द्वारा प्रतिपादित कराना चाहते हैं। शोध कार्य मे हम चिन्तन के अभाव में पिछड गये है। हम अपना व्यवसाय कुछ भी क्यो न अपनायें परन्तु हमारे सोचने–समझने का ढग हमारे समाज की अनुप्रेरणा लेता रहे। मशाल तब तक जलती है जब तक मशाल मे तेल होता है। उसी प्रकार व्यक्ति या समाज तभी तक प्रगति कर सकता है। जब तक इसमे अपने समाज व धर्मरूपी तेल है। सत्य तो यह है कि हमारा प्रत्येक कार्य भी समाज से प्रेरणा लेकर चलने वाला हो।

हम मात्र सामाजिक रीति–रिवाजों मे ही इसे अपनाते है। आज हमे सामाजिक बुराइयों से सघर्ष करने के लिये प्रत्येक छोटी से छोटी इकाई अर्थात् घर–घर इस बात की मशाल प्रज्वलित करनी है। हमे अपने समाज के प्रत्येक व्यक्ति मे यह भावना पैदा करनी है कि हमें अब आगे बढना है। आज हमारी युवा पीढ़ी का दायित्व है कि वे सही रास्ता चुने। समाज को उचित गति प्रदान करें और अधिक से अधिक चिन्तन करें तथा अशिक्षित चाहे स्त्री हो या पुरुष, उसे सही दिशा का मार्गदर्शन देकर अपने जीवन को साधक के जीवन के समान गुणों से प्रेरित करे एवं अवगुणों से परहेज करने वाला बनाये। अपने विचारों में, अपने बोलचाल मे अनुशासन को महत्त्व दें।

आइये, हम सभी छोटे बडे स्त्री–पुरुष यह सकल्प लें कि हम सामाजिक रूढिवादी बेड़ियों को तोड़कर समाज को उच्च, स्वच्छ वैतरणी के द्वारा पार लगाए। हम तन–मन–धन से हमारे भार्गव समाज की रक्षा करने व उसे स्वच्छ बनाने का सकल्प लें। इन सभी कर्मों व सकल्पों को करने के लिये, दुनिया का चिन्तन करने से पहले हर एक बडा, बूढा, जवान, बच्चा, स्त्री या पुरुष अपने गिरेबान मे झाककर जरूर देखे कि हम स्वय कहां तक सही हैं ? सबसे पहले हमे अपने–आपको अनुशासित व शिक्षित करना है। अपनी उन सभी बुराइयो का त्याग करना है जो हमारे समाज को दिनोदिन खोखला कर रही है। अगर हम स्वयं अनुशासित हैं तो अपने घर के अन्य सदस्य अनुशासित होंगे और घर अनुशासित व स्वच्छ, शिक्षित है तो हमारा सम्पूर्ण परिवार और जब परिवार में कोई बुराई नही है तो फिर समाज की तरफ चले। सबसे पहला कदम मनुष्य अपने स्वय पर ही उठावे। मैं यह उम्मीद रखता हू कि मेरी लेखनी पढ कर कम से कम नवयुवक तो मेरा साथ अवश्य देगे जो शिक्षित है वे मेरी ही नहीं, हमारे समाज की गतिविधियो पर अवश्य ध्यान देगें। ऐसी समस्त सामाजिक बन्धुओ से आशा करता हूँ।

— किशनलाल भार्गव
संस्थापक,
सरस्वती बाल निकेतन, 6 एल.एन.पी.,
श्रीगंगानगर

प्रेम तत्त्व महान है

अधिकाररहित कर्तव्यपालन का नाम ही प्रेम है। प्रेम तत्त्व सर्वोच्च तत्त्व है। यह अन्तिम स्तर की उपलब्धि है। इसी प्रेम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सीताहरण के उपरात सीताजी के लिये हनुमानजी द्वारा लका भेजा था।

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एक मनु मोरा।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाही।
जानु प्रीति रस एत निहि माही।।

यदि प्रेम भी है और होश भी है तो वह प्रेम की सच्चाई है। माता शबरी के प्रेम मे सच्चाई थी। प्रेम के अतिरेक में वह समाधिस्थ हो गई। शबरी परि चरन लिपटाई और प्रेम मगन मुख वचन न आवा। विदुरपत्नी के घर श्रीकृष्णजी अचानक पहुच गये तो उनकी अवस्था विचित्र हो गई। प्रेम के वशीभूत होकर भावविह्वल हो गई। तन–मन का होश नहीं रहा। उसी अवस्था में भोजन अर्पण करने का स्मरण आ गया। उपलब्ध सामग्री मे केला खिलाने हेतु केला फल जमीन पर और छिलका हाथ मे देने लगी। श्रीकृष्ण भी छिलको को प्रेम सहित खाने लगे और उन छिलको मे त्रैलोक्य के भोजन का स्वाद अनुभव करने लगे।

ठीक इसी प्रकार सुदामा की पत्नी के चावलो मे अनन्त रसो की तृप्ति मिली थी। माता शबरी ने तो श्रीराम के श्रम को दूर करने के बाद उसी प्रकार उन्हे भोजन कराया जिस प्रकार मा अपने बच्चो को भोजन कराती है।

कन्द मूल फल सुरस अति।
दिये राम कहु आनि।।
प्रेम सहित प्रभु खाये।
बारम्बार बखानि।।

प्रेम के वशीभूत होकर श्रीराम ने शबरी द्वारा अर्पित फल (बेर) बडे चाव

से सराह–सराह कर खाये। यह स्वाद तो उन्हे माता कौशल्या के भोजनों में नही प्राप्त हुआ था।

यह सब प्रेम का ही प्रभाव है। प्रेम का नाता महान है। इसमे जाति–पाति, कुलधर्म, बडाई, धनबल, परिजन गुध या चतुराई का नाता नहीं माना जाता। सेवक से प्रत्येक जन प्रेम के नाते सुख प्राप्त करता है। जिस प्रकार बादल वर्षा का सुख देता है, बन्धुओ आप लोग भी सत्य प्रेम का सहारा ले। जीवन मे सफलता अवश्य प्राप्त होगी। मेरे भार्गव समाज के प्रिय भाइयो, प्रेम मे ही जीवन जीने का आनन्द है। इससे बढ़कर कुछ भी नही है। प्रेम है तो जीवन है।

– रामदेव शर्मा (देव)
राजा जक्शन

ब्राह्मण तत्त्व का भावार्थ

शास्त्र का मत ऐसा है के मनुष्यो को अपने तई ब्राह्मण कहकर मूर्ख कदापि न रहना चाहिए। परन्तु अन्यन्त दुख के साथ लिखना पडता है कि हमारी जाति ने भीख माग कर खाना ही अपना परम कर्तव्य मान लिया है तथा पठन–पाठन से बिलकुल मुह मोड लिया है। लेकिन भाइयो ! याद रखो, जहां कहीं भी गुणवान मनुष्य की ही पूजा होती है। जैसे सुन्दर बास का धनुष बिना डोरी के कुछ भी काम नही आता उसी प्रकार हम भृगुकुल जैसे उत्तम वश मे उत्पन्न होने पर भी विद्याविहीन कुछ नही कर सकते।

1 प्रश्न ' क्योकि व्रज सुचि के उपनिषद मे लिखा है कि क्या किसी विशेष प्रकार के शरीर को जीव–देह कि वर्ण (रंगरूप) को कर्म ब्राह्मण कहते है ?
उत्तर . सब प्रकार के मनुष्यो का शरीर जीव देह (रग रूप) तथा शूद्र भी ब्राह्मण तुल्य कर्म करने से ब्राह्मण नही कहा जा सकता।
प्रश्न ' तो क्या ब्राह्मण कोई विशेष जाति है ?
उत्तर . यह भी उचित नहीं है क्योकि अन्यान्य शूद्र जातियो मे उत्पन्न होकर भी बहुत–से ऋषि कहलाए है।
(1) शृगी ऋषि हरिणी के पेट से (2) कौशिक ऋषि दर्भ के गुच्छ से (3) वाल्मीकि मुनि मिट्टी के ढेर से (4) गौतम ऋषि शशा के पेट से (5) व्यास मुनि केवर्त (कवारी कन्या) यानी भील की कन्या से (6) पराशर चन्डालनि (भगिन) से (7) वसिष्ठजी वेश्या से (8) अगस्त्यजी फूल से (9) विश्वामित्रजी क्षत्रिय से (10) मान्डूक्यजी माडूकी से (11) मतगजी मातंगी से (12) अनिल मुनि हथनी से (13) नारदजी दासी से (14) भारद्वाजजी शूद्री से आदि अनेको उदाहरण पुराणो से मिलते है कि जिनकी ब्राह्मण जाति मे उत्पत्ति नही है। पर वे स्वकर्म प्राभाव से अत्यन्त ब्राह्मणत्व को पाए है। अतः सार यह निकलता है कि जाति भी ब्राह्मण नही है। इसके पश्चात् जिज्ञासु कहता है कि

ब्राह्मणत्व न शास्त्रेण न सस्कोरेन जातिभिः।
न कुलेन न वेदेन न कर्मणा भवेदतः।।

उत्तर : तो आखिर ब्राह्मण किसको कहते हैं ? रिशिरण उत्तर देते है कि निर्ममो, निरहकारो, निस्संगो, निःपरिगृह, रागद्वेष विनिमुक्तो देव ब्राह्मण बिन्दु सत्य, व्रत, तपो, बृहम, बृहम चैन्द्रिय निगृह सर्व भूते दया बृहम एतद ब्राह्मण लक्षणम।।

अर्थ :

निर्मोही, निरहकारी, पक्षपातरहित किसी से परिग्रह न लेने वाला राग–द्वेष से मुक्त, सत्य व्रत तप को धारण करने वाला, इन्द्रियों का निग्रह करने वाला और प्रत्येक प्राणी पर दया करने वाला यह ब्राह्मण के लक्षण है।

— ओमप्रकाश भार्गव
सूरतगढ

सामाजिक स्तर : जीवनियाँ

हमारे समाज में कुछ प्रमुख व्यक्ति ऐसे थे जो 'हमारा समाज सुधरे' ये सपना लेकर चले गये। कुछ हस्तियां आज भी इस लड़ाई को लड रही है और कुछ नये चेहरे इस सघर्ष मे शामिल होकर अपने समाज को खोया हुआ सम्मान दिलाना चाहते है। पर सही दिशा नही मिल पा रही है। शिक्षक वर्ग आगे आकर समाज के उत्थान मे अपना सहयोग दे। हमारे समाज मे समय–समय पर जिन समाजसुधारको ने प्रयत्न किये है और जो इस दिशा मे आगे आना चाहते है उनका परिचय कराना चाहूंगा। वैसे ये हस्तियां परिचय की मोहताज नही है।

स्व. पं. श्री दूलीचन्दजी (रावल) भार्गव

आप बीकानेर भार्गव ब्राह्मण समाज के गौरव पुरुष थे। बीकानेर भार्गव समाज में आप दादाजी के नाम से प्रसिद्ध थे। महाराजा हिज हाइनेस नरेश श्री गंगासिहजी बहादुर के राज्यकाल मे राज–ज्योतिषियों मे आपका नाम प्रथम सार्थक था। आप वचनसिद्ध कहलाते थे। आपके मुख से निकले हुए वचन सिद्ध हुआ करते थे। आप भविष्यवक्ता थे। आप की भविष्यवाणी भी सिद्ध हुआ करती थी।

सामाजिक पचों में भी सत्य वचनों से न्यायप्रिय थे। झूठ को साक्षी मानकर, अन्याय का साथ कभी भी नहीं देते थे। अतः पच लोग भी आपकी बात का लोहा मानते थे। आप बडे सरल, सद्भावी एवं अपने सुविचारो से

सब का आदर–सम्मान करते थे। उन्होने कभी छोटे–बडे का भेद नही जाना। सबको समान दृष्टि से देखते थे। आप बच्चो से बहुत प्यार करते थे। आप बच्चो को काजू, किशमिश, बादाम, पिस्ता, अखरोट, सूखे मेवे बाटा करते थे। उस समय के बच्चे आज बुजुर्ग हो गये हैं, वो कहते है कि उनके प्यार को वे आज भी नही भूल पाये हैं और कहते है कि ऐसे थे हमारे दादाजी।

आपने सामाजिक स्तर पर समाज को जाग्रत करने के लिए शिक्षित बनाने मे पूर्णतया सहयोग दिया और बच्चो को अच्छे संस्कारो, अच्छी शिक्षा, उच्च विचारो व सदा सत्य बोलने के लिए कहते थे। अपनी गुरु–यजमानी के सिवाय किसी और के आगे हाथ न फैलाने के लिए कहते थे। अपने आत्मसम्मान से दान लेना व दान देना, शिक्षार्थी बनकर जीवन जीने का मूल आधार बनाओ, ब्राह्मण तत्त्व को समझ कर नित्यकर्म, पूजा–पाठ करो, धर्म के प्रति आस्था रखो, सत्य कर्म ही जीवन का कल्याणकारी मूल पाठ है।

आपका भरा–पूरा परिवार है। आपका स्वर्गवास आषाढ सुदी 10 वि. स. 1999 को हुआ था। आपका परिवार एवं भार्गव समाज का परिवार आपको श्रद्धा–सुमन, श्रद्धांजली अर्पित करता है।

— गौरीशंकर भार्गव

स्व. श्री कुन्दनलालजी रावल (भार्गव)

आप स्व प श्री दूलीचन्द भार्गव के जेष्ठ पुत्र थे। आपने गृहस्थ आश्रम को त्याग कर संन्यास ग्रहण किया। आप भगवा वस्त्र धारण कर सन्यासी के रूप मे रहते थे। हरिद्वार, ऋषिकेश में एक आश्रम मे निवास करते थे। वही पर रहकर आपने ईश्वरभक्ति की थी। अधिकाश समय तक वही पर रहकर तपस्या की और 14–15 साल के अन्तराल के बाद अपनी मातृभूमि बीकाणा मे पधारे। उस समय भार्गव समाज व अन्य समाज के लोगो ने भी आपके आगमन पर स्वागत–सत्कार किया।

आप अपने प्रवचन में समस्त वर्ग के सत्सगप्रेमियों को हरि ओम शब्द को साक्षी मानकर परमपिता परमेश्वर की भक्ति करने का मार्गदर्शन बतलाते थे।

भगवान की पूजा–आराधना, सत्संग से ही प्राणीमात्र का जीवन सफल एव मोक्ष की प्राप्ति होती है–यह आप अपने उपदेश मे कहा करते थे। जीवन सफल तभी होता है, मोहवश ससार को त्याग कर सत्सग प्रणिती को समझे, स्वतः ही जीवन का मूल्य समझ जावोगे। आप नारायण हरि बाबा के नाम

से पूजित और प्रसिद्ध थे।

आपके बीकानेर आगमन के बाद पब्लिक पार्क के अन्दर चिड़ियाघर के पास शनि मन्दिर के समीप आपने एक शिव मदिर व भैरों मन्दिर की स्थापना की और निर्माण कार्य करवाया। उस स्थान को आपने अपनी तपस्थली बनाया और भार्गव समाज के जाति बन्धुओं को सदा प्रेरणा के आधारस्वरूप आप यही कहते थे कि शिक्षा के प्रति आगे बढकर जीवन को सार्थक करो। अपने माता–पिता, गुरुजन एवं बड़ो की आज्ञा का पालन करो, आदर–सत्कार करना सीखो। ब्राह्मण हो, ब्राह्मण तो विद्या का सागर और ज्ञानी होता है। आपको इस के महत्त्व को समझना चाहिये।

आपका अधिकांश समय यहीं पर व्यतीत हुआ। अन्तिम समय तक भगवान की आराधना करते हुए इसी स्थान पर आपने शरीर त्यागा। विक्रम संवत् 2036 बैसाख सुदी 13 को बैकुठधाम देवलोक में विलीन हो गये।

आपको अपनी तपस्थली स्थान के समीप ही समाधि दी गई। आपकी समाधि को आज भी पूजास्थल के रूप मे पूजा जाता है और समस्त वर्ग के दर्शनार्थी महानुभाव आज भी समाधि पर अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हैं और आपके परिवारजन, भार्गव समाज के परिवारजन आपको श्रद्धासुमन, श्रद्धाजली अर्पित करते है।

— गौरीशकर भार्गव

स्व. श्री गिरधारीलालजी रावल (भार्गव)

आप स्व. पं. श्री दूलीचन्दजी भार्गव के द्वितीय पुत्र थे। आपकी बाल्यावस्था मे ही पिताश्री का स्वर्गवास हो गया था। उस समय आपकी उम्र कोई 4–5 साल की थी। आपकी माताश्री मखतूलीदेवी ने कठिन परिश्रम से अपने बच्चो का पालन–पोषण किया। आप शिक्षा साधारण तौर पर ही प्राप्त कर पाये थे क्योकि घर की आर्थिक स्थिति को संभालने की चेष्टा मे 10–12 साल की आयु में ही आपको कार्यभार संभालना पडा और आपने अपनी लगन से लकडी के कार्य कि सीखा यानी की सुथार के काम को और इस काम को आपने प्रोत्साहन दिया और इस कार्य में निपुण हुए। आपकी मेहनत, लगन, कार्यकुशलता ने रंग दिखाया और आपने ख्याति प्राप्त की। आप चलवोंजी और ठेकेदारजी के नाम से जाने जाने लगे।

एक प्रश्न यहां पर यह भी जुडता है कि आदिकाल से ही भृगुवंश

भार्गव समाज मे इस कार्य के कुछ शिल्पकार भी हुआ करते थे।

जैसे कि त्वष्टा हमारे ही पूर्वज हैं। आप शुक्राचार्यजी के पुत्र थे। भृगुवश नाटक पुस्तक में इसका वर्णन मिलता है। प्रथम अंक 3 पर अंकित है। उस समय त्वष्टा ने ही देवासुर संग्राम मे युद्ध के समय रथो का निर्माण कर रथो की पूर्ति की थी। वो हमारे कुल के, हमारे वश के, हमारे ही बुजुर्ग थे। हमारा यह कार्य कोई आज का नही है, यह तो हमारा पुश्तैनी धंधा है। आदिकाल से चला आ रहा है और हम आज भी इस कार्य मे सक्षम है।

आपने सामाजिक जानकारी को तो 15–16 साल की आयु में ही भार्गव समाज की पचायत राज की ऊचाइयो को छुआ। हमारे बीकानेर भार्गव समाज मे चार प्रकार की न्याते होती थी और आज भी हैं। जैसे कि 60 घर रावल भार्गव समाज की न्यात, 100 घर चार धड़ा न्यात, गांव यानी कि 12 गोडा न्यात और सताईसा सत्ताईस गाव की न्यात। इन चारों प्रकार की न्यातों के बारे मे जानकारी प्राप्त की ओर भार्गव समाज मे एक कीर्तिमान स्थान बनाया। चाणक्यनीति, राजनीति एव सामाजिक नीति की चहुमुखी जानकारी के आप धनी थे। आप इतनी कम उम्र मे भी अनुभवो के विपुल भण्डार थे। कठिन–से–कठिन समस्या का समाधान अचूक रामबाण की तरह करते थे। हर परेशानी का मुकाबला समझदारी और सूझबूझ व दृढता के साथ करते थे। यह तजुर्बा था उन्ह। आप भी अपने पिताश्री की तरह सत्य की लड़ाई लडते थे।

इन्ही अनुभवो के कारण आप समाज मे व अन्य समाज मे लोकप्रिय हुए और दूर–दूर से लोग सलाह–मशवरा करने के लिए आते थे। आप भार्गव समाज के जाति बन्धुओं को शिक्षा के लिए हमेशा प्रेरित करते थे। क्योकि आपको शिक्षा का अभाव बहुत सताता था। इसलिए शिक्षा के प्रति अधिक से अधिक ध्यान देने के लिए कहते थे। ब्राह्मण शिक्षा के बगैर अधूरे है। कमा कर खाना और गाढे पसीने की कमाई को जीवन का मूल आधार समझते थे और इससे बुद्धि सुदृढ होती है, मनोबल बढता हे। यह एक सफल मार्ग है।

अतः आपकी एक और उपलब्धि की जानकारी भी कराना चाहूंगा। क्योकि हमारे वश में उस समय भी शस्त्र विद्या अनिवार्य थी और आज भी है। पर लोग आज इसे भूल चुके है पर हमारे पास आज भी यह विद्या विद्यमान है। आप शास्त्र विद्या मे भी निपुण खिलाडी थे। लाठी, तलवार चलाने मे बहुत ही माहिर थे। इस मुकाबले मे 20 पर एक भारी पडते थे। हीरालाल, मूलचन्द, गिरधारी इन तीनो की जोडी थी बडी भारी। हीरालालजी .

मूलचन्दजी पुरोहित दोनो सगे भाई थे। गिरधारीलालजी भार्गव जोड़ीदार गुरुभाई थे। तीनो 100 के बराबर थे। शस्त्र विद्या में आपका नाम प्रथम सार्थक था।

अतः मौहल्लेवासी और बीकानेर नगर के लोग आज भी इस तीन सितारा जोड़ी को याद करते हैं।

आपने कभी दबकर बात नहीं की क्योकि आपकी बात मे सत्यता होती थी, बनावटीपन नहीं होता था। जो कहते दृढतापूर्वक कहते और सच्ची बात कहने वाले का मनोबल बहुत मजबूत होता है। ऐसे महान् वक्तृत्व के धनी को ईश्वर ने समय से पहले ही अपने पास बुला लिया। आप के जाने से भार्गव समाज को अपूर्व क्षति हुई है।

आपका स्वर्गवास जेठ वदी 2 विक्रम सवत् 2031 को हुआ था। आपका परिवार एव भार्गव समाज का परिवार आपको श्रद्धासुमन, श्रद्धाजलि अर्पित करता है। आप जहा भी हैं, हम आपके उद्‌गार मार्ग पर चलकर ही आगे बढ़ेगे।

— गौरीशकर भार्गव

स्व. श्री कानारामजी भार्गव (ठेकेदार) नोखा निवासी

स्व श्री कानारामजी के जीवनकाल के क्षण महत्त्वपूर्ण थे। आप नगरपालिका नोखा के तीन बार कार्यवाहक अध्यक्ष रहे और कानारामजी ठेकेदार के उपनाम से जनप्रिय, प्रसिद्ध हुए। आपकी सादगी, निर्भयता, दृढ प्रतिज्ञा, शीघ्र निर्णय, असहायो की रक्षा, गो सेवा, महिला एव निरीह पशुओ के प्रति सेवा की भावना को पूरे तहसील क्षेत्र के लोग आज भी बडी श्रद्धा के साथ याद करते हैं। कानारामजी के पिताश्री का नाम स्व. कुभारामजी था। गोत्र आपका घोसी था। भादवा वदी चतुर्दशी विक्रम संवत् 1972 मे नोखा तहसील के सोमलसर ग्राम में आपका जन्म हुआ। आपने अपने बहनोई किसनरामजी मांझुवाला (सूरतगढ़) निवासी से जमीन पर अक्षर लिख–लिख कर प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की और ज्योतिष विद्या का ज्ञान भी आप से ही प्राप्त किया। बाल्यावस्था से ही प्रतिकूल परिस्थितियो का बडी बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए मेहनत–मजदूरी कर सघर्षमय जीवन को आगे बढाया। शुरू से ही ईमानदारी और बहादुरी आपका मूलमन्त्र रहा। डर नाम के शब्द को ये नहीं जानते थे। सन् 1955–56 व 58, 60 मे अपनी जान की परवाह किये बगैर इन्होंने कई बार डाकू–चोरो को पकडवाकर पुलिस व

कानून की मदद की। इसी के फलस्वरूप डी. आई. जी. तथा उच्च अधिकारियो द्वारा इन्हे तीन बार प्रशस्ति पत्र भेट कर सम्मानित किया गया। आपने ठेकेदारी का व्यवसाय 1951–52 से ही अपना लिया था। मरोठी कुए के निर्माण से आपका ठेके का काम प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् रेल्वे क्वार्टर, सडक व कोयला आदि के कॉन्ट्रेक्ट, जोधपुर से दिल्ली, जयपुर तक के ठेके लेकर उन्हे सम्पादित किया। पी. डब्ल्यू. डी. क्वार्टर, वर्क्स आदि के ठेके भी लेते थे।

राजनीति मे प्रथम लोकतत्र के चुनाव से ही सक्रिय रहे। कुभाराम आर्य, दौलतराम सारण, नाथूराम मिर्धा, पन्नालाल बारूपाल जैसे नेताओ के सम्पर्क मे रहे। स्व. ठेकेदारजी 25–9–60 से 13–10–60 एव 10–3–64 से 31–8–64 तथा 21–8–77 से 20–10–77 तक कार्यवाहक नगरपालिका अध्यक्ष रहे तथा आप अपने कार्यकाल मे गाडिये लुहारो के लिए नि:शुल्क भूखण्ड आवटित करते रहे। फौजी कॉलोनी का नक्शा आपके कार्यकाल मे ही स्वीकृत हुआ तथा भूतपूर्व सैनिको की पत्नियों को भी जमीने दी गई। 1960–61 मे बस स्टेण्ड भी आपके कार्यकाल मे बनवाये गये। दूकाने आवटित की गई। शहर का योजनाबद्ध विकास कराने मे आपने योगदान किया। बाजार की सडको तथा वाटर वर्क्स की टकियो के निर्माण मे भी आपका योगदान रहा।

बात के धनी, गरीबो के हितैपी स्व. कानारामजी ने, जब बस ऑपरेटर का व्यवसाय अपनाया तब अपने पुत्रो को कहा कि हमारी बसो मे प्रसव-पीडित महिला, गरीब व्यक्ति और मृतदेह (डेडबॉडी) व उसके साथ वाले व्यक्तियो से किसी प्रकार का किराया नही लेना, नि:शुल्क सेवा करना। गौशाला मे चदा नियमित देते रहना। इनका कोई सानी नही रहा। गायो को चारा, कुत्ते को रोटी तथा भूखे को भोजन इनका नित्य का नियम रहा। शिक्षा को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। ठेकेदारजी 1954, 55 मे एक अध्यापक लाये जो बाद मे रोडा ग्राम मे रहकर अध्यापन कार्य करने लगे। इस प्रकार इन्होने शिक्षा की अलख जगाई। एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आपने भार्गव समाज मे रीत के अभिशाप का बहिष्कार किया और अपने बलबूते पर जीने का एहसास दिलाया।

22 दिसम्बर 1992 को यह ज्योतिपुज अमर ज्योति मे विलीन् हो गये। इनकी शव यात्रा मे 5000 से भी अधिक लोग थे। जो नोखा की अब तक

की विशाल शवयात्रा थी। इनके स्वर्गवास के पश्चात् हरिजन भोज दिया गया। जो नोखा में प्रथम बार हुआ। झाडू, छाजला, पांच वस्तुएं सोने की हरिजनो को भेट स्वरूप दी गई।

स्व. कानारामजी ठेकेदार के पांच पुत्र 1. श्री जेठारामजी भार्गव 2. श्री शकरलालजी भार्गव 3. श्री गिरधारीलालजी भार्गव 4. श्री प्रभुरामजी भार्गव, 5. श्री बजरंगलालजी भार्गव हैं।

आप अपने पिताश्री के नक्शे–कदम पर चलते हैं। आपकी बसों में आज भी किसी प्रसव पीड़ित महिला व गरीब व मृतदेह को चढाने पर किसी प्रकार का किराया नहीं लिया जाता है तथा गौशाला में नियमित चन्दा दिया जाता है। स्व कानारामजी शुरू से ही लाठी अपने पास में रखते थे। जो जीवनपर्यन्त इनके साथी के रूप मे साथ रही। ऐसे गरीबों के मसीहा, परिश्रमशील, बात के धनी के चले जाने पर नोखा को अपूर्व क्षति हुई है।

स्व. श्री गजानन्दजी भार्गव

आप तारानगर (जिला चूरू) के निवासी थे। आप ज्योतिष विद्या के अच्छे विद्वान थे। आप ज्योतिष विद्या के अच्छे विद्वान थे। आप पंचाग रचयिता भी थे। जन्मपत्री, टेवा आदि की आपको बहुत अच्छी जानकारी थी। बीकानेर के कई ब्राह्मण भाई आपके शिष्य बने। सामाजिक उत्थान में आपका बहुत अच्छा योगदान रहा है।

बीकानेर मे 1955 मे भार्गव सम्मेलन हुआ था जिसमें आप भी पधारे थे। आपने अपने उद्‌घोष भाषण मे सामाजिक कुरीतियों पर प्रभावी प्रकाश डाला आपके बताये हुये मार्ग पर लोगो ने चलने का प्रयत्न किया और चले भी पर कुछ समय पश्चात् फिर उसी ढर्रे पर, उसी स्थान पर आ गये और अपनी गरिमा को भूल गये। अशिक्षा के कारण जहा थे, वहीं रहे।

हमें खेद है कि आज हमारे बीच आप जैसी हस्ती नहीं है। पडितजी की अनुपस्थिति मे अपनी इस पुस्तक मे महसूस करता हूं कि अगर आप होते तो शायद कुछ अच्छी जानकारी इस पुस्तक की शोभा बढाने मे सहायक होती और 'भृगु अर्चना दर्पण' भार्गव समाज के व अन्य समाज के पाठक बन्धुओ को जाग्रत् करती।

स्व. श्री किशनलालजी शर्मा

आप रतलाम (म.प्र.) निवासी थे। आप 'भृगु वंश' गाथा पुस्तक के रचयिता हैं। आपकी पुस्तक मे से मैंने अपनी पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' मे कुछ

पक्तिया सजोई हैं, संलग्न की हैं। भृगुवश की उत्पत्ति के बारे मे आपने बहुत अच्छा विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। मै आपका इसके लिए बहुत–बहुत आभारी हूँ।

आप उच्च कोटि के विद्वान थे। आपने अपने जीवनकाल मे समाज को नई दिशा, ज्ञान देने के लिये अच्छी–अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तको का सग्रह किया और अपनी पुस्तक 'भृगु वश गाथा' के माध्यम से भार्गव समाज को अच्छा निर्देश देकर ब्राह्मण होने का सही अर्थ में मार्गदर्शन दिया। आपके जीवन की महत्त्वपूर्ण जानकारी से पूर्ण परिचित नहीं हू। पर मुझे ऐसा लगता है कि आप एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। आज आप की कमी हमें बहुत अखरती है। आप होते तो हमे बहुत अच्छे निर्देश मिलते और मेरी पुस्तक को और सबल मिलता।

स्व. श्री भोलानाथजी भार्गव, पूर्व मंत्री (कांग्रेस)

आप अलवर निवासी थे। विधायक एव मत्री रह चुके थे। आप के समय का कार्यकाल सामाजिक स्तर पर अच्छा रहा। परन्तु आप के बारे मे जानकारी मिली कि आप भी समाज के प्रति कुछ करने की निष्ठा रखते थे पर सफलता नही मिली। क्योकि समाज उस समय इतना विकसित व शिक्षित नही था। आप टूट कर रह गये। महत्त्व की बात को लोग समझ नही पाये और पिछडे रह गये, प्रगति नही कर पाये। आप का प्रयत्न बहुत अच्छा रहा था। आपने भार्गव समाज की प्रगति के लिए कई निर्णय लिए पर समाज वालो को रास नही आये। जहा थे, वही रहे। ब्राह्मण होने की चेष्टा नही की। हम ब्राह्मण है, इसको नही समझा।

स्व. श्री गंगारामजी भार्गव (पथिक)

आप जैसी हस्ती बीकानेर भूमि के पावन स्थल पर जन्मी। इसका समस्त भार्गव समाज के जन–जन को गर्व है। आप राष्ट्रीय स्तर के कवि थे। आपने अपनी रचनाओ के माध्यम से अपना व भृगुवश का गौरव बढाया। आपने अपनी उत्कृष्ट कविताओ से सभी के दिलों को छुआ। आपने एक से एक बेजोड कविता लिखी। आप की कविता राष्ट्र स्तर की थी।

आपने अपनी रचनाओ मे डेमाक्रेसी एवं सम्पदा को एक चुनौती दी। ईश्वर ने समय से पहले ही आप जैसे महान जनप्रिय कवि को हमसे छीन लिया। समस्त भार्गव समाज एवं अन्य समाज के पाठक बन्धु आप को श्रद्धा सुमन, श्रद्धाजलि अर्पित करते है।

स्व. परमश्रद्धेय श्री बोदानन्दजी महाराज

आप नागौर जिले मे गांव खरेस के निवासी थे। आप एक संत पुरुष महात्मा थे। भार्गव समाज मे जन्मे ओर भक्तिभाव वाले ज्ञानी संत पुरुषो में आप का नाम लिया जाता था। आपने भार्गव समाज के उत्थान के बारे मे बहुत बार अच्छी जानकारियों से भार्गव समाज वालो को अवगत कराया। ब्राह्मण हो, ब्राह्मण की तरह रहना सीखो, अच्छा खान–पान और स्वच्छ वातावरण, अच्छे संस्कारो में रहकर ब्राह्मण विद्या की जानकारी, पढ़ना–लिखना सीख कर एक आदर्श जीवन जीने का मार्गदर्शन, निर्देश देते थे।

बडे दुःख के साथ यह लिखना पड़ता है कि इतने अच्छे सत, ज्ञानी, महात्मा पुरुष के साथ हमारे समाज में इस तरह के दुष्ट दुर्भावना के लोग भी यहा रहते है। जिन्होने उनके साथ इतना बड़ा धोखा किया। उन्हें अपने घर बुलाकर व्यभिचारी भोजन खिलाकर उनका अपमान किया। सत पुरुष महात्मा ने उन्हे श्राप दिया कि भृगुकुल मे न जाने ऐसी निकम्मी सतान कहा से पैदा हो गई जो अपने बाप से भी नही चूकती। इतना कहकर आप वहा से चले गये। उनका सपना था कि यह समाज एक दिन तो अपने–आपको समझेगा। उन्होने जीते–जी आशा नहीं छोड़ी और समाजसेवा, जागृति की लड़ाई लडते रहे। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि अब तो हमें इस श्राप से मुक्ति मिले ? तो भृगु भाइयो, संत पुरुषो की बात पर मनन कीजिये। अपने–आपको और भार्गव समाज को अपना खोया हुआ सम्मान दिलाइये। यही उन सत, महात्मा, ज्ञानी पुरुषो को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डॉ. श्री सत्यनारायणजी भार्गव

आप श्री धूड़ारामजी भार्गव के पुत्र हैं। यहां समीप ही गांव जयमलसर के निवासी हैं। वर्तमान में आप बज्जू गाव मे चिकित्सा अधिकारी प्रभारी के पद पर कार्यरत हैं। आप एम.बी.बी.एस. की उपाधि से अलकृत हैं। आप समाजसेवा मे सदैव अपना योगदान, सेवाये देते रहते हैं और सामाजिक भार्गव जाति बन्धुओं की चिकित्सा निःशुल्क करते है। आप के उपचार से लाखो लोगो को लाभ मिला है, ठीक हुए हैं और आपकी मधुर वाणी से ज्यादा सतुष्ट है। बीमार व्यक्ति आपको सदैव दुआएं देते रहते हैं। आपका इलाज रामबाण की तरह सिद्ध होता है।

आप समाज के उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील होकर कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं और तन–मन–धन से समाज की सेवा करना अपना

कर्तव्य समझते हैं। पूर्ण निष्ठा के साथ अपना अमूल्य समय निकाल कर आप अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। समाज की सेवा आप निस्वार्थ भाव से करते हैं।

डॉ. श्री आनन्दजी रावल (भार्गव)

आप जयपुर निवासी हैं। आपका निजी डेन्टल क्लिनिक है। आप अखिल भारतीय भृगुवंशी ब्राह्मण सेवा समिति के सक्रिय सदस्य हैं। आपने समाज के विकास में नेतृत्व की भूमिका के बारे में बहुत ही अच्छे सुझाव और जानकारिया दी हैं। आप के प्रयास व विचार सराहनेयोग्य हैं। आप इस दिशा मे निरन्तर प्रयासरत हैं। आपके विचार, आपके द्वारा लिखा लेख इस पुस्तक मे *संलग्न किया गया है।*

श्री गिरधारीलालजी भार्गव, सदस्य लोकसभा दिल्ली

आप जयपुर निवासी हैं। वर्तमान मे आप दिल्ली से लोकसभा के ससद सदस्य हैं। सामाजिकता एवं देशसेवा की भावना आप मे कूट–कूट कर भरी है। आपके बारे में लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। आप जब बीकानेर पधारे थे, अखिल भारतीय भार्गव सम्मेलन 106वां अधिवेशन दिनाक 23 से 25 दिसम्बर 1995 को बीकानेर मे हुआ था। आप के पधारने से हमारे बीकानेर की धरती पवित्र हुई और हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई और हमारा मनोबल बढा। आपने सामाजिक स्तर पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला और अपने समाज में सबको साथ लेकर चलने को कहा और भार्गव समाज के जाति बन्धुओ को अपने उच्च कोटि के शब्दों से सम्बोधित किया।

जब मैं सम्मेलन स्थल पर आप से पहली बार मिला तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई और भार्गव समाज को आप पर गर्व होना चाहिये कि आप जैसमहान् व्यक्तित्व वाली विभूति हमारे बीच में विद्यमान है। ईश्वर से मैं प्रार्थना करता हूं कि आप दीर्घायु हों।

मेरी पुस्तक *'भृगु अर्चना दर्पण'* के लिए आपके द्वारा लिखा शुभ संदेश मुझे प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं आपका तहेदिल से आभारी हूं कि आपने अपने छोटे भाई को इस सम्मान के योग्य समझा।

श्री मदनचन्दजी भार्गव

आप सादुलपुर (जिला चूरू) निवासी हैं। आप बीकानेर मे प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए। *आपका शैक्षणिक काल बहुत अच्छा रहा।* आप

के शिष्य आज अच्छे-अच्छे पदों पर नियुक्त है और आप में समाजसेवा, मानवसेवा की भावना कूट-कूट कर भरी है। आप समाज के पढने वाले छात्र व छात्राओं को निःशुल्क विद्या अध्ययन कराते हैं और समाज का कोई व्यक्ति आपके पास आता है तो आप भावविभोर होकर उसकी सेवा में, स्वागत-सत्कार मे लग जाते हैं। अतिथि परमोधर्म है जैसे व्यवहार करते हैं। उच्च स्तरीय विचारो से परिपूर्ण होकर अच्छा मार्गदर्शन देते हैं। आपकी सेवाएं समाज में सहरानेयोग्य है। आपके बारे में लिखने के लिए मेरे शब्द कोश मे शब्द नही हैं, आप तो महान विद्वान है। आपका मूल्य आंकना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

वर्तमान में आप बीकानेर मे ही निवास करते है। अतः अब हम आपको पूर्ण रूप से मूल निवासी बीकानेर के ही मानते हैं क्योंकि आप का अधिकांश जीवन बीकानेर मे ही बीता है और बीतता रहेगा। आप आज भी अति सवेरे उठकर भ्रमण करने जाते हैं। आप की आयु कम से कम 80 की होगी। आपका जीवन स्वस्थ, सुख-समृद्धिपूर्ण, आनन्दमय हो, ईश्वर से सदैव यही प्रार्थना करता हूँ।

श्री घासीलालजी मानव

आप अजमेर निवासी हैं। आपके बारे में बताने की आवश्यकता नही। समस्त भार्गव समाज आपसे धरती धोरा री पत्रिका के सम्पादन के माध्यम से भलीभांति परिचित है। समाज जागृति के लिए आपकी सेवायें सराहनीय है। आप की हीरक जयन्ति अभी 23 जून 2000 को अजमेर में भार्गव समाज के सम्मेलन में बडी धूमधाम से मनाई गई। आप इस उम्र में भी संघर्ष जारी रखे हुए हैं। मै आप को बधाई देना चाहूगा और ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि आपु दीर्घायु हो।

आप जैसी समाजसुधार करने वाली विभूति का हमे हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहे और हमे आपकी पत्रिका धरती धोरा री पढ़ने को मिलती रहे और जगह-जगह की सामाजिक जानकारियो से समय-समय पर हमें अवगत कराती रहे और समाज को नई दिशा का ज्ञान मिलता रहे।

श्री बालचन्दजी लूणकरणजी भार्गव

आप मन्डेला (सीकर) निवासी है। आपने भार्गव समाज की सेवा हेतु अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। कल्याण आरोग्य सेवा सदन, सावली (सीकर) मे क्षय रोग से पीड़ित किसी भी जाति-बन्धु को नि:शुल्क उपयुक्त

चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु एक शैया स्थायी रूप से आरक्षित करवा रखी है। इस कार्य हेतु समस्त भार्गव जाति बन्धु आपकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते है, धन्यवाद व साधुवाद देते हैं। आज भी भार्गव समाज मे आप जैसी हस्तियॉ हैं जो समाज के हित मे कुछ ही नहीं बल्कि बहुत–कुछ करने की निष्ठा रखते हैं।

श्री लालचन्दजी भृगु

आप अबोहर निवासी हैं। आप समाज मे फैली हुई कुरीतियों को तोडने और समाज को एक आदर्श समाज का स्वरूप देने के लिए कर्तव्यवद्ध तैयार रहते है ओर समाज के उत्थान के बारे में हमेशा चिन्तन करते रहते हैं पर भार्गव ब्राह्मण समाज अपनी गरिमा को न जाने कब समझेगा। यह जिज्ञासा आप के मन मे हमेशा बनी रहती है।

अतः समाज का सामाजिक स्तर पर कहीं भी कोई सम्मेलन हो, आप उस स्थान पर अवश्य पहुचते हैं। यह भी आप की उपलब्धि मे है। आप एक पढे–लिखे, ज्ञानी और उच्च विचारक और सहनशील व्यक्ति हैं। आप अपने भृगु बन्धु नाम से जाने जाते हैं। करीब–करीब समस्त भार्गव समाज के लोग आप से परिचित है।

श्री किशनलालजी भार्गव

आप धाधू गाव (जिला चूरू) के निवासी हैं। वर्तमान मे आप श्रीगगानगर मे एक शिक्षण संस्था के मालिक है और अपना प्राइवेट स्कूल सरस्वती बाल निकेतन उ. प्रा. विद्यालय 6, एल. एन. पी. श्रीगगानगर मे चलाते हैं। आप भी समाज के उत्थान के बारे मे हमेशा कुछ करने को तत्पर रहते हैं। आप द्वारा लिखा लेख, चिन्तन इस पुस्तक में सलग्न किया गया है जो कि बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

श्री जगदीशप्रसादजी शर्मा

आप दिल्ली निवासी पूर्व अध्यापक, अच्छे विद्वान हैं। आपके द्वारा लिखे तीनो लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उन्हे इस पुस्तक मे संलग्न किया गया है।

आप समाज के पहले व्यक्ति हैं जिन्होने पत्र पढते ही इतने उत्साह के साथ अतिशीघ्र उत्तर दिया। वो भी एक विशेष पाठकीय सामग्री के साथ। हम आपके बहुत–बहुत आभारी हैं। आप जैसे महापुरुषों की हमे अति आवश्यकता है। ताकि आपका मार्गदर्शन समाज को हमेशा मिलता रहे। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ और आपकी दीर्घायु की कामना करता हूँ और

ईश्वर आपको हमेशा स्वस्थ रखे।

श्री कमलकिशोरजी रावल (भार्गव)

आप सागानेर, जयपुर निवासी है। आप भी समाज के उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। हमारा भार्गव ब्राह्मण समाज हमेशा प्रगति करे, ऐसे आपके विचार है। समाज जागृति के लिये आपका लिखा लेख समाज और हम हमे बहुत अच्छा लगा जिस को हमने अखिल भारतीय भृगुवश सेवा समिति जयपुर की स्मारिका में पढा। यह लेख हम आपका इस पुस्तक मे सलग्न कर रहे है। इसके लिए हम आपके आभारी है।

श्री रामसरनजी जोशी

आप मेरठ (उ. प्र.) निवासी है। आप समाज के प्रति श्रद्धा भाव और हमारा भार्गव समाज प्रगति की दिशा की ओर कैसे आगे बढ़े, इसके लिए हमेशा प्रयास करते रहते है। आपके द्वारा लिखा लेख 'नई दिशा मे अग्रसर होता हमारा समाज' हम अपनी पुस्तक में सलग्न कर रहे है।

श्री ओमप्रकाशजी भार्गव

आप सूरतगढ निवासी है। आपने भार्गव समाज के प्रति समय–समय पर अपने स्थान व आस–पास के सामाजिक क्षेत्र में समाज के उत्थान के लिए भृगु भाइयो को उत्साहित करते रहते थे और समाज के प्रति हर समय संघर्षशील होकर कार्य करने को अपना परम कर्तव्य समझते थे। सामाजिक जानकारी तो आपके सस्कारो मे भरी पडी है। आपके द्वारा लिखा लेख 'ब्राह्मण तत्त्व का भावार्थ' हम अपनी पुस्तक 'भृगु अर्चना दर्पण' मे सलग्न कर रहे हैं।

श्री मनोजकुमार रावल (भार्गव)

आप गगाशहर (बीकानेर) निवासी हैं। आप बी.-ए. फाइनल के छात्र है। हमे आप जैसे युवा पर गर्व है। आज के वर्तमान युग में शिक्षित युवा ही समाज को अपना खोया हुआ सम्मान व गौरव को फिर से प्राप्त कराने मे सहायक सिद्ध हो सकता है। हम आशा करते है आज के युवा वर्ग से कि आगे आकर वे समाज–उत्थान को अपना कर्तव्य समझ कर समाज को एक नई दिशा, रोशनी देकर प्रगति की ओर अग्रसर करेगे।

आपने अच्छी–अच्छी पुस्तको से जानकारी करके जो लेख लिखा, वो इस पुस्तक मे शामिल किया गया है।

श्री रंग पाण्डेय भृगुवंशी

आप इलाहबाद निवासी हैं। आप के द्वारा लिखा लेख 'भृगुवंश का

उत्थान कैसे हो' हमने भृगु मित्र पत्रिका के 20–5–90 के अंक मे पढा। पढकर अति प्रसन्नता हुई। आपने भार्गव समाज के उत्थान के प्रति बहुत अच्छी जानकारी से समाज के जाति बन्धुओं को अवगत करवाया। मैं आपके जीवन से तो पूर्ण परिचित नहीं हूँ पर मुझे ऐसा लगता है कि समाज के प्रति आप अपना अमूल्य समय देकर समाज के उत्थान के प्रति पूर्ण सशक्तता के साथ अपना कर्तव्यपालन करते हुये अपनी सेवा प्रदान करते रहते है। मुझे आप के प्रति ऐसा विश्वास हो रहा है। आप उच्च कोटि के एडवोकेट होते हुए भी समाज को अपना योगदान देकर अपना फर्ज अदा करते हैं, हमारे लिए इससे और ज्यादा खुशी की क्या बात होगी ?

आप के द्वारा लिखा लेख हम अपनी इस पुस्तक में सलग्न कर रहे है। हम आभारी है आपके।

श्री रामप्रसादजी भार्गव

आप झाझड निवासी हैं। आपके द्वारा लिखा लेख 'यह कैसा यज्ञ है' हमे भृगुमित्र पत्रिका के माध्यम से पढने को मिला। 20–7–90 के अक मे पृष्ठ संख्या 4 पर आपने समाज के जाति बन्धुओ को यज्ञ किसे कहते है, इस विषय की पूरी जानकारी से अवगत कराया। महत्त्वपूर्ण तथ्यो की जानकारी से आपने यह समझाया कि यज्ञ और श्रद्धा में क्या अन्तर है। श्रद्धा को ही आपने यज्ञ कैसे मान लिया। आपका लिखा लेख मैं अपनी पुस्तक में सलग्न कर रहा हूँ, अतः हम आपके आभारी है। आप जैसे विद्वान के लिए मै अपने शब्दो में क्या लिखू, आप तो खुद एक महान् व्यक्तित्व के धनी हैं।

राजस्थान भार्गव युवा संघ जिला सीकर व झुंझुनूं

पिताश्री भृगु की जयती बसंत पंचमी, 5 फरवरी 2001 को हर साल की भाति इस सस्था द्वारा समारोहपूर्वक मनाई गई। इस उत्सव के उपलक्ष्य मे जाति बन्धुओ को भृगुरत्न पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।

आयोजन समिति की ओर से पिछले वर्ष बसत पचमी 2000 को इस पुरस्कार की शुरुआत करके यह घोषणा की गई थी। जिसमें पहला भृगुरत्न पुरस्कार श्री राधेश्यामजी गौड सौंथली निवासी को उनकी उत्कृष्ट समाजसेवा और कर्तव्यपालन के उच्च स्तरीय कार्य किये जिसके उपलक्ष्य मे देकर सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार दूसरा पुरस्कार भृगु जयती उत्सव समारोह के तत्त्वावधान मे इसी कडी से जुडे एक और महान् व्यक्तित्व के धनी को दिया जाना था। लगभग साय 4 बजे राजस्थान भार्गव युवा संघ के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्दजी

गोड़ ने जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट के बीच दूसरे भृगुरत्न पुरस्कार के लिए श्री भंवरलालजी गौड़, निवासी मण्डेला, जिला झुंझुनू के नाम की घोषणा की। यह पुरस्कार उनको मरणोपरान्त दिया जा रहा था।

पुरस्कार श्री भंवरलाल गौड के पुत्र श्री विनोदकुमार गौड द्वारा स्वीकार किया गया। इस मौके पर भार्गव समाज के व अन्य समाज के आगतुकों को आप की बहुत याद आई और उपस्थित लोगों ने अपने अश्रुपूरित नेत्रों से आपको श्रद्धांजलि अर्पित की तथा समाज में उनके द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की गई।

श्री भंवरलाल गौड़, मण्डेला, जिला झुंझुनूं, राजस्थान के नाम को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं। वो एक अच्छे व्यक्तित्व के, मधुर वाणी के मालिक और बहुत अच्छे इन्सान थे। वो भृगु समाज के सच्चे सिपाही थे। वे कर्मठ कार्यकर्ता थे। वो लगभग 10 वर्ष तक राजस्थान भार्गव महासघ, जिला सीकर व झुझनूं के अध्यक्ष पद का कार्यभार सभालते रहे।

उनकी अध्यक्षता में जब–जब राजस्थान में महासघ का सम्मेलन हुआ तब जाति बन्धु बहुत बडी संख्या मे भाग लते थे। समारोह में लोगों को बैठने की भी जगह नही मिल पाती थी और हजारो की तादाद में लोग खड़े रहकर भी सभा की कार्यवाही को देखते और सुनते थे। श्री भंवरलाल गौड की अध्यक्षता में ही लोहार्गल भृगु भवन के निर्माण का प्लान बना था। यह श्री भंवरलाल गौड़ ही थे जिन्होने इस भृगु भवन का सपना देखा था। जिसे 15 लाख रुपया लगाकर भृगु बन्धुओ ने तैयार किया और आपका सपना साकार किया।

पंजाब मे बनाई गई कुछ कमेटियों के गठन का श्रेय भी आप ही को जाता है। आप सभी जातिभाइयो को एकजुट देखना चाहते थे और उनके सभी कार्यों मे सहायक, सहयोगी रहे उनके महामत्री श्री राधेश्यामजी गौड। मैने खुद उनकी अध्यक्षता मे कई समारोहों में भाग लिया है इसलिए बेझिझक कह सकता हूँ कि यदि श्री भंवरलालजी जैसे अध्यक्ष होते तो हमारी कमेटियों की जो खराब हालत है, वो कभी नहीं होती। वो अपनी–अपनी डफली अपना–अपना राग के बहुत सख्त खिलाफ थे और समाज को इकट्ठा एक मच पर देखना चाहते थे। मगर भृगुवंश की किस्मत मे शायद उनकी सेवाओं की कमी थी कि एक सडक दुर्घटना में काल के क्रूर हाथो ने उन्हे हमसे छीन लिया। ऐसे महापुरुष की यादे भार्गव ब्राह्मण समाज के इतिहास मे युगो–युगों तक अमर रहेगी।

भृगु रूपलालजी शर्मा

आप लुधियाना, पजाब निवासी हैं। आप द्वारा लिखी प्रस्तुति राजस्थान भार्गव युवा सघ जिला सीकर व झुझुनूं दूसरा भृगुरत्न पुरस्कार प्रदान।

यह प्रस्तुति आपकी मैंने भृगु मित्र पत्रिका के 20 अक्टूबर 2001 के अक मे पृष्ठ सख्या 4 पर पढी, पढकर अति प्रसन्नता हुई। हमारे भृगुवश भार्गव ब्राह्मण समाज मे आज भी ऐसे दूरगामी, सेवाभावी और निस्वार्थ व्यक्ति अपनी सेवाएं देकर उत्साहपूर्वक अपना कर्तव्य समझ कर समाज के उत्थान के लिए उसे प्रगतिशील बनाने मे सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसे महानुभाव ही यह पुरस्कार प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। ऐसी महान विभूतियो से हमे प्रेरणा लेनी चाहिये ताकि भृगुरत्न पुरस्कार का क्रम हमेशा चलता रहे। आपकी यह प्रस्तुति कुछ परिवर्तन के साथ इस पुस्तक मे सलग्न की जाती है।

पं. श्री जीवनरामजी भार्गव (साक्षर)

आप स्व श्री रामेश्वरलालजी भार्गव के पुत्र हैं और गाव राजलदेसर जिला चूरू के निवासी है। वर्तमान मे आप अहमदगढ, पजाब मे रहते है।

दिव्य ज्योतिष मच, मालेरकोटला द्वारा चतुर्थ अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन 24–25 फरवरी 2001 को हुआ था जिसमें हमारे भृगुवश भार्गव ब्राह्मण समाज के अनेको स्थानो से जाति बन्धु, गणमान्य लोग और ज्योतिष विद्या के ज्ञाता, ज्योतिष विद्या शास्त्र के शोधकर्ता, पढे–लिखे विद्वान और सामाजिक एव अन्य सामाजिक महानुभाव उपस्थित थे।

सम्मेलन मे विषय था ज्योतिष शास्त्र पर विषय चर्चा। इस विषय चर्चा मे भाग लेने श्री जीवनरामजी शास्त्री भी वहां पर पहुचे थे। ज्योतिष शास्त्र विषय चर्चा हुई। काफी महानुभावो ने इस विषय पर अपने विचार रखे। श्री जीवनरामजी शास्त्री ने अपने सम्बोधन मे ज्योतिषशास्त्र विषय चर्चा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिसके उपलक्ष्य में आपको दिव्य ज्योतिष मंच द्वारा स्वर्णपदक देकर इस उपाधि से अलकृत किया गया एवं सम्मानित किया गया।

समस्त भृगुवंश भार्गव ब्राह्मण समाज को ऐसे गौरवशाली ज्योतिष शास्त्र के विद्वान पर गर्व होना चाहिए। हमे खुशी इस बात की है कि वर्तमान युग में भी ज्योतिष शास्त्र के विद्वान हमारे बीच विद्यमान हैं, मौजूद है। हमारे पिता श्री भृगुजी के अनुयायी बनकर उनके मार्गदर्शन पर हर क्षण चलने वाले महापुरुष आज भी इस धरती पर हैं। यह धरती विद्वानो से खाली नही है। ऐसे विद्वानो से प्रेरणा लेनी चाहिये। उनके शिष्य बनकर ज्ञान अर्जित करना

चाहिये। हर भार्गव ब्राह्मण जाति बन्धु, भाइयों को अपना धर्म–कर्म समझकर आगे बढ़ना चाहिए।

इतना ही नही, आपने मधुर वाणी, सामाजिक जागृति, समाज उत्थान, देश व गांव–हित मे निस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य समझ कर उत्साहपूर्वक निष्ठा के साथ अपने–आपको समाज के सेवार्थ समर्पित किया है। आप जब भी उनसे मिलेगे आपको एक अच्छा मार्गदर्शन, ज्ञान प्राप्त होगा। आप ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं। आपकी उम्र कोई खास नही है, सिर्फ 48–50 के होगे।

प्रशस्ति पत्र

दिव्य ज्योतिष मंच मालेरकोटला द्वारा चतुर्थ अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन 24–25 फरवरी 2001

मान्यवर,

श्री जीवनरामजी शास्त्री को ज्योतिष जगत के प्रति अविस्मरणीय सेवा और राष्ट्रहित, समाजसेवा तथा सम्मेलन की सफलता मे विशेष योगदान के दृष्टिगत ज्योतिष शास्त्र के गौरव की उपाधि एवं स्वर्ण पदक से आपको अलकृत किया गया।

दिव्य ज्योतिष मंच आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए गौरव अनुभव करता है। हमे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य मे भी आप ज्योतिष विज्ञान के प्रति समर्पित रहेगे। आपकी निष्ठा, प्रेम और कार्यकुशलता से ज्योतिष जगत सदैव उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होता रहेगा।

सम्मेलन अध्यक्ष स्वामी श्री हरि वेदान्तजी द्वारा आपको सम्मानपूर्वक स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

– प्रस्तुति
गौरीशकर भार्गव

श्री नवरतनजी भार्गव (साक्षर)

आप श्री जीवनरामजी भार्गव शास्त्री के पुत्र है और गाव राजलदेसर, जिला चूरू के निवासी है। वर्तमान मे अहमदगढ, पजाब मे रहते हैं।

अखिल भारतीय तृतीय ज्योतिष शास्त्र सम्मेलन स्थान गुलशन पैलेस, भगतसिह चौक, जालधर मे 30–31 मार्च 2002 को हुआ था। जिसका आयोजन भृगु ज्योतिष शोध मंच (रजि.), मिट्ठा बाजार, जालंधर के द्वारा किया गया था। इस सम्मेलन में भृगुवंश भार्गव ब्राह्मण समाज के दूर–दूर से कई

स्थानों से समाज के व अन्य समाजो के अच्छे–अच्छे विद्वान महानुभाव पधारे थे। इनमे एक युवा विद्यार्थी श्री नवरतन ने भी भाग लिया और अपने पिताश्री की तरह इस स्वर्णपदक की कडी की वर्णमाला से जुड़े हैं। आपने भी सामाजिक तौर पर अपनी उत्कृष्ट कार्यशैली और सामाजिक प्रेम, जाति सेवा भाव, से अपना कर्तव्यपालन करते हुए जो आप की प्रतिभा की प्रतीक बनी एवं ज्योतिष शास्त्र विद्या मे भी अपनी प्रतिमा से ज्ञान अर्जित कर स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपने अपनी छोटी–सी मात्र 24–25 साल की उम्र मे ज्योतिष शास्त्र विद्या की ऊचाइयो को छूआ।

हम समस्त भार्गव समाज के जाति बन्धुओं को आप जैसे शोधकर्ता युवाओ पर गर्व है। आप जैसे पढे–लिखे युवा ही इस समाज को एक नई दिशा–ज्ञान देकर समाज को गौरवमयी सम्मान दिला सकते हैं।

(प्रशस्ति पत्र)

अखिल भारतीय तृतीय ज्योतिष शास्त्र मच सम्मेलन, स्थान गुलशन पैलेस, भगतसिंह चौक, जालधर।

आयोजक भृगु ज्योतिष शोध मच (रजि.), मिट्ठा बाजार जालधर, दूरभाष 0181–283400, दिनाक 30–31 मार्च 2002

श्री नवरतन भार्गव, अहमदगढ ज्योतिष एवं विद्याओं द्वारा मानव जाति समाज की जो सराहनीय सेवा श्रद्धा एवं विश्वासपूर्ण कार्य किये उसके सम्मानार्थ हम आपको स्मृतिचिन्हि एव स्वर्णपदक प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजयमोहन सेखडी एवं चेयरमेन एस के शास्त्री मुख्य सचिव अरुणकुमार, सत्र अध्यक्ष श्री बाबूलालजी द्वारा आपको स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

यह तो थे हमारे भृगुवश भार्गव ब्राह्मण समाज के जाति बन्धु जो समाज को प्रगति और एक उच्च स्तरीय स्थान दिलाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने के साथ हर समय तत्पर रहते थे।

अतः आज भी जाति के सज्जन पुरुष समाजहित, समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं और आगे आकर समाज की सेवा मे जुटना चाहते हैं। अगर उन सभी का परिचय कराऊ तो एक ग्रंथ बन जाय। यह तो थे हमारे समाज का पुरुष वर्ग।

आइये हम अब आपको हमारे समाज की उन महिला हस्तियो से

अवगत कराते हैं जिन्होंने समाजहित में अपना तन–मन–धन देकर सराहनीय सहयोग दिया।

ये हस्तियां परिचय की मोहताज नहीं हैं फिर भी समाज मे एक नई दिशा, ज्ञान की गंगा, जागृति की क्रान्ति लाना चाहती है। हमारे भृगुवंश भार्गव ब्राह्मण समाज वाले जाति बन्धुओ को हमारी ऐसी माताओं, वहनो पर नाज होना चाहिये। आज हमारे समाज की पढ़ी–लिखी माताएं–बहनें सक्रिय होकर आगे आना चाहती है। जो एक नये समाज का नवनिर्माण करके एक नई रोशनी से जगमगा देना चाहती है।

गोरीशकर भार्गव

श्रीमती राजप्रभाजी भार्गव

आप वर्तमान में मेरठ (हापुड) मे निवास करती है। आप भृगुमित्र पत्रिका की सम्पादक हैं। आपकी पत्रिका का प्रकाशन मई 1999 में जयपुर से हुआ था। आप–अपनी पत्रिका के माध्यम से सामाजिक उत्थान के लिए प्रगतिशील लेखन सामग्री पाठको से लेकर समाज को जागृत करने में बहुत ही सराहनीय कार्य किया जो समाज को एक नई दिशा देने मे सहायक सिद्ध होता है। हम ईश्वर से सदैव यही प्रार्थना करते है कि आप की पत्रिका भविष्य मे इसी प्रकार जगमगाती, प्रगति की ओर अग्रसर होती रहे और आपके पाठकों को सदैव मिलती रहे।

सौ. दुर्गा ओमप्रकाश परियाल, सौ. किरण शाम परियाल

आप सूर्यपुत्र शनिदेव महिमा मासिक पत्रिका की सम्पादिका दुर्गा एव स. सम्पादिका किरण शाम वर्धा की निवासी है। हमे गर्व है आप जैसी समाज की ऐसी होनहार महिलाओं पर जो समाज को जागृत करने में अपना एक आदर्श मार्ग चुनकर समाज की सेवा करने की इस लड़ाई मे कूद पड़ी और अपने सम्पादन के माध्यम से समाज को एक नई दिशा व ज्ञान का बोध करायेगी। भृगु भाइयों को हर जगह की जानकारी से अपने प्रयासो के साथ अवगत करायेगी, ऐसा विश्वास है और हमे आप जैसी वहनो से वहुत बड़ी आशा है कि इस भार्गव ब्राह्मण समाज की कुरीतियो को दूर करने में आपकी पत्रिका के माध्यम से एक सराहनीय कार्य होगा। आपका प्रयास व योगदान हमेशा सफल हो और आपकी पत्रिका शुभकामना के साथ हमेशा समाज मे प्रगति करती रहे। भविष्य मे उन ऊंचाइयो को छूवे, ऐसी कामना करता हूँ।

श्रीमती रंजनी मानव

आप अजमेर निवासी श्री घासीलालजी की पुत्री है और धरती धोरां री

की स. सम्पादिका है। एम.ए. समाजशास्त्र व हिन्दी मे और वी.एड. करने के वाद अजमेर मे अध्यापिका है।

श्रीमती शकुन्तला गोदियान

आप महाराष्ट्र की रहने वाली है। आपके द्वारा लिखा लेख विद्या पढो घूघट हटाओ मैने धरती धोरा री पत्रिका मे पढ़ा। वहुत ही अच्छा लगा। आपके मन मे समाज की जागृति का एक सपना है कि हमारा समाज भी एक स्वतत्र जीवन जीये, आजादी के साथ एक समानता का रूप लेकर आगे बढ़े। आपकी यह धारणा ईश्वर सफल करे, यही आशा है हमे अपने समाज के जाति वन्धुओ से।

सुश्री बीना शर्मा

आप जयपुर निवासी हैं। आपने एम.ए. इतिहास मे किया है। मैं आप से पूर्ण परिचित तो नही हूँ। समाज की वेटी हो, हमे आप पर गर्व है, नाज है। आप द्वारा लिखी भृगुजी की आरती मे जो शब्दो की वर्णमाला मे भृगुजी महिमा का चित्रण किया हे वह वहुत ही सुन्दर ओर सराहनायोग्य है। आप भार्गव समाज को उत्कृष्ट वनाने मे निष्ठा रखती है। आप जैसी पढी-लिखी होनहार छात्राएं ही आगे वढकर समाज को आशादीप दिखाकर एक प्रगतिशील समाज की नीव रखेगी। आपके द्वारा लिखी भृगुजी की आरती इस पुस्तक मे संलग्न की गई है।

श्रीमती पुष्पा भार्गव

आप अलवर निवासी है। पूर्व मत्री श्री भोलानाथजी की धर्मपत्नी है। आप काग्रेस पार्टी से विधायक रह चुकी है। समाज जागृति मे आपका प्रयास बहुत सराहनायोग्य रहा। सामाजिक उत्थान के लिए आप सदैव तत्परता से सक्रिय होकर कार्य करने मे निष्ठा रखती है और समाज के गौरव के लिए अपना कर्तव्य समझ कर कार्य करती हे।

श्रीमती नर्बदा भार्गव

आप नागोर निवासी है। श्री बी. एल. भार्गव, पूर्व डाकपाल की धर्म पत्नी है। वर्तमान मे आप नागौर मे भारतीय जनता पार्टी की महिला मोर्चा की अध्यक्ष है। आप एक समाजसेवी महिला हैं। अपने समाज की आवाज को आपने दृढतापूर्वक राजनीतिक क्षेत्र मे बुलन्द किया। आप एक जुझारू महिला है। इन्हे शराब पीने वालो से सख्त नफरत है। आपका भार्गव समाज के प्रति अच्छा लगाव है और सामाजिक कार्यों मे प्रतिदिन लगी रहती है। आप नारी जाति पर अत्याचार कभी सहन नहीं करती और उनकी लडाई खुद

लडती है। ये साहसी व्यक्तित्व की धनी है।

श्रीमती शकुन्तलाजी शर्मा

आप महू छावनी (म.प्र.) की निवासी है। आप श्री हरिसिंहजी शर्मा की धर्मपत्नी है। आप ने समाज के हितो को देखते हुए एक कल्याणकारी कदम उठाकर समाज की नवनिर्मित धर्मशाला के लिए दानवीर भामाशाह की तरह 4000 हजार रुपयों का अर्थ दान देकर यह सिद्ध कर दिया कि भृगुवश भार्गव ब्राह्मण समाज मे भी आप जैसे दानवीर मौजूद है जिन पर भार्गव समाज को गर्व करना चाहिये। ऐसी ही महान हस्तिया समाज हित के लिए सदैव तत्पर रहती है और समाज मे एक गौरवमय स्थान बनाकर समाज के इतिहास मे अपना नाम युगो–युगो के लिए अमर कर जाती है।

श्रीमती निशा शर्मा

आप नैनीताल मे पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज मे प्रिंसीपल के पद पर कार्यरत थी। वर्तमान में आप इलाहाबाद (उ.प्र.) में निवास करती है। उनके द्वारा लिखी कहानी आपबीती, मेरा कसूर क्या है, कसूर समाज का है या मेरा, समाज के ठेकेदारो जवाब दो, मैने धरती धोरां री पत्रिका मे पढी। आपने बहुत ही सहनशीलता का परिचय दिया, अपने विचारो से अवगत कराया समाज को एक चुनौती दी। भार्गव समाज मे आप जैसी महिलाओ द्वारा ही जागृति आयेगी। आप धन्यवाद की पात्र है।

श्रीमती वन्दना शर्मा

आप गाजियाबाद निवासी है। आप हाल ही मे बी. ए. पास कर चुकी है। आपके द्वारा लिखी, माँ दिव्या की बेटी हूँ, भृगु वश के बढते कदम, उद्‌घोष, (जागृति दीप) ये तीनों कविताए हम अपनी पुस्तक मे सलग्न करते है। बहुत अच्छी लिखी है आपने। मै आप से पूर्ण परिचित तो नही हूँ लेकिन समाज की हमारी बेटी हो, आप पे हमें गर्व है। आप जैसी होनहार छात्राए ही सामाजिक स्तर के भविष्य को एक नई दिशा, ज्ञान, रोशनी का मार्ग दिखाकर समाज के खोये हुए गौरव को सम्मान दिलाने मे अपने कदम आगे बढाकर कुछ करके दिखलाने मे अग्रसर होगी।

डॉ. श्रीमती सरोज भार्गव

आप के द्वारा लिखा लेख महिला जागृति पढा। पढकर अति प्रसन्नता हुई। आपने सामाजिक स्तर को सुधारने के लिए समाज की महिलाओ को जागृत करने पर जोर दिया। बढ़ती जनसंख्या को सीमित कर परिवारों को शिक्षित एव सुडौल, मजबूत बनाने के लिए प्रयास कर महिला वर्ग को आगे आना चाहिए। जो प्रौढ है, रूढिवादी हैं उनको साक्षर कर अपनी साथिन

महिला बहनो को शिक्षित कर आगे बढने का मार्गदर्शन दे। आप जैसी महान व्यक्तित्व की धनी से हमे प्रेरणा लेकर आपके बताये हुए आदर्श मार्ग पर चलना चाहिये। आप सेवाभावी है। मानव जाति से आप बहुत प्रेम रखती हे।

श्रीमती कंचन भार्गव

आप खेतेश्वर बस्ती, बीकानेर की निवासी है। वर्तमान मे आप गिन्नी बाल निकेतन स्कूल मे अध्यापिका हैं। आप समाजसेवी सामाजिक उत्थान के लिए अपना सहयोग देती रहती है। समाज की बहनों से अपने बच्चो को स्कूल भेजने के लिए सदैव कहती रहती है। शिक्षा ही जीवन का एकमात्र मूल आधार है जो बच्चो के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सहायक सिद्ध होता है। आपके द्वारा लिखा गीत इस पुस्तक मे सलग्न किया गया है।

स्व. सुश्री कमलेशकुमारी मानव

आप घासीलालजी मानव की पुत्री थी। आपके द्वारा लिखी पुस्तक भृगु सदेश 'भृगुवशी भार्गव' ब्राह्मण समाज को एक नैतिक और समाज उत्थान की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण सदेश देती हे। ईश्वर ने ऐसी पढी–लिखी, नेतृत्व की धनी को हमारे से समय से पहले ही छीन लिया। हम भार्गव समाज के लोग आज भी आपको याद करते हुएं श्रद्धासुमन, श्रद्धांजलि अर्पित करते है। आपके कार्यो का बखान अमूल्य है।

— गौरीशंकर भार्गव

बीकाणे री धरती

बीकाणै री धरती म्हाने प्राणा सु प्यारी जी।
इण धरती पर जन्म लियो बड़े गर्व री बात जी।।
बीकोजी बीकाणो बसायो यांरी बात्या न्यारी जी।
इण धरती नै स्वर्ग बणायो राजा गंगासिंह नाम जी।।
बीकाणै री धरती................................

रेलगाडी अठ आई, बिजली री छवि न्यारी जी।
पाणी सबसूं पहली आयो जद गंग नहर बन गाई जी।।
सफाखानो बडो बणायो जग में नाम कमायो जी।
घूमण ताई बाग बगीचा सिनेमा अठै बणायो जी।
बीकाणै री धरती................................

देशनोक में करणी माता।
दुर्गा माँ नागाणी जी।।
कोलायत मे कपिल मुनि विराजे।
कोडमदेसर भैरू जी।।
लक्ष्मी नाथ री छवि प्यारी जी।।
बीकाणै री धरती................................

विद्वानो मे रामसुखदासजी।
विश्व मे नाम अमर किनो जी।।
कवियो में तो पीथळ बोलै।
अकबर नै लिखी पाती जी।।
बीकाणै री धरती................................
भीम पाडियो गूंजण लाग्यो।
धनन्जय गीत सुणावेजी।।
भवानी अठैरो बखाण करे।
सदीक आजाद री बात्यां न्यारीजी।।
बीकाणै री धरती................................

यौद्धाओ में राजा करणसिंहजी।
मुगलां रा दांत खट्टा किया जी।।
निशाने मे राजा करणीसिहजी।
विश्व में नाम कमायो जी।।
बीकाणै री धरती................................

फुटबॉल खेलै मगनसिंहजी।
वॉलीबॉल खेलै गोपालजी।।
साईकिल उडावे गणेशजी।
तागा मे धूम मचाई गिरधर जी।।
बीकाणे री धरती.............................

बीकाणे रो पाणी गहरो, लोग अठै रा गहराजी।
पापड बडी भुजिया कचौड़ी ओर समोसा बणा ओई पाणी जी।।
जग में बीकाणे रो डंको बाजै इयासूं।
जद करै विदेशी ऊट री सवारी जी।।
बीकाणे री धरती..... ....

मेला मगरिया और गोठारी बात्या न्यारी।
जद सावण सुरगो बरसण ला जी।।
काचर बोर मतीरा मीठा।
खुशियां रा गीत सुणावै जी।।
बीकाणे री धरती.... ....

होलीरी हुड़दग अठै।
डाडिया रमता री बात्या न्यारी जी।।
बीकाणे रै चोकां मे पाटा ऊपर।
खेलै चोपड पासा जी।।
बीकाणे री धरती..... ....

वैसाख शुक्ला बीज नै स्थापना दिवस मनावा जी।
आखा तीज न छतां ऊपर पतंग खूब उडावां जी।।
बोई काटा है रै नारा सू बीकाणो गूंजण लाग्यो जी।
बोई काटा हे रै साथ ही किनो कट जावै जी।।
बीकाणे री धरती.............................

साम्प्रदायिकता अठै कोनी।
भायला री देखो यारी जी।।
धर्मनगरी और मरूनगरी ईनै केवै।
इणरी बातां न्यारी जी
बीकाणै री धरती म्हानै प्राणां सूं प्यारी जी।

सीयाळै खाटू भली उनाळै अजमेर
नागाणो नितरो भलो तो सावण बीकानेर
— गौरीशंकर भार्गव

परिचय

मेरा परिचय पोरस–सा।
इसमे स्वजाति का प्यार भरा।।
स्वजाति हित जीऊगा।
स्वजाति हित मर जाऊगा।।
यही संदेश भृगु भाइयों को दे जाऊंगा।
मेरा परिचय पोरस–सा।
इसमे स्वजाति का प्यार भरा।।
सोए हुए निद्रा में भृगु भाइयों को।
झकझोर कर जगाऊंगा।
उठो छोडो निद्रा त्यागो सारा मानव जाग उठा।
तुम भी अपना गौरव समझो।।
अपने जीवन का लक्ष्य उभरा।
मेरा परिचय पोरस–सा।
इसमें स्वजाति का प्यार भरा।।

महर्षि भृगुजी की अमर कहानी

सुनो–सुनो ए दुनिया वालों, भृगुजी की अमर कहानी।
सदियों से भी बडी पुरानी।
वेदो की पुराणो की वाणी।
न्याय इन्ही का अमर हुआ, यही है इनकी अमर कहानी।
सुनो–सुनो ऐ दुनिया वालो, भृगुजी की अमर कहानी।।
जय भारती, जय भारती, जय भारती।।
अपने तपोवल से किया सृष्टि का उद्धार आपने।
रची भृगुसहिता ज्योतिष विद्या का सागर।
आप की ज्योतिष विद्या से लाखों लोग जीवनयापन करते।
आपके वंश मे आपके पुत्रो की लीला न्यारी।।
सुनो–सुनो ऐ दुनिया वालो भृगुजी की अमर कहानी।
जय भारती, जय भारती, जय भारती।।
शुक्राचार्यजी ने सजीवनी विद्या पाकर जग मे नाम अमर किया।
च्यवन ऋषि ने च्यवनप्राश का आविष्कार किया।

शाडिल्य ऋषि ने शांडिल्य ग्रन्थ की रचना की थी।
डामराचार्यजी ने डामर सहिता की रचना की थी।।
सुनो–सुनो ऐ दुनिया वालो, भृगुजी की अमर कहानी।
जय भारती, जय भारती, जय भारती।।
वैद्य सुषेण ने लक्ष्मणजी को सजीवनी से जीवनदान दिया।
शल्य ने अपने चिकित्सा शास्त्र से जग मे नाम अमर किया।।
डिडिम, दुरतिष्य और प्रतिष्य ने ज्योतिष शास्त्र कर्म यज्ञ का ज्ञान दिया।
सुनो–सुनो ऐ दुनिया वालो, भृगुजी की अमर कहानी।।
जय भारती, जय भारती, जय भारती।

– गौरीशकर भार्गव

निराशा के बादल मत मंडराने दो

मॉ गंगा को मृत्यु लोक पर लाने के लिए भक्त भगीरथ से पूर्व मे तपस्या करते–करते इसी चाह में बारह परिवार अपनी युगो–युगो की तपस्या करते–करते अपने–आप को समाप्त कर चुके पर मा गंगा को लाने मे असमर्थ रहे। फिर भी उन्होने अपने विश्वास एवं अपने धैर्य को नही खोया। इसी आशा और लगन के साथ फिर एक और भक्त ने जन्म लिया। जिसका नाम आज इस मृत्युलोक पृथ्वी पर अमर हो गया। वो थे भक्त भगीरथ। जिन्होने अपनी तपस्या, भक्ति से मा गंगा को प्रसन्न किया। और मां गगा उनकी प्रार्थना स्वीकार करके कहने लगी कि भक्त भगीरथ तुमने अपनी तपस्या, भक्ति से हमारा मन मोह लिया है। हम तुम पर प्रसन्न हैं, कहो तुम्हे क्या चाहिये ?

तब भगीरथ की प्रसन्नता का कोई ठौर–ठिकाना नही रहा। वो ह्रदय से भावविभोर होकर निस्वार्थ भाव से मां गंगा को कहने लगा हे मा गंगे, आप हमारे मृत्युलोक पृथ्वी पर पधार कर जन–जन का कल्याण करे।

मॉ गंगा कहने लगी, भगीरथ मेरे वेग की शक्ति को थामने के लिए कौनसी शक्ति है जो मुझे रोक सके, नही तो तुम सब मेरे वेग की शक्ति मे बह जाओगे। तब भगीरथ पर एक और सकट आ गया पर वह धैर्यवान, साहसी निराश मन नही हुआ और भगवान शिव की आराधना मे लीन होकर तपस्या–भक्ति में लग गया और शिव भोले को प्रसन्न किया। तब भगवान शिव कहने लगे, भक्त भगीरथ हम तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न है। कहो वत्स, तुम्हे क्या चाहिये ? तब भगीरथ ने कहा, प्रभु आप तो अतरयामी है, दयालु

है। मा गगा को अपनी जटा मे स्थान देकर इस मृत्युलोक पृथ्वी पर विचरण करने वाले प्राणियो का उद्धार करो, हे दीनबन्धु, दीनानाथ। तब जाकर भगीरथ की तपस्या सार्थक और सफल हो पाई। कितनी कठिन तपस्या के बाद मां गंगा को लाकर निस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य का पालन किया।

अतः भृगुवश भार्गव ब्राह्मण भाइयो आप भी अपना फर्ज समझ कर अपना कर्तव्य निभाने का भगीरथ बन कर संकल्प ले कि हम हमारे समाज मे भी गगा लाकर इस पवित्र मां गगा के जल से इस समाज को धोकर साफ-स्वच्छ बनाएगे।

कोई तो भगीरथ जन्म लेगा भृगुवश समाज मे, जो निस्वार्थ भाव से अपनी सेवा देकर समस्त भार्गव समाज को एक ही स्थान पर मॉ गंगा के अन्दर डुबकी लगा कर इनका उद्धार करेगा। ऐसी आशा करता हूँ अपने भार्गव समाज के जाति बन्धुओ से। इसी आशा के साथ अपनी पुस्तक को आगे बढाना चाहता हूँ और बार-बार आपकी सेवा करता रहूँगा। निरन्तर अपने प्रयास जारी रखूंगा, जब तक मुझ मे प्राण है।

— गौरीशकर भार्गव

सपना तुम्हारा साकार करा दूंगा

खुशियो भरा नया संसार तुम्हें दूंगा
मन को इतना अधीर मत करो, नया प्रकाश तुम्हे दूगा
मन को भी छू सके ऐसा विश्वास तुम्हे दूगा।।
बहुत सो लिए, बहुत खो दिया, अब समय आ गया बता दूगा।
मुस्कानों से भरा सपना साकार करा दूगा।।
भृगु भाइयो के जीवन मे जीवित जोत जगा दूंगा।
मन को इतना अधीर मत करो, नया प्रकाश तुम्हे दूंगा।।
स्वार्थ की दुनिया को अब ना स्वीकार करो।
दीन-हीन जीवन का परित्याग करो।।
शिक्षा का महत्त्व समझो, पढने का प्रयास करो।
गौरव हो जिससे वही उल्लास तुम्हें दूगा।।
भृगु भाइयो के जीवन में, जीवित जोत जगा दूंगा।
मन को इतना अधीर मत करो, नया प्रकाश तुम्हे दूगा।।
कुछ करने योग्य नही हो तो छोडो इस भ्रम को।
मेहनत का फल मीठा होता है अपनाओ इस श्रम को।।

असफलता ही मिली अभी तक तोडो इस क्रम को।
चरण सफलता चूम रही है यह आभास तुम्हें दूंगा।।
भृगु भाइयो के जीवन में, जीवित जोत जगा दूंगा।
मन को इतना अधीर मत करो, नया प्रकाश तुम्हे दूगा।।
भूल रहे हैं हम ऋषियो की परम्पराओ को।
सिद्धि–साधना से पाने वाली क्षमताओ को।।
हमको जिसने आ घेरा है, तोड दो ऐसी विषमताओं को।
मत घबराओ वही अमर निशां तुम्हे दूगा।।
भृगु भाइयों के जीवन मे, जीवित जोत जगा दूंगा।
मन को इतना अधीर मत करो, नया प्रकाश तुम्हे दूगा।।
– गौरीशंकर भार्गव

कई सालों के बाद

कई सालो के बाद अधियारे में।
उजाले की रात।।
मर–मर कर जी रहा हूँ।
फिर भी आगे बढ रहा हूँ।।
इसी आशा के साथ।
कई सालों के बाद अधियारे मे।
उजाले की रात।।
सोचता हूँ, कभी तो अधियारे की रात कटेगी।
उजियारे की पोह फटेगी।।
प्रकाश की आभा में प्रकाश की किरण दिखेगी।।
कई सालो के बाद अधियारे में।
उजाले की रात।।
उठो, जागो, धूप निकल आई है।
पर तुम उठोगे, जागोगे झुलस जाने के बाद।।
तुम्हे मरने का डर सताता है।
जिन्दगी जीने की होती है।।
कई सालो के बाद अधियारे में।

उजाले की रात।।
ऋषियो की सन्तान हो।
उठो, जागो, पोह फटने से पहले।।
सरिता हिम–सी नदियां।
तुम्हें बुला रही है।।
कई सालो के बाद अंधियारे में।
उजाले की रात।।
प्रभात की सुषमा दिखा रही है।
सुनहरी सुबह का दिन निकल आया।।
भृगु भाइयों को जगाने आया हूं।
कई सालों के बाद अंधियारे मे, उजाले की रात।।

— गौरीशंकर भार्गव

मन की अधीरता

ऐ मन आशाओं के दीप जलाता चल।
हिमालय की तरह अडिग खडा भृगु पताका फहराता चल।।
ऐ मन आशाओं के दीप जलाता चल।
जीयेगे–मरेगे भृगु पताका फहराते चलेगे।।
अपने कदम बढाता चल।
ऐ मन आशाओ के दीप जलाता चल।
हिमालय की तरह अडिग खडा भृगु पताका फहराता चल।।
अपने कदम बढाता चल।

हमारे पिताश्री भृगुजी ने इन्ही पर्वतो–पहाडो में रहकर तपस्या की थी और महान् ज्योतिपशास्त्र भृगुसहिता की रचना की थी और एक आदर्श निर्णायक भी बने। इन्होने ही भगवान सृष्टिरक्षक श्रीविष्णु को भी नही बख्शा और उन्हे अपनी लात मार कर सचेत किया। तो भगवान श्री विष्णु ने उठकर नमस्कार किया और कहा, ऋषिवर ! आपको कही चोट तो नही आई ! इस भाव को देख महर्षि भृगुजी गद्‌गद् हो गये और कहा विष्णुजी ही देवो मे श्रेष्ठ देव हैं, पूजा–आराधनायोग्य देव हैं। यह निर्णय दिया देवताओं को। इसीलिये हमारे पिताश्री एक महान् निर्णायक भी थे।

कहने को हम कहते है कि हम भृगुजी की सतान है। पर इनके कर्म क्या है यह आपसे अपने–आप मे छुपे हुये नही है। परन्तु इनकी ओर आप का ध्यान कभी जाता ही नही, अगर जाता तो आज एक महान् पिताश्री की सतान दर–दर की ठोकरें नही खाती क्योकि आपने अपने कर्म ऐसे ही कर रखे हैं। बार–बार पिताश्री के कहने पर भी आप नही समझते, न जाने कौनसी माटी के बने है। आदतन चिकने घड़े पर पानी की बूंद टिके तो आप पर टिके। इन का मन वैसा ही है जैसा चिकना घडा।

ब्राह्मण होकर कभी शिक्षा की ओर मुडकर भी नही देखा और शिक्षा पाई तो सही दिशा नहीं पकडी। अहम् के अभिशाप में खोये रहे। अपनों का साथ नही दिया। रूढिवाद, ईर्ष्यावाद के अधकार में खोकर अपना यह हाल बना लिया और जन–जन के पूजित होने वाले आज लोगो की नजर मे एक कुटिलतुल्य ब्राह्मण हो गये। और आप घृणा की दृष्टि से लोगो मे पहचाने

जाने लगे और एक महान् महर्षि भृगु की संतान को हेय नजरो से देखा जाने लगा है। बड़े शर्म की बात है। समय रहते हुए भी नही संभल पावोगे और कितना समय बाकी है इस दर्पण पर लगी रंजी को मिटाने के लिए। क्या युवा, वृद्ध सभी काम आ गयें ? कोई नहीं जन्मा इस धरती पर ? इस ओर देखो, एक नजर भरी आंखो से चलो उसी स्थान पर जहा आशा टिकी है।

ऐ मन आशाओं के दीप जलाता चल।
हिमालय की तरह खड़ा अडिग भृगु पताका फहराता चल।।
ऐ मन अपने कदम बढ़ाता चल।
ऐ मन आशाओं के दीप जलाता चल।।

हमारे भृगुवंशी भार्गव ब्राह्मण समाज की महिलाएं भी सामाजिक तौर पर पुरुषो से अधिक आगे हैं और सामाजिक उत्थान के लिये क्रान्तिमय संघर्ष कर कुछ करने का संकल्प लेकर आगे आना चाहती है और समाज को एक नया आदर्श जीवन जीने का दिशाज्ञान दे रही हैं। आपको इन से प्रेरणा लेनी चाहिये।

कटु शब्द का कहीं कोई प्रयोग है तो इसलिये किया गया है कि शायद आपको कुछ जोश आये और आप कुछ करने का सोचें। इसका अर्थ जीवन के सार के समान समझे।

— गौरीशंकर भार्गव

मानस मंथन

चीख, वहरे समाज को नैतिकता की चीख।
चीख, वदलते परिवेश की चीख।।
चीख, अशिक्षा परिणति की चीख।
चीख, रूढिवादी नीतियो की चीख।।
चीख, सोये हुए समाज को जगाने की चीख।
चीख, वहरे कानो को खोलने की चीख।।
चीख, आतकवाद की चीख।
चीख, भूख की चीख।।

आओ समाज के कर्णधारों, समाज का मानस मथन करे, नैतिकता का मूल्यांकन करें।

चीख को अपनापन देकर दर्पण मे।
एक तस्वीर खीचें जिसमे अपने मन से।।
उठी हर चीख आपके कानों से, मन से।
आंखो से, अधरों से, मधुर प्यारी–सी चीख।।
चीख,मौत की चीख।

भृगु भाइयो, यह चीख–चीख कर कह रही है, मरकर भी आपका पीछा नही छोडूगी। जव तक आप अपने–आपको इस योग्य नही बना लोगे। असत्य का मार्ग छोडो, सत्य का मार्ग अपनाओ, इसमे शिक्षित और अशिक्षित दोनो वर्ग समाहित है। सत्य सभी के लिये सत्य होता है। यह चीख–चीख कर चीख का कहना है। प्यार से प्यार का एक पौधा लगाओ, आदमी हो आदमी का फर्ज तो निभाओ।

— गौरीशंकर भार्गव

शिकायत है

शिकायत है समाज के कर्णधारों से।
नैतिकता की बाते करते, एक कदम आगे बढते, चार कदम पीछे हटते।।
रूढिवाद कुरीतियां है इनका स्तभ।
समाज की मान्यता को खो दिया है यह स्तभ।
सत्यता की बाते करते असत्यता इनकी जननी है।।
शिकायत है समाज के कर्णधारो से।
नैतिकता की-बातें करते, एक कदम आगे बढते, चार कदम पीछे हटते।।
युवा वर्ग मेरी आशा, क्या पूरी होगी मेरी अभिलाषा।
चार कदम आगे बढना, एक कदम पीछे हटना।।
यही लक्ष्य अपने मन मे रखना, नही कभी पीछे हटना।
शिकायत है समाज के कर्णधारो से।।
नैतिकता की बाते करते, एक कदम आगे बढते, चार कदम पीछे हटते।।
कुछ करके दिखलाना है हमको।।
यही सकल्प लेना है हमको।
युवा वर्ग मजबूत पत्थर के कधो पर रखी गई यह नीव।।
आशा है युवा वर्ग से कहीं ऐसा न हो।
रूढीवादी कुरीतियों के पदचिह्नों पर चल कर।।
एक कदम आगे बढना, चार कदम पीछे हटना।
क्या यही सोच हमारी है।
शायद नही।
शिकायत है समाज के कर्णधारो से
शिकायत है
शिकायत है
शिकायत है।

— गौरीशकर भार्गव

हम एक हैं

पूरब दिशा से आती आवाज हम एक हैं।
पश्चिम दिशा महकाती आवाज हम एक हैं।।
उत्तर दिशा लाती है आवाज हम एक हैं।
दक्षिण दिशा गाती है गीत और साज हम एक हैं।।
हमारा हर कदम एक है हमारी चाल एक है।
हमारा वश एक है हमारा समाज एक है।।
हम एक हैं हमे चुनौती दे सकता नही कोई।
हम एक हैं हमे मिटा सकता नहीं कोई।।
हम एक हैं हम एक है।
ब्रह्म है हम ब्रह्मज्ञानी हैं हम।।
इसे झुठला सकता नहीं कोई।
हम इस ज्ञान से अज्ञान थे।।
अब हमे बहका सकता नहीं कोई।
हम एक हैं हम एक हैं।।
दूर हुआ अब हमारी आखो से अधेरा।
उजाले की किरण लेकर आया है नया सवेरा।।
हम नीद मे सोये थे हम राहो से गुमराह थे।
हमे अधिकारो से अब वचित कर सकता नहीं कोई
हम एक है हम एक है।

— सजयकुमार भार्गव, बीकानेर
एम.ए. इतिहास, समाजशास्त्र

उद्घोष (जागृति दीप)

उठो, सोने वालो जगाने को आये।
समाचार सुन्दर सुनाने को आये।।
बहुत सो चुके बहुत खो चुके हो।
सभ्यता पुरानी को बिसरा चुके हो।।
निद्रा तुम्हारी भगाने को आये।
उठो, सोने वालो जगाने को आये।।
ऋषियो की जाति कहां जा रही है।

उद्घोष

हम भृगु की बेटी हैं, दुनिया मे धूम मचा देंगी।
जो आये पर्वत मार्ग मे, ठोकर से उन्हे हटा देगी।।1।।
हम माँ दिव्या की बेटी है, मां पर सकट आए जब
हम उसके सकट काटेगी, अपना सर्वस्व लुटा देगी।।2।।
हम भृगुवश की पुत्री है, सब भार्गव हमारे भाई हैं।
जहाँ इनका पसीना टपकेगा, वहां अपना रक्त बहा देगी।।3।।
जाति मे जहालत फैली है, पापो ने डेरा डाला है।
हम वेद के नूर मुकदस से, यह सब अंधकार मिटा देगी।।4।।
कह दो दुर्व्यसनी पाखडियो से, हरकतो से अपनी बाज आये।
मैदान मे अगर उठ जायेगी, तो नाकों चने चबा देगी।।5।।
हम वीर शुक्र, परशुराम की बेटी हैं, यह न समझ नादान दुश्मन।
हम वेद की पवित्र ऋचाओं का, दुनिया मे डका बजा देंगी।।6।।
भाइयो मे जो दुर्गुण आये है, बहनो में शिराशा छाई है।
हम पूर्व सावचस्थ वनायेगी तब आशा के दीप जला देगी।।7।।
कुछ कठिन परिश्रम करना है, चरित्र को उज्ज्वल करना है।
हम माँ दिव्या की सजीवनी से, अमृत की घूट पिला देगी।।8।।
जाति से दुर्गुण भागेगे, फिर भाग्य हमारे जागेगे।
प्रभात किरण फिर चमकेगी, हम जाति का मान बढा देगी।।9।।
समय का कुछ प्रकोप रहा, हम अपने कर्म को भूल गये।
अब समय कठिन जब आया है, हम अधर्मियो की नीव हिला देगी।।10।।
आज हमे कुछ करना है, मृत्यु से भी नही डरना है।
भृगु ब्राह्मण समाज के माध्यम से, जाति का सम्मान बढा देगी।।11।।

— श्रीमती वन्दना शर्मा, गाज़ियाबाद

पौत्रो का मिलाकर भी गौत्र हुआ।

अतः कही–कही तीन या पाच पुरुषो के नाम से त्रिप्रवर अथवा पच प्रवर हुये। हमारे धर्मशास्त्रों में 88000 अट्ठासी हजार ऋषियो का उल्लेख मिलता है। उनके सम्पूर्ण गोत्रों का वर्णन करना सम्भव नहीं हे।

महर्षि बोधायन के मतानुसार गौत्राणि तु सहस्राणि प्रयतान्यर्बुदानिच अर्थात् ब्राह्मणो के सहस्र व अर्बुद गोत्र हैं।

अत इन 88000 अट्ठासी हजार ऋषियो में जो ऋषि भृगु के शुक्रवश से सम्बन्धित ऋषि रहे, उन ऋषियों के गोत्र की जानकारी पाठकों हेतु प्रस्तुत है।

भृगु कुल (भार्गव) ब्राह्मणो मे महर्षि शुक्र के वंश से सम्बन्धित उपगौत्र व प्रचलित ऋषियों के गोत्र की शुद्ध, शुद्ध चक्र सहित सूची।

(1) गोशिल–कोशि (कश्यप) गोत्र सामवेद, गाधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गोभिल सूत्र, प्रवर (3) कश्यप, अवत्सार, नेध्रुव देवता विष्णु हैं।

(2) गोरूड (गौड़) गोत्र सामवेद, गांधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा गोभिल सूत्र, प्रवर (3) शाडिल्य, असित, ढेवल, देवता विष्णु हैं।

(3) रावेल (भृगु रावल)– गोत्र सामवेद, गाधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गोभिल सूत्र, प्रवर (3) वत्स, रेणुक, ध्रुव कौल्य, देवता विष्णु हैं।

(4) ठाकरी (वत्स)– गोत्र सामवेद, गाधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गोभिल सूत्र, प्रवर (5) वत्स, कश्यप, भार्गव, श्रमदा, आप्नुवान, देवता विष्णु हैं।

(5) मोज (मोज)– गोत्र सामवेद, गांधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गौभिल सूत्रा, प्रवर (3) आर्य, मधुछन्द, भार्गव, देवता विष्णु है।

(6) मरट (भ्राष्ट कार्याण)– गोत्र सामवेद, गांधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गोभिल सूत्र, प्रवर (5) वत्स, च्यवन, आप्नुवान, चान्द्र, कत्सतश्चेति, देवता विष्णु है।

(7) वावल गोत्र– सामवेद, गांधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा, गौभिल सूत्र, प्रवर (3) च्यवन, मोनस, मध्याम, देवता विष्णु हैं।

(8) लल्याण (लत्तारि)– गोत्र सामवेद, गांधर्व उपवेद, कोथुमी शाखा गौभिल सूत्र, प्रवर (3) सांकृत्य, साख्यापन, गोर्व, देवता विष्णु हैं।

(9) गयंद (गायन) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) गौभिल, अगिरस, देया, देवता विष्णु है।

(10) गौरियल (मोनस)– गोत्र यजुर्वेद, धनर्वुद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (5) मोनस, वीतिहव्य, भार्गव, साख्यायन, वत्स,

देवता शिव हैं।

(11) गागवेर (गागेय) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्रा, प्रवर (5) च्यवन, मोनस, लोर्म्य, शाभव, वच्छिल, देवता शिव है।

(12) तपशिल (तपस्वी मांडव्य)– गोत्र यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, मांधादिनी शाखा कात्यायन सूत्र, प्रवर (5) माडव्य, जमदग्नि, गौतम, भार्गव, ओर्व, देवता शिव हैं।

(13) पर्वोधि (देवरात) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) देवरात, विश्वामित्र, पूर्णि, देवता शिव हैं।

(14) अर्गल गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (5) च्यवन, मोनस, लौर्म्य, शाभव, वहिल, (वच्छ), देवता शिव है।

(15) वामन गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) गय, वसिष्ठ, मृत कील, देवता शिव है।

(16) परियाल पौर (पौलस्त्य) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) पुलस्त्य, बोद्धायन, भार्गव, देवता शिव हैं।

(17) भूर्कण गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्रा, प्रवर (3) भार्गव, वसिष्ठ, मृतकील, देवता शिव है।

(18) ढापेल (आत्रीय) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधांदिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) मधुछन्द, अर्चन न, श्यावश्व, देवता शिव हैं।

(19) शुकपाल्य गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, कात्यायन सूत्र, प्रवर (3) अत्रि, अभ्योह्य, पौर, देवता शिव है।

(20) ब्रह्मपाल–ब्रह्मपान (वाभ्रत्य) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) ब्राभ्रव्य, अंगिरस, अवदल, देवता शिव हैं।

(21) मोहरी (गौतम) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) अंगिरस, बाहस्पत्य, गोतम, देवता शिव हैं।

(22) बड़गुज (अंगिरस) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) अगिरस, अपस्योष, काश्यपि, देवता शिव हैं।

(23) शिवल्यान (कौशिक) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) विश्वामित्र, अधर्मबव, कौशिक, देवता शिव है।

(24) चवर्ण (कुशिक) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) मधुछन्द, विश्वामित्रा, इन्द्र प्रमद, देवता शिव है।

(25) खंततर (खाण्डव) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) बसिष्ठ, पाराशर, सांकृत्य, देवता शिव हैं।

(26) लोघर (लोहितर) सावणि गोत्र– यजुर्वेद, धनर्वुद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) सावणि, पुलस्य, पुलह देवता शिव है।

(27) मारद मारद्वाः (मारद्वाज) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) अमितल, वाशिल, वेघस (वाघल) देवता शिव है।

(28) भटनाग (भट) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) अगिरस, भारद्वाज, गौतम, देवता शिव है।

(29) कोस्थम (कोत्यम्) गोत्र– यजुर्वेद, धनुर्वेद उपवेद, माधादिनी शाखा, पारस्कर सूत्र, प्रवर (3) चान्द्रयन, वत्स, अर्चिस (कत्यस्नश्चेति), देवता शिव है।

(30) मकल्य भलल्य (मोकल्य) गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (5) शोव, मोकल्य, भोवन, रेस्त, वेवल (वैवस), देवता ब्रह्मा है।

(31) कच्छप (काश्यप) गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (3) भार्गव, वोतिहत्य, श्वेतस, देवता ब्रह्मा हैं।

(32) गौशल (घोशल) गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (3) यद्रम, सुदर्भा, अमान (अप्नुवान), देवता ब्रह्मा है।

(33) गुर्दर गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (3) महारी, तोपकल्या (मोकल्य), मान (आप्नुवान), देवता ब्रह्मा हैं।

(34) लोहरी लोहवेरिण (भार्गव) गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (3) भार्गव, दनच्य, गुणित, देवता ब्रह्मा हैं।

(35) भूरघ्वज गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद, आश्वलायन शाखा ब्रह्मसूत्र, प्रवर (3) अथर्व, खरूल, भूदयात देवता ब्रह्मा है।

(36) शांडिल्य गोत्र– ऋग्वेद, आयुर्वेद उपवेद आश्वलायन शाखा, ब्रह्मसूत्र, प्रवर (5) भार्गव, शाडिल्य, अगिरस, पुलस्त्य, वशिष्ठ, देवता ब्रह्मा हैं।

भृगुवंश मे इन वर्णित गोत्रो के सम्बन्ध मे वैताल व स्पोदत कवि के छप्पे व कवित्त निम्न प्रकार हैं।

(अथ भगु गोत्रावली छप्पै)

गौशिल अरु गौरूढ ढाकारी भरटरू रावेल। भोर्ज गयद कल्याण पुनि तफशीलहु बावल। गौरियल पुनि गगवेर अरु पवोषि खतंतर। बामन पुनि परियाल अरु कौस्थमहु लोघर।। अगल अरु ढापेल ही पुनि भटनाग शुकवाल्य है। वेताल कवेश्वर यों कहे बहगुर्ज चर्वण ब्रह्मपाल है। भारद करूं बखान भूकण जानिहुं। और सजे सुरध्वज पुनि शिव ल्यान भानिहु। कछप अरु मलल्य् कहू गरदर मुनि मोहरी। अरु गोशल शाडिल्य सजे है गोत्र लोहरी नौसत भूज नम मास है शालिवाहन शक्क के। वैताल कवि कहे ये गोत्र छतीस है भृगु वंश के। इस प्रकार ऋषियों के ये छतीस गौत्र उनके नाम पर जगत मे प्रसिद्ध हुवे।

।। अथ गोत्रावली कवित्त।।

भार्गव के वंश माह उत्पन्न हुए भृगु ऋषि ताहके वश माहि भृगुवश ब्राह्मण मानिये। ताके हैं छत्तीस गोत्र इसमें नही कुछ अत्र सुनहू सुनाऊं मित्र सांची कर मानिये। गौशिल गौरुढ़ अरु ठाकरी रावेल अरु भरट भोज तथा गयंद को बखानिये। स्योद कवि कहे बावल कल्याण अरु गंगवेर पवोषि अरु गौरियल मानिये।।1।। बामन अरु तपशील पुनि भूकण अगल मोहरी ढापेल अरु शुकवाल्य जानिये। बडगुर्ज परियाल ब्रह्मपाल शिवल्यान चर्वण लोघर अरु खततर मानिये। कोस्थमहु भारद मुनि-भटनाग गुरदर मलल्य कच्छप अरू गोशल प्रमानिये। लोहरी शाडिल्य अरु सूरध्वज इते गोत्र छतीस भृगुवश के स्योदत कवि बखानिये।।

भृगुवश में इन वर्णित गोत्रो के अतिरिक्त कही–कही वसिष्ठ, उपयन्य, अत्रि, कात्यायन, गोभिल, शोनक, गर्ग, गार्गव, साख्यायन, जमदग्नि, च्यवन, विश्वामित्र, कविस्त, उपना, वडवृच, शोल्कान, भृगु, पाराशर, वीतिहव्य, आदित्य, कृष्णात्रि, नारद, गयद, शौनक आदि–आदि गोत्र भी मिलते हैं।

इन प्रचलित गौत्रों के शुद्ध व अशुद्ध (अपभ्रंशों) स्वरूप निम्न प्रकार है–

(1) गोशिल, घोसी (2) गोरूढ, गोड (3) रावेल, रावल, रावत, रोदेले (4) ठाकरे–ठाकरी, ठाकर, डागरी, ठकारी (5) भोज, भोजे, भोरज (6) भरट, भाटीग, भीटे (7) वावल, बावलिया (8) लल्याण, लालईन, लल्याण, लायन, यायन (9) गयद, गेदीयण, गोयद, गायंद (10) गोरियल, गोरारे, गोरिया (11) गंगवेर, गंगवारिया (12) अगल, अग्रवाल (13) तपशिल–तपस्वी (14) पवोषि पवोशिया, जोल, शादोषिया (15) वामन, पम्मन (16) परियाल, पडिया, पवारे

(17) भूकर्ण, भूकण, भोकाण, भूकरू (18) ढापेल, ढापे, ढाफे (19) शुकवाल्य, शुकवाल (20) व्रह्मपाल, वहपाल (21) मोहरी, मारशिया, महर,(22) वडगुर्ज, वडगेया, वडगुजर (23) शिवलयान, शोलान, शोल्याण, सोलकी (24) चर्वण, चुवान, चोहाण, चाहेल (25) खततर, खतड़, खांडव, खाडे, खंडत, वड़तर (26) लोघर, मधोतर, लोधिर (27) भारद, भरद, भारद, भारद्वाज, भारद्वारी (28) भटनार, भटीट, भटनागर (29) कोस्थम, कायस्थ, कांकरे (30) मलल्य, मल्ल, मलैया, मलपीयाण (31) कश्यप, कच्छप, कछवाह (32) गोशल, गुशलान, गुलशन (33) गुरदर, गुजर, गुदर (34) लोहरि, लोहरे, लुहम, लोहर (35) सुरध्वज, सिकरोदिया, सुरध्यज (36) शाडिल्य, छाणिडल्य, छलोनिया, छुण्डुल्य।

।। भृगु वंश के 36 गौत्र "प्रचलित भाषा में" ।।

1 घोपी 2. गोड 3. रावल 4. ठकारी 5. लल्याण 6. भोज 7. भीडे 8. वावल 9. गेदियान 10. गोरिया 11. गगवारिया 12. अग्रवाल 13. पपशी 14. पवोशिया 15. बम्बन 16. पडिया 17. भीझण 18. ढापे 19. शुक्रवाल 20. व्रतपाल 21. महर 22. बडगुजर 23. सोल्याण 24. चोहान 25. खतड 26. लघर 27. भरद्वारी 28. भटनार 29. कायस्थ 30. मतल 31. कछवा 32. गुशलान 33. गुदर 34. लोहरी 35. सुरधर 36. छलुदिया।

यह हमारे भृगुवश भार्गव समाज की गौत्रावली छप्पै।

प्रेरणा स्रोत

इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे प्रेरणा कहा से मिली, इसका कुछ सक्षेप में विवरण इस प्रकार से है।

मेरे मामाजी श्री रामेश्वरलालजी भार्गव के पौत्र और श्री जीवनलालजी भार्गव के पुत्र मुन्नालाल भार्गव की शादी दिनाक 19–4–95 की थी। बारात गाव राजलदेसर से नूहागॉव के लिए बस द्वारा प्रस्थान हुई। इसी बारात मे नोखा निवासी श्री शंकरलालजी भार्गव भी थे। बारात वडी धूमधाम के साथ शाहजी श्री मंगतूरामजी के यहां नूहागांव पहुची और बारात के ठहराने का स्थान यानी कि जान का डेरा एक अच्छे स्थान पर था और अति सुन्दर व्यवस्था थी। समस्त वरातीगण स्नान आदि करके नाश्ता–पानी कर रहे थे। पास के ही एक कमरे में हम सभी बैठे थे और सामाजिक चर्चा कर रहे थे। समाज की कुछ बातों की जानकारी के कारण सामाजिक उत्थान के कुछ सुझावो की जानकारी से आपको अवगत कराया और समाज उत्थान के मेरे प्रयासो की जानकारी दी। मेरे प्रयास आप सभी को अच्छे लगे।

अत. समाज के इतने सज्जन बन्धुओं मे एक शकरलालजी भार्गव नोखा निवासी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने मुझे पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया और आपने कहा कि हम आप के साथ है। अपने तन–मन–धन के साथ आपको हम सहयोग से अपनी सेवा देगे। और पूर्ण दृढता के साथ आपने यह घोषणा की और उस समय मदनचन्दजी भार्गव सादुलपुर वालो ने भी अपना समर्थन देकर मेरा हौसला बढाया। आप लडकी के मामाजी है और नूहागाव भात लेकर आये थे। अतः आप की प्रेरणा से मैं इस पुस्तक की रचना करने मे जुटा और आज सफलतापूर्वक यह पुस्तक लिखकर तैयार की है जिसका नाम मैने 'भृगु अर्चना दर्पण' रखा है। शायद आप सबको पसन्द आयेगा।

इस पुस्तक को लिखने में मुझे बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा। मेरे ही समाज के भृगु भाई मेरे मनोबल को तोडने के लिए कहते है कि इससे क्या होता है ? यह समाज तो सुधरने का नही। आप ठीक कहते हो मेरे भाई। पर मैं एक आशावादी और दृढनिश्चय रखने वाला हूं। इनकी बातो से अपने मन को विचलित नही होने दिया और आगे बढता चला गया। मेरा विश्वास मेरे जीवन का लक्ष्य है। जीवन मे उतार–चढ़ाव बहुत आते है, जाते है, पर अपने मन व अपने–आपको कभी निराश नही होने दिया। आज भी बहुत–से सज्जन महानुभाव लोग सामाजिक व अन्य सामाजिक बन्धु ऐसे है जो मेरी भावना की, मेरे विचारो की कदर करते है, सराहना करते हैं। मेरा मनोबल बढाने मे अपना पूर्ण सहयोग देते रहते हैं कि आप अपना प्रयास जारी रखो, हम आप के साथ है।

वो है हमारे बीकानेर निवासी पूर्व प्राचार्य डूंगर महाविद्यालय के श्री सत्यनारायणजी स्वामी और श्री ओमप्रकाशजी पुरोहित, मेडिकल कॉलेज टेकनीशियन, हृदय रोग विभाग, बीकानेर, महेद्रसिह गहलोत, बीकानेर, जीवनलालजी भार्गव, डाकपाल गंगाशहर, बीकानेर, श्रीमती कचन भार्गव, बीकानेर, श्री ओमप्रकाशजी, सूरतगढ, श्री प्रभुरामजी भार्गव, नोखा, श्री डॉ. आनन्दजी भार्गव, जयपुर, श्री बनवारीलालजी, जयपुर, श्री जगदीशप्रसादजी शर्मा, दिल्ली, श्रीमती राजप्रभा, भृगु मित्र सम्पादक, मेरठ (हापुड), श्रीमती वन्दना शर्मा, गाजियाबाद। मेरे हितैषी महानुभावो के सहयोग और आप लोगों की लेखन सामग्री से ही यह पुस्तक तैयार हुई है। मै आपका हृदय से आभारी हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि यह पुस्तक आपके हाथों में है। सामाजिक जानकारी के लिए आपको उत्साहपूर्वक गर्व होगा। इसी आशा के साथ कई सालो के बाद।

— जी. एस. भार्गव

जी. एस. : भार्गव परिवार परिचय

मिला किसी से ना रखिये, ना किसी से वैर। प्रेम–प्यार ही जीवन है, सत्यता की डोर।

– श्रीमती गिन्नीदेवी भार्गव (जी.एस. भार्गव)

मनुष्य को अपनी सीमा मे रहकर बात करनी चाहिए।

– महेन्द्रकुमार भार्गव (पुत्र)

अनीति का साथ कभी नहीं देना चाहिए। नीतिवान बनो।

– श्रीमती अनिता भार्गव (एम. के. भार्गव)

राम का नाम ही सर्वप्रिय उत्तम मार्ग है।

– राजेशकुमार भार्गव (पुत्र)

सुसस्कारो से ही मनुष्य का जीवन सफल होता है।

– श्रीमती सुनिता भार्गव (आर. के. भार्गव)

परमपिता परमेश्वर पर आस्था रखनी चाहिए जिससे जीवन का कल्याण होता है।

– प्रवीणकुमार भार्गव (दामाद)

कभी मनुष्य ने अपने–आप मे झाककर नही देखा। अगर देखा होता तो असत्य का साथ कभी नही देता।

– श्रीमती कविता भार्गव (पुत्री)

सस्कृति ऐसी अपनानी चाहिए जिसमे जनहित हो।

– संजयकुमार भार्गव (पुत्र)

पूजा–आराधना श्रेष्ठतम परनिन्दा दुष्टतम्।

– श्रीमती पुष्पलता (एस. के. भार्गव)

रवि सदा प्रकाश देता है, सभी प्राणी मात्र का भला चाहता है।

– रविकान्त भार्गव (पुत्र)

सुर बिन सगीत नही, गीत बिन सगीत।

– सुरेन्द्रकुमार भार्गव (पुत्र)

रेल चलती है हरी झडी दिखाने के बाद, जीवन सफल होता है परोपकार करने के बाद।

– रेणुका भार्गव (पौत्री)

अभिमान मनुष्य का शत्रु है, जिससे उसका पतन होता है।

– अजयकुमार भार्गव (पौत्र)
कमाई ऐसी कीजिये जो जग जाने, नित्यकर्म ऐसा कीजिये जो राखे भगवान।
– कुमारी कोमल भार्गव (पोत्री)
आशीर्वाद हमेशा ऊंचा होता है। इसका मूल्यांकन नहीं होता।
– आशीषकुमार भार्गव (पौत्र)
अंक से अंकतालिका बनती है, अंक से किस्मत आकी जाती है।
– अकितकुमार भार्गव (पौत्र)
उमा माँ का नाम है जो अपने बच्चो से सदैव प्यार करती है।
– उज्ज्वलकुमार भार्गव (पौत्र)
विजय पताका फहरायेगे जीवन सफल बनायेगे।
– विजयकुमार भार्गव (नाती)
विशाल तो विशाल है, विशाल से बढ़कर कोई नही।
– विशालकुमार भार्गव (नाती)
मोहित उसका नाम होता है जो भगवान कृष्ण की तरह सबका मन मोह लेता है।
– मोहितकुमार भार्गव (पौत्र)

।। भृगुजी की आरती ।।

भृगुजी की आरती, महर्षि तेरी आरती।
सारी भृगु जाति श्रद्धा से उतारती।।
अपने चरण की भक्ति दीजो।
अपने शरण मे मोहे रख लीजो।।
यदि श्रद्धा हो अपार।
करे भवसागर पार।।
सारे ऋषि तेरा यश गाये।
त्रिदेवो की परीक्षा करावे।।
श्रद्धावनत हो स्तुति गावे।
और करे जै–जैकार।।
मै हू दीन दु:खिया भारी।
आया हूँ भृगु शरण तिहारी।।
दिव्य दृष्टि त्रिकालज्ञ ज्ञाता।
ज्योतिष शास्त्र के जन्मदाता।।
भृगु सहिता का ज्ञान जो पावे।
दु:ख दारिद्र से मुक्ति पावे।।
प्रेम सहित जो आरती गावे।
सुख–सम्पत्ति घर मे आवे।।
बढे सुयश अपार।
भृगु तेरी महिमा अपरम्पार।।
भृगुजी तेरी आरती, महर्षि तेरी आरती।
भृगु जाति बडी श्रद्धा से उतारती।।

– कुमारी वीना शर्मा
टेलीकॉम कॉलोनी, मालवीय नगर
जयपुर (राज)

– कुमारी वीना शर्मा
टेलीकॉम कॉलोनी, मालवीय नगर
जयपूर (राज.)